संदेशवाहक कबूतर के प्रशिक्षण और देखभाल पर केंद्रित कहानी 'चित्र-ग्रीव' कभी मन को छू जाती है तो कभी मन को दुखी कर देती है। भारत में बचपन बिताने के दौरान हुए अनुभवों को संजोते हुए धनगोपाल मुखर्जी बताते हैं कि किस तरह घोर परिश्रमी और संवेदनशील प्रशिक्षक उसके द्वारा प्रशिक्षित चित्र-ग्रीव को दूसरे मालिक के पास सेवा करने के लिए भेजता है। यह कहानी केवल कबूतर के प्रशिक्षण और रोमांच मात्र की नहीं है, इसमें बताया गया है कि चित्र-ग्रीव किस तरह साहस और प्रेम का संदेशवाहक भी है।

धनगोपाल मुखर्जी एकमात्र ऐसे भारतीय हैं, जिन्हें बच्चों के लिए उत्कृष्ट लेखन के लिए 'न्यूबेरी सम्मान' से अलंकृत किया गया है। उनका जन्म सन् 1890 में कोलकाता के करीब एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका परिवार सदियों से कोलकाता के पास एक मंदिर का स्वामी था। वे 19 वर्ष की आयु में अमेरिका चले गए और वहां उन्होंने केलीफोर्निया और स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। वहीं उन्होंने विवाह किया और लेखन व व्याख्यान देकर अमेरिका में ही पूरा जीवन बिताया। भारत का ज्ञान और धर्म उनके साथ सदैव रहा। इस पुस्तक में उन्होंने अपने भारत में व्यतीत बालपन को चित्रित किया है। लेखक की अन्य चर्चित पुस्तकें हैं- *'कारी द एलीफेंट'* और *'हरि द जंगल लैंड'*।

तालेवर गिरि अनुवाद के क्षेत्र में एक जाना-माना नाम है।

₹ 45.00
ISBN 81-237-6190-2
12131985

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

चित्र-ग्रीव

एक कबूतर की कहानी

धनगोपाल मुखर्जी

अनुवाद : तालेवर गिरि

चित्रांकन : बोरिस अर्तज़ीवाशेफ

नेहरू बाल पुस्तकालय

चित्र-ग्रीव

एक कबूतर की कहानी

धनगोपाल मुखर्जी

अनुवाद

तालेवर गिरि

चित्रांकन

बोरिस अर्तज़ीबाशेफ

एकः सूते सकलम्
NBT, INDIA

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

इस पुस्तक का पहली बार प्रकशन
सन् 1927 में ई.पी. डट्टन एंड कंपनी,
यू.एस.ए. ने किया था।

ISBN 978-81-237-6190-9

पहला संस्करण : 2011
दूसरी आवृत्ति : 2013 *(शक* 1934)
हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
Gay-Neck *(English)*
Chitra-Griv *(Hindi)*
₹ 45.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

विषय-सूची

भूमिका 5

पहला भाग

चित्र-ग्रीव का जन्म 7
चित्र-ग्रीव की शिक्षा 12
दिशा-ज्ञान का प्रशिक्षण 18
हिमालय में चित्र-ग्रीव 22
चित्र-ग्रीव की तलाश में 36
चित्र-ग्रीव का भगोड़ापन 49
चित्र-ग्रीव की कहानी 52
चित्र-ग्रीव की साहसिक यात्रा (जारी) 59

दूसरा भाग

युद्ध के लिए चित्र-ग्रीव का प्रशिक्षण 71
युद्ध-प्रशिक्षण (जारी) 78
चित्र-ग्रीव का प्रेम-प्रसंग 90
चित्र-ग्रीव को युद्ध का बुलावा 96
दूसरी बार दिलेरी 104
घोंड द्वारा गहन सर्वेक्षण 109
संदेश ले जाने की कहानी, चित्र-ग्रीव की जुबानी 116
घृणा और भय का उपचार 121
लामा की बुद्धिमानी 130

भूमिका

शायद ही कुछ भारतीय लोगों ने वास्तव में इस असाधारण लेखक– धनगोपाल मुखर्जी का नाम सुना हो या कभी इनकी उत्कृष्ट पुस्तक 'चित्र-ग्रीव' को पढ़ा हो। इस पुस्तक ने सन् 1928 में न्यूबेरी पुरस्कार जीता था। न्यूबेरी पुरस्कार अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन द्वारा हर वर्ष बाल-साहित्य में विशेष योगदान के लिए दिया जाता है। गत 75 वर्षों में मुखर्जी ही एकमात्र भारतीय हैं जिन्हें यह पुरस्कार मिला है।

भारत में हर वर्ष हजारों की संख्या में बच्चों के लिए पुस्तकें छपती हैं। उनमें अधिकांश पंडिताऊ होती हैं जिनमें नैतिकता की बातें और उपदेश भरे होते हैं। ये पुस्तकें बच्चों की कल्पनाशक्ति को छूने में असफल रहती हैं। हालांकि हमारे देश में बेजोड़ पेड़-पौधे और जीव-जंतु हैं लेकिन बाल-पाठकों के लिए इस विविधतापूर्ण वन्य-जीवन के बारे में अच्छी पुस्तकें बहुत ही कम हैं। पक्षी-अवलोकन के लिए कुछ अच्छी पुस्तकें हैं लेकिन ये तथ्यों से भरी होती हैं। लेकिन बच्चे पक्षी-अवलोकन के बजाय उनका मधुर गीत सुनना पसंद करते हैं। 'चित्र-ग्रीव' सही अर्थों में ठीक यही कुछ करती है। इसमें वैज्ञानिक अवलोकन कहानी के रूप में गुंथा है, तथ्यों को कहानी के रूप में ऐसा पिरोया है कि 'चित्र-ग्रीव' एक अत्यधिक प्यारी पुस्तक बन गई है। ऐसा होते हुए भी भारत में इसे 60 साल बाद पुनर्मुद्रित किया गया है, इसी से पता चलता है कि भारत में बाल साहित्य की कितनी दयनीय स्थिति है। भारत के महानतम प्रकृति-वैज्ञानिक लेखक एडवर्ड हामिल्टन एटकिंटन अथवा ई.एच.ए,. जो इसी नाम को पसंद करते थे, उनकी उत्कृष्ट पुस्तकें 'ए नेचुरलिस्ट ऑन द प्राउल' और 'कॉमन बड्र्स ऑफ इंडिया' पिछले 50 वर्षों से अप्रकाशित पड़ी हैं।

हालांकि 'चित्र-ग्रीव' बच्चों के लिए लिखी गई है लेकिन यह प्रकृति

पर्यवेक्षकों को भी आनंदित करेगी। इसमें एक कबूतर के जीवन से संबंधित सूक्ष्म विवरण है और हिमालय की वनस्पतियों के बारे में विविधतापूर्ण वर्णन है। इसमें कलकत्ता के एक पालतू कबूतर की और एक संवेदनशील किशोर की मनोरम कहानी है। कबूतर को संदेशवाहक बनना सिखाया जाता है। हिमालय पर ले जाया जाता है। वहां वह भटक जाता है और कई साहसिक कारनामे करता है। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय सेना द्वारा फ्रांस में इसे गुप्त संदेश भेजने के काम में लाया जाता है।

धनगोपाल मुखर्जी (1890-1936) का जन्म कलकत्ता के नजदीक हुआ था। उनका संबंध मंदिर के पुजारी परिवार से था। उन्नीस वर्ष की आयु में वे अमेरिका पहुंचे और केलिफोर्निया तथा स्टानफोर्ड विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाई। अमेरिकी महिला से शादी की और आजीवन वहीं लेखन और अध्यापन करते रहे। उन्होंने बच्चों के लिए पशु-पक्षियों के बारे में नौ पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'कारी द एलीफेंट' (1922) 'हरि द जंगल लैंड' (1929) और 'घोंड द हंटर' आदि हैं। वे कभी अपनी जन्मभूमि को नहीं भूले और उन्होंने बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ भारत की लोकगाथाओं और धर्म के बारे में लिखा। 'चित्र-ग्रीव' वास्तव में एक संदेशवाहक कबूतर है, मानवता के लिए प्रेम, साहस और शांति का संदेश देने वाला।

अप्रैल 1998
नई दिल्ली

–अरविंद गुप्ता

चित्र-ग्रीव का जन्म

कलकत्ता शहर, जिसे दस लाख की आबादी वाला होने का गर्व है, उसमें लगभग बीस लाख कबूतर होंगे। हर तीसरे हिंदू लड़के के पास संभवतः विभिन्न प्रकार के दर्जनों कबूतर होंगे जैसे पालतू संदेशवाहक, गिरहबाज, अर्धवृत्ताकार पूंछ वाले और पाउटर आदि। भारत में कबूतर पालने की कला हजारों वर्ष पुरानी है। यहां के कबूतरबाजों का दो किस्म के कबूतरों–अर्धवृत्ताकार पूंछ वाले और पाउटर पालने में विशेष योगदान रहा है। सदियों से यहां के सम्राटों, राजकुमारों और रानियों ने अपने संगमरमर के महलों में कबूतरों को पाला-पोसा है और उन्हें प्यार किया है। उसी प्रकार गरीब लोगों ने भी अपने मामूली घरों में इन्हें प्यार किया है। धनवान लोगों ने बागों, गुफाओं और फव्वारों में तथा आम लोगों ने अपने फल और फूलों के बगीचों को तरह-तरह के रंगों के कबूतरों से और गुटर-गूं करते लाल आंखों वाले फाख्ताओं से सजाया है और उनका संगीत सुना है।

आजकल भी शरद ऋतु की सुबह-सवेरे विदेशी लोग, जो हमारे बड़े शहरों में आते हैं, हमारे अनगिनत लड़कों को अपनी-अपनी समतल छतों पर सफेद कपड़े के झंडे फहराते हुए अपने कबूतरों को कड़क ठंडी हवा में संकेत करते हुए देख सकते हैं। नीले आकाश में इन पक्षियों के झुंड बादलों की तरह उठते नजर आते हैं। पहले ये अपने मालिकों की छतों के ऊपर

छोटे-छोटे झुंडों में लगभग 20 मिनट तक चक्कर लगाते हैं, फिर धीरे-धीरे ऊपर उठते जाते हैं और अलग-अलग घरों के कबूतरों के झुंड आपस में घुल-मिलकर एक बड़ा-सा झुंड बनाकर ऊपर उठते हुए नजरों से ओझल हो जाते हैं। किस तरह ये अपनी-अपनी छतों पर वापस आ जाते हैं, यह एक आश्चर्यजनक बात है, क्योंकि सभी छत एक जैसी लगती हैं, हालांकि उनके रंग गुलाबी, पीले, बैगनी और सफेद होते हैं। लेकिन कबूतरों का दिशा-ज्ञान और अपने मालिकों के प्रति प्रेम अद्‌भुत होता है। मैंने आज तक कबूतरों और हाथियों से अधिक वफादार जंतु नहीं देखा है। मैं जंगल में हाथी के और शहर में कबूतर के साथ खूब खेला हूं। चाहे ये कितनी ही दूर क्यों न चले जाएं लेकिन इनकी अचूक सहजवृत्ति इन्हें अपने मित्र व बंधु मनुष्य के पास ले आती है।

मेरे मित्र हाथी का नाम कैरी था, जिसके बारे में आप पहले सुन चुके हैं और दूसरा पालतू पक्षी, जिससे मैं चिर-परिचित था, वह एक कबूतर था। उसका नाम था चित्र-ग्रीव यानी मनोहर गर्दन वाला। जिसे कभी-कभी सतरंगी गर्दन वाला भी कहते थे। निस्संदेह चित्र-ग्रीव अंडे से पैदा होते वक्त मनोहर रंग की गर्दन लेकर नहीं आया था। धीरे-धीरे उसने पंख विकसित किए और जब तक वह तीन महीने का हुआ तब तक बहुत कम आशा थी कि उसकी गर्दन अद्‌भुत होगी लेकिन आखिरकार उसने ऐसी गर्दन पाई जिसका मुकाबला शहर का कोई कबूतर नहीं कर सकता था, हालांकि मेरे शहर के लड़कों के पास चालीस हजार कबूतर थे।

लेकिन मुझे इसकी कहानी एकदम शुरू से बतानी होगी यानी चित्र-ग्रीव के माता-पिता से शुरू करनी होगी। उसका पिता गिरहबाज जाति का कबूतर था। उसकी माता उस समय की सबसे सुंदर कबूतरी थी और उसका जन्म संदेशवाहक कबूतरों के खानदान में हुआ था। इसी कारण चित्र-ग्रीव बाद में युद्ध के दौरान और शांति के दिनों में एक कुशल संदेशवाहक सिद्ध हुआ। अपनी मां से उसने विरासत में समझदारी और पिता से बहादुरी और सतर्कता पाई थी। वह इतना चतुर था कि कभी-कभी तो बाज़ के चंगुल से छूटकर बाद में खुद दुश्मन के सिर पर धड़ाम से टूट पड़ता था। लेकिन इसके बारे में सही वक्त आने पर बताऊंगा।

अब मैं आपको बताता हूं कि जब चित्र-ग्रीव अंडे के अंदर ही था तब वह कैसे मरते-मरते बचा! उस दिन को मैं कभी नहीं भुला पाऊंगा जब मैंने अपनी गलती से उसकी मां के दो अंडों में से एक को तोड़ डाला था। अपनी उस मूर्खता पर अभी तक मुझे अफसोस है। कौन जानता है, उस टूटे अंडे में दुनिया का उच्चतम कोटि का कबूतर नष्ट हो गया हो! यह हुआ इस तरह कि हमारा घर चार मंजिल का था और इसकी छत पर हमारा कबूतरखाना था। चित्र-ग्रीव की मां ने जब अंडे दिए, उसके कुछ दिन बाद मैंने कबूतरखाना साफ करने का निश्चय किया जिसमें उसकी मां बैठी थी। मैंने उसे उठाकर सावधानी से अपने पास छत पर रख दिया। उसके बाद मैंने एक-एक करके अंडों को बहुत कोमलता से उठाया और सावधानी से दूसरे कबूतरखाने में रखना शुरू किया। इसके तख्ते पर न तो मुलायम रूई थी और न फुलालेन का कपड़ा। फिर जिस खाने में अंडे दिए गए, मैं उसे साफ करने में लग गया और जैसे ही वह साफ हुआ, मैंने एक अंडा उठाया और उसे उसकी सही जगह पर रख दिया। इसके बाद जैसे ही मैंने दूसरा अंडा उठाया, अचानक तेजी से कोई चीज मेरे चेहरे पर आकर गिरी, जैसे आंधी में कोई छप्पर गिरा हो।

यह चित्र-ग्रीव का पिता था जो आगबबूला होकर पंखों से मेरा चेहरा पीट रहा था। इससे भी बुरी तरह उसने अपना एक पंजा मेरी नाक पर जमा रखा था। इससे मुझे बड़ी पीड़ा और आश्चर्य हुआ और न जाने कैसे मेरे हाथ से अंडा गिर गया। मैं अपने हाथों से उस पक्षी को अपने सिर और चेहरे से हटाने में लगा था और अंत में वह उड़ गया। लेकिन काफी देर हो चुकी थी। छोटा-सा अंडा टूटकर मेरे पैरों के पास पड़ा था। मुझे उस बेहूदा बाप और अपने आप पर भी बहुत गुस्सा आया। अपने आप पर क्यों गुस्सा आया? इसलिए कि मुझे उस पक्षी (बाप) से सतर्क रहना चाहिए था। उसने मुझे अंडा चुराने वाला समझा होगा। उसकी इस बेवकूफी की वजह से उसकी जान भी जा सकती थी और उसका बसेरा भी छिन सकता था। मैं आपको बताना चाहूंगा कि पक्षियों के अंडे सेने के समय उनका घोंसला साफ करते वक्त किसी भी तरह के अचानक आक्रमण की आशंका के लिए पहले से तैयार रहना चाहिए।

अब अपनी कहानी आगे बढ़ाते हैं। कबूतरी को मालूम था कि कब उसे अपनी चोंच से अंडे के बाहरी छिलके को तोड़ना है, ताकि चित्र-ग्रीव को दुनिया में लाया जा सके। हालांकि नर-कबूतर अंडे के ऊपर हर रोज सुबह से दोपहर बाद तक लगभग एक तिहाई समय बैठता है, फिर भी उसे यह मालूम नहीं होता कि उसके बच्चे का जन्म कब होगा! इसका निश्चित पता माता के सिवाय और किसी को नहीं होता। हम अब तक यह नहीं जान सके हैं कि प्रकृति की कौन-सी अनोखी संदेश प्रणाली है जिसके द्वारा वह जान लेती है कि अंडे के खोल के अंदर पीला और सफेद तरल पदार्थ बच्चे के रूप में परिवर्तित हो चुका है। उसे यह भी मालूम होता है कि अंडे के किस सही स्थान पर चोंच मारकर अंडे को तोड़ना है ताकि बच्चे को तनिक-सी भी चोट न लगे। मुझे तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं लगता।

चित्र-ग्रीव का जन्म ठीक उसी प्रकार हुआ जैसे मैंने ऊपर बताया है। अंडा देने के करीब बीसवें दिन मैंने पाया कि अब कबूतरी अंडे के ऊपर नहीं बैठी है। वह कबूतर को चोंच मार-मारकर बार-बार भगा देती है जैसे ही वह मुंडेर से उड़-उड़कर अंडे पर बैठने के लिए आता है। वह गुटर-गूं, गुटर-गूं करता हुआ मानो कह रहा हो–'मुझे तुम दूर क्यों भगाती हो?'

कबूतरी और जोर-जोर से चोंच मारकर उसे दूर भगाती है जैसे कह रही हो– 'मेहरबानी करके चले जाओ, मुझे अब बहुत गंभीर काम करना है।'

यह सुनकर कबूतर उड़कर दूर चला जाता है। मुझे अब घबराहट होने लगी क्योंकि मैं अंडे से बच्चे के निकलने के लिए उत्सुक था और मुझे संदेह होने लगा कि वह अंडा सेने में लगी है या नहीं! अधिक दिलचस्पी और घबराहट से मैंने कबूतरखाने को देखा। एक घंटा बीत गया लेकिन कुछ नहीं हुआ। अगले घंटे का एक तिहाई समय बीतने पर कबूतरी ने अपनी गर्दन एक तरफ घुमाई और कान लगाकर कुछ सुनने लगी, शायद अंडे के अंदर कुछ हलचल हुई हो। फिर उसने अपना काम शुरू किया। मुझे लगा, उसके सारे शरीर में एक झनझनाहट-सी हुई है और इसके साथ ही उसमें हिम्मत-सी जगी है। अब उसने अपना सिर उठाकर निशाना साधा। दो बार चोंच मारकर उसने अंडा तोड़ दिया और एकदम छोटे-से पक्षी को प्रकट किया जिसकी नन्ही चोंच और छोटा-सा कांपता हुआ शरीर था। अब मां की सूरत देखने लायक थी। वह आश्चर्यचकित थी। क्या इसी के लिए वह इतने दिनों से इंतजार कर रही थी! आहा, बच्चा कितना नन्हा-सा, कितना निरीह! जैसे ही कबूतरी ने उसकी निरीहता को महसूस किया, झट से उसने अपने नीले पंखों से ढककर उसे छाती से चिपका लिया।

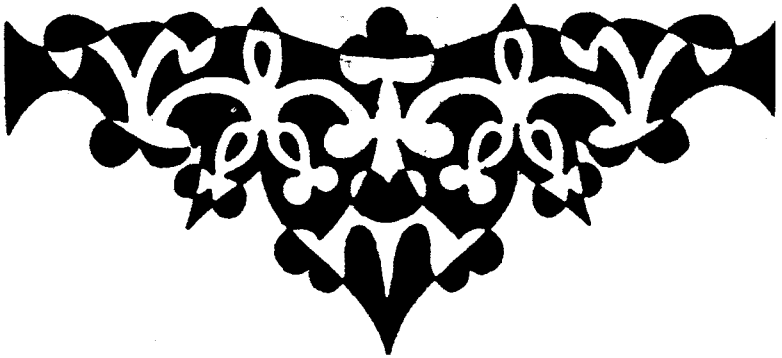

चित्र-ग्रीव की शिक्षा

पक्षी जगत में दो दृश्य बड़े ही मधुर होते हैं—एक तो जब मां अंडे को तोड़कर बच्चे को प्रकाश में लाती है और दूसरा जब बैठकर उसे सेती है और खाना खिलाती है। चित्र-ग्रीव के माता-पिता दोनों ने ही उसे बड़े प्यार से पाला-पोसा। जैसे इंसान के बच्चे को गले से लगाने से सुख मिलता है वैसा ही सुख पक्षियों के बच्चे को भी माता-पिता द्वारा बैठकर गरमाहट देने से मिलता है। इससे बेचारे बच्चे को उष्मा और खुशी मिलती है। भोजन की तरह ही उनके लिए यह जरूरी होती है। ऐसे समय कबूतरखाने में रूई अथवा फुलालेन अधिक नहीं ठूंसनी चाहिए। ये चीजें कम-से-कम रखनी चाहिए ताकि घोंसले का तापमान गर्म न होने पाए। कुछ नासमझ कबूतरबाज यह नहीं जानते कि जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, उसके शरीर से काफी गर्मी निकलती है और मेरे विचार से ऐसे समय घोंसला साफ न करना ही बुद्धिमानी है। जो सब कुछ माता-पिता घोंसले में रहने देते हैं, उससे बच्चे को आराम और खुशी मिलती है।

मुझे अच्छी तरह से याद है, जन्म के दूसरे दिन से ही छोटा-सा चित्र-ग्रीव स्वतः अपनी चोंच खोल लेता था और गुलाबी रंग के शरीर को फुला लेता था और जब उसके माता-पिता में से कोई एक अपने घोंसले में उड़कर आता, वह जोर से चीं-चीं करने लगता था। माता अथवा पिता अपनी चोंच उसके खुले हुए मुंह में डालकर उनके द्वारा खाए गए ज्वार के दानों से बना दूध उसके मुंह में उड़ेल देते थे। जो भोजन उसके मुंह में उड़ेला जाता, वह बहुत मुलायम होता था। मैंने स्वयं देखा है कि कोई भी कबूतर अपने बच्चे के मुंह में कोई सख्त दाना नहीं डालता। जब तक कि वह एक महीने का नहीं हो जाता तब तक वे दाने को अपने गले में रखकर मुलायम करके उसे बच्चे के कोमल पेट में जाने देते हैं।

हमारा चित्र-ग्रीव बड़ा पेटू था। अपने माता-पिता में से हरदम एक को खाना लाने के लिए व्यस्त रखता था और दूसरे को लाड़-प्यार करने के लिए अपने पास रखता था। मेरे विचार से उसका पिता उसकी माता से उसे कम लाड़-प्यार या उसके लिए कम मेहनत नहीं करता था। आश्चर्य नहीं, इसी कारण उसका तन काफी मोटा हो गया था। उसका गुलाबी रंग, पीलापन लेते हुए सफेद-सा होने लगा, जो पंख निकलने का पहला संकेत था। उसके बाद चुभने वाले सफेद पंजे निकलने लगे—गोल-गोल और कुछ सख्त जैसे साही के कांटे। उसके बाद उसके मुंह और आंखों से लटकती पीली-सी चीज गिर गई। उसका जबड़ा क्या जबरदस्त था! जब वह करीब तीन सप्ताह का हुआ तब एक चींटी उसके पास से गुजर रही थी। बिना किसी के बताए उसने उस चींटी पर चोंच से वार किया। बेचारी चींटी अब दो टुकड़ों में बंटी उसके सामने मरी पड़ी थी। वह अपनी चोंच नीची करके मरी हुई चींटी के पास लाया और जो कुछ उसने किया था, उसकी जांच-पड़ताल की। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने उस काली चींटी को दाना समझा होगा और अनजाने में अपनी जाति के मित्र बेकसूर राहगीर की हत्या कर दी थी। हम आशा करते हैं कि इससे वह अवश्य शर्मिंदा हुआ होगा। खैर, उसने फिर कभी आजीवन किसी अन्य चींटी की हत्या नहीं की।

पांच सप्ताह का होने पर वह अपने जन्म वाले घोंसले के बाहर कूद-कूदकर कबूतरखाने के पास रखे बर्तन से पानी पीने लगा था। अभी तक उसका खाना उसके माता-पिता ही लाते थे। हालांकि अब वह रोज स्वयं भी खाने के लिए कोशिश करता था। वह मेरी कलाई पर बैठ जाता और मेरी हथेली पर रखे दाने चुगता था। जैसे कोई जादूगर हवा में गेंद उछालता है उसी तरह वह दाने को दो-तीन बार अपनी चोंच से उछालकर निगल जाता था। हर बार जब वह ऐसा करता तो अपना सिर घुमाकर मेरी

ओर देखता, मानो कह रहा हो–'क्या मैं ठीक से कर रहा हूं? तुम मेरे माता-पिता को बताना जब वे छत पर धूप सेंकने के बाद आएं, कि मैं कितना सयाना हो गया हूं।' फिर भी कहना होगा कि अपनी शक्ति का विकास करने में वह मेरे सभी कबूतरों से धीमा था।

ठीक इसी समय मुझे पता चला, जिसकी जानकारी मुझे पहले नहीं थी कि कबूतर बिना देखे किस तरह धूलभरी आंधी में उड़ सकते हैं। लेकिन जैसे-जैसे मैंने चित्र-ग्रीव को दिनोंदिन बढ़ते हुए देखा तब एक दिन मैंने पाया कि उसकी आंखों के ऊपर एक झिल्ली उतर आई है। मैंने सोचा, शायद वह अंधा हो गया है। बड़ी घबराहट के साथ मैं अपना हाथ बढ़ाकर उसे अपने चेहरे के पास लाया ताकि उसे निकट से अच्छी तरह जांच-परख लूं। जैसे ही मैंने ऐसा किया, उसने झट से अपनी सुनहरी आंखें खोलीं और धीरे से बंद कर लीं। लेकिन उसी समय मैं उसे पकड़कर छत पर ले गया और मई महीने के दहकते सूर्य की तेज धूप में उसकी पलकों की जांच-परख की। हां, मैंने देखा, उसकी पलकों में एक और बहुत पतले कागज जैसी मुलायम झिल्ली थी और ज्यों ही मैं उसका मुंह सूरज की तरफ करता, झट से वह झिल्ली से अपनी सुनहरी आंखें ढक लेता। इस तरह मुझे पता चला कि इसी झिल्ली की सुरक्षा के कारण पक्षी धूल-भरी आंधी में उड़ सकते हैं और सीधे सूरज की ओर देख सकते हैं।

अगले पखवाड़े में चित्र-ग्रीव को उड़ना सिखाया गया। हालांकि वह जन्म से पक्षी था लेकिन फिर भी उसे उड़ना सिखाना आसान काम नहीं था। जब इंसान का बच्चा तैरना सीखता है तो गलतियां करता है और पानी निगल जाता है। ऐसा ही कुछ मेरे कबूतर के साथ हुआ। उसे अपने पंख खोलने की हिम्मत नहीं हो पाती थी और घंटों हमारी छत पर बैठा रहता। वहां चलती तेज हवा भी उसके पंख नहीं खोल पाती थी। इस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए मैं आपको अपनी छत के बारे में बता दूं। हमारी छत के चारों ओर मजबूत कंकरीट की दीवार थी जिसकी ऊंचाई लगभग चौदह साल के लड़के की लंबाई के बराबर थी। इसकी वजह से नींद में चलने वाला आदमी भी चौथी मंजिल से नहीं फिसल सकता था, क्योंकि हममें से अधिकांश लोग गर्मियों में छत पर ही सोते थे।

मैं चित्र-ग्रीव को रोजाना इसी कंकरीट की दीवार पर बैठा देता था, वहां हवा की तरफ मुंह करके वह घंटों बैठा रहता, बस इतना ही कर पाता। एक दिन मैंने मूंगफली के कुछ दाने छत पर डाल दिए और उसे मुंडेर से कूदकर आने और दानों को खाने के लिए बुलाया। उसने कुछ क्षण प्रश्नसूचक नजरों से मेरी ओर देखा, फिर मुझसे नजर फिराकर मूंगफली के दानों की ओर देखा। ऐसा उसने कई बार किया। लेकिन जब उसे विश्वास हो गया कि मैं उन मूंगफली के दानों को उसके पास लाने वाला नहीं हूं तो मुंडेर पर इधर-उधर चलने लगा और कभी-कभी अपनी गर्दन नीची करके तीन फीट नीचे पड़े दानों को देखने लगता। अंत में, दिल तोड़ने वाली इस झिझक के पंद्रह मिनट बाद वह नीचे कूदा। जैसे ही उसके पांव जमीन से लगे, उसके पंख, जो अभी तक खुल नहीं पाए थे और जैसे ही उसने दाने खाने के लिए संतुलन बनाया, अचानक पूरे पंख फैल गए। वाह, क्या जीत की खुशी!

अब मुझे उसके पंखों के रंग में बदलाव दिखाई देने लगा। मामूली-से स्लेटी रंग की जगह उसके शरीर पर घना नीलापन लिए हरा-सा रंग चमकने लगा और एक दिन प्रातःकालीन धूप में उसकी गर्दन रंग-बिरंगे मनकों की तरह झिलमिलाने लगी।

अब सबसे बड़ी समस्या उसकी उड़ान के बारे में आती है। हालांकि जितनी सहायता मैं कर सकता था, मैंने की। लेकिन उड़ने का पहला पाठ पढ़ाने के लिए मैं उसके माता-पिता का इंतजार करने लगा। मैं उसे प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिए अपनी कलाई पर बैठाता, फिर अपनी भुजा को ऊपर-नीचे कई बार ले जाता। ऐसी कठिन जगह पर बैठकर अपना संतुलन बनाने के लिए उसे बार-बार अपने पंख खोलने और बंद करने पड़ते। ऐसा करना उसके लिए बहुत अच्छा था। लेकिन मेरा सिखाना यहीं पर समाप्त हो जाता। आप पूछेंगे, मैं इतना उतावला क्यों हो रहा था? क्योंकि मेरे विचार से उड़ना सीखने में वह काफी पिछड़ रहा था और कलकत्ता में जून के महीने में बारिश शुरू हो जाती है। ऐसे मौसम में लंबी उड़ान असंभव हो जाती है। मैं उसे जल्दी-से-जल्दी दिशा-ज्ञान की शिक्षा देना चाहता था।

मई का महीना खत्म होने से पहले ही, किसी तरह उसके पिता ने यह

काम अपने जिम्मे लिया। उस खास दिन तेज उत्तरी हवा, जो शहर के वातावरण को ठंडा बनाए हुए थी, एकदम शांत हो गई थी। सारा आकाश साफ-सुथरे नीलम की तरह लग रहा था। समूचा वातावरण इतना स्वच्छ कि उसमें शहर की सारी छतें स्पष्ट देखी जा सकती थीं। दोपहर के बाद लगभग तीन बजे चित्र-ग्रीव छत की कंकरीट की मुंडेर पर बैठा धूप सेंक रहा था। उसका पिता, जो हवा में उड़ रहा था, नीचे उतरा और उसके पास आकर बैठ गया। उसने अजीब-सी नजरों से अपने बेटे को देखा, मानो कह रहा हो 'ओ, आलसी जीव, अब तुम लगभग तीन महीने के हो गए हो, फिर भी उड़ने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। तुम कबूतर हो या केंचुए?' लेकिन स्वाभिमानी चित्र-ग्रीव ने कोई उत्तर नहीं दिया, इससे उसका पिता उत्तेजित हो उठा और कबूतरों की भाषा में गुटर-गूं, गुटर-गूं करते हुए उस पर गरजने लगा। उसकी बकवास से बचने के लिए चित्र-ग्रीव दूर हट गया। लेकिन पिता ने गरजते हुए और पंख फड़फड़ाते हुए उसका पीछा किया। चित्र-ग्रीव उससे पीछा छुड़ाते हुए दूर-दूर भागने लगा लेकिन उस बुड्ढे ने उसका पीछा छोड़ने के बजाय अपनी ललकार दुगनी कर दी और उसके पीछे पड़ा रहा। अंत में पिता ने चित्र-ग्रीव को दीवार के किनारे लाकर धक्का दे दिया। अब उसके पास छत से लुढ़कने के सिवाय और कोई उपाय नहीं था। अचानक उसके पिता ने पूरी ताकत लगाकर उसे नीचे धकेल दिया। चित्र-ग्रीव नीचे लुढ़क गया लेकिन मुश्किल वे वह आधा फीट नीचे लुढ़का होगा कि उसने अपने पंख खोल दिए और उड़ने लगा। आहा, सभी कितने आनंदित हुए। उसकी मां, जो दोपहर के शौच के बाद स्नान कर रही थी, सीढ़ियों के रास्ते ऊपर आई और अपने बेटे का साथ देने के लिए उसके साथ उड़ गई। छत पर वापस आने से पहले वे लगभग दस मिनट तक ऊपर चक्कर लगाते रहे। जब वे छत पर उतरे तो आदतन मां ने अपने पंख मोड़कर बंद कर लिए और चुपचाप बैठ गई। लेकिन बेटे ने ऐसा नहीं किया, वह घबराया हुआ था जैसे कोई बालक ठंडे और गहरे पानी में उतरकर घबरा जाता है। उसका सारा शरीर कांप रहा था। उतरते वक्त उसने अपने पंजे डरते-डरते चलाए और अपना संतुलन बनाने के लिए जोर-जोर से पंख फड़फड़ाए। अंत में वह रुका तो उसका सीना एक ओर की दीवार से जा टकराया और उसने पंख

समेट लिए जैसे हम लोग पंखा बंद करते हैं। चित्र-ग्रीव घबराहट में हांफ रहा था और उसकी मां उसे सहला रही थी, उसे अपनी छाती से लगा रही थी जैसे कि वह एक नन्हा बच्चा हो जिसे पुचकारने की जरूरत हो। सफलतापूर्वक अपना काम पूरा होते देखकर चित्र-ग्रीव का पिता स्नान करने चला गया।

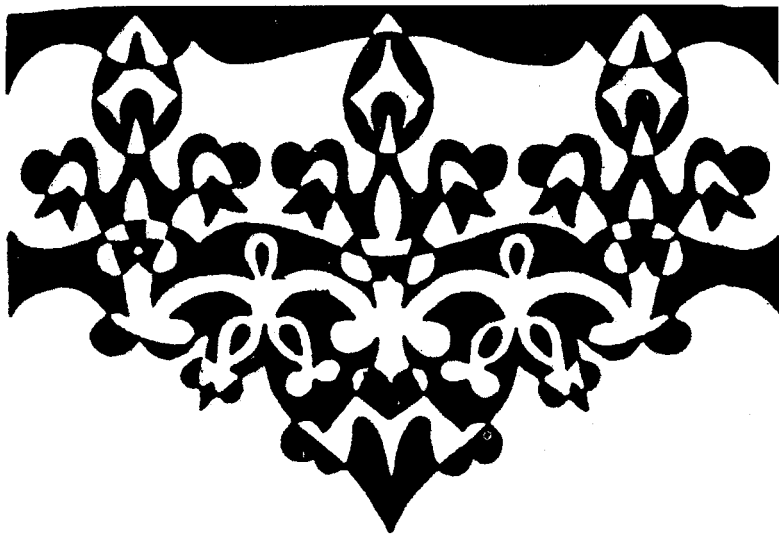

दिशा-ज्ञान का प्रशिक्षण

अब नये गोताखोर की भांति उसने हवा में उड़ने के डर पर काबू पा लिया था और चित्र-ग्रीव ऊंची और लंबी उड़ाने भरने का जोखिम उठाने लगा था। एक सप्ताह के अंदर वह नियमित रूप से रोजाना आधा घंटा उड़ने लगा था और घर की छत पर उसी शान से उतरता था जैसे उसके माता-पिता उतरते थे। संतुलन बनाने के लिए अब वह घबराकर पंखों को फड़फड़ाना बंद कर चुका था।

शुरुआत की उड़ानों में उसके माता-पिता उसके साथ उड़ा करते थे लेकिन अब उसे पीछे छोड़कर काफी ऊंचाई पर उसके ऊपर उड़ा करते थे। कुछ देर मैंने सोचा कि शायद वे उसे और अधिक ऊंचाई पर उड़ाने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि हर बेटे की हमेशा यही कोशिश रहती है कि वह अपने माता-पिता के स्तर तक अवश्य पहुंचे। शायद उसके बुजुर्ग अपने छोटू के लिए एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। लेकिन अंततः एक दिन जून के शुरू में मेरे इस विचार को अगली दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने झकझोर कर रख दिया। चित्र-ग्रीव काफी ऊंचाई पर उड़ रहा था और अपने आकार से आधा दिख रहा था। उसके माता-पिता उसके ऊपर उड़ रहे थे। वे बिलकुल हथेली के आकार के बराबर छोटे दिख रहे थे। वे हिंडोले की तरह लगातार उसके ऊपर चक्कर काट रहे थे। यह एकदम उबाऊ और फिजूल लग रहा था। मैंने उनसे अपनी नजर हटा ली क्योंकि लगातार देर तक ऊपर देखते रहना आसान काम नहीं होता। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी नजरें क्षितिज की ओर नीची कीं तो देखा कि एक काला-सा धब्बा तेजी से उन्हें घेरे हुए है और प्रत्येक क्षण वह बड़ा होता जा रहा है। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह कैसा पक्षी है जो तेजी से एक सीधी लाइन में उड़ रहा है। क्योंकि भारत में पक्षियों को संस्कृत में 'तुर्यक' कहा जाता है यानी टेढ़े-मेढ़े उड़ने वाले। लेकिन यह पक्षी तो एकदम तीर की भांति सीधा उड़ा आ रहा था। अगले दो मिनट में मेरा शक दूर हो गया। यह बाज़ था जो चित्र-ग्रीव की ओर लपक रहा था। मैंने नजर ऊपर उठाई तो आश्चर्यजनक दृश्य देखा। उसका पिता लगातार नीचे उतरता हुआ उसकी बराबर ऊंचाई पर पहुंचने लगा। उसकी मां भी उसी उद्देश्य से नीचे की ओर तेजी से चक्कर काटने लगी। इसके पहले वह भयानक बाज़ उस छोटे-से निरीह बच्चे से करीब दस गज दूरी पर पहुंच गया। उसके दोनों पंख ढके हुए थे। अब वे तीनों कबूतर अपने शत्रु के रास्ते से हटकर सीधे नीचे की ओर उड़ने लगे। उनकी इस चाल से हताश हुए बिना बाज़ ने धावा बोल दिया। तुरंत उन तीनों ने नीचे की ओर जोर से उड़ान भरी जिससे बाज़ हताश हो गया। लेकिन उसने जो धावा बोला था, वह इतना तेज था जिससे वह उन कबूतरों से काफी नीचे पहुंच गया। कबूतर लगातार हवा में चक्कर लगाते हुए नीचे की ओर उड़ते रहे। कुछ ही देर में वे हमारी छत की आधी दूरी पर थे। अब बाज़ ने अपना इरादा बदला और ऊपर की ओर उड़ता हुआ आकाश में चला गया और इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया कि कबूतरों को उसके पंखों की सांय-सांय की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। ऊंचाई पर उनके ऊपर होने के कारण वे उसे देख भी नहीं पा रहे थे। अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हुए उन्होंने चैन की सांस ली। उन्हें देखकर लगता था कि अब वे उतनी तेजी से उड़ रहे थे जैसे पहले उड़ रहे थे। तभी अचानक मैंने देखा कि बाज़ अपने पंख बंद करके उनके ऊपर टूट पड़ा और उनके ऊपर पत्थर की तरह गिरा। घबराहट में मैंने अपनी अंगुलियां मुंह में डालकर जोर से सीटी मारी उन्हें चेतावनी देने के लिए। गिरती तलवार की तरह कबूतरों ने डुबकी मारी, फिर भी बाज़ ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। प्रतिक्षण वह उनके पास आता जा रहा था और अब मुश्किल से

उनके बीच की दूरी करीब 20 फीट रह गई थी। उसका निशाना चित्र-ग्रीव पर था, इसमें संदेह नहीं था। मैं उसके खतरनाक पंजों को देख पा रहा था। 'क्या ये मूर्ख कबूतर अपने आप को बचाने का कोई उपाय करेंगे?' दुखी मन से मैंने सोचा। यदि उन्होंने अपना सिर उठाकर ऊपर देखा होता तो उसे अपने नजदीक देख पाते। तभी अचानक उन्होंने ऊपर की ओर एक बड़ा चक्कर लगाया। बाज़ ने उनका पीछा किया। इसके बाद वे और अधिक बड़े गोलाकार रास्ते पर उड़ने लगे। जब कोई पक्षी गोलाकार चक्कर लगाता है तो उसका इरादा उस दायरे के मध्य उड़कर आना होता है अथवा उस दायरे से उड़कर दूर जाना होता है। बाज़ की समझ में उनकी यह चाल नहीं आई और वह उनके बड़े दायरे के अंदर छोटा दायरा बनाते हुए नीचे की ओर उतरने लगा। जैसे ही उसकी पीठ उन तीनों कबूतरों की ओर हुई उन्होंने तुरंत छत की ओर डुबकी मारी। लेकिन वह दुष्ट हार मानने वाला नहीं था। वह बिजली-सी लपलपाती जीभ की तरह उनका पीछा कर रहा था। कबूतरों ने एक घुमावदार उड़ान नीचे की ओर भरी और अब वे सही सलामत छत पर मेरी खुली बांहों में सुरक्षित उतर आए थे। उसी समय मैंने अपने सिर के ऊपर बाज़ के पंखों से निकली हवा की सांय-सांय सुनी। बाज़ की पीली आंखें आग उगल रही थीं और उसके पंजे सांप की जीभ की तरह कंपकंपा रहे थे। जैसे ही वह मेरे सिर के पास से ऊपर गया, उसके पंखों की हवा से निकली सीटी की-सी आवाज सुनाई देती रही।

इस मुसीबत से बाल-बाल बचने के बाद मैंने चित्र-ग्रीव को दिशा-ज्ञान सिखाना शुरू किया। एक दिन मैं इन तीनों कबूतरों को पिंजरे में बंद करके अपने शहर की पूर्व दिशा की ओर ले गया। ठीक प्रातः नौ बजे मैंने उन्हें आजाद छोड़ दिया। वे सुरक्षित घर लौट आए। अगले दिन मैं उन्हें उतनी ही दूर पश्चिम दिशा में ले गया। एक हफ्ते के अंदर वे किसी भी दिशा से पंद्रह मील की परिधि से अपने घर आने का रास्ता जान गए थे। ऐसा संभव नहीं है कि दुनिया में सभी कुछ बाधारहित संपन्न हो जाए। चित्र-ग्रीव के प्रशिक्षण के दौरान भी बाधा आई, मैं उसे और उसके माता-पिता को गंगा नदी पर नाव में बिठाकर ले गया। हम लगभग सवेरे के छह बजे घर से

निकले थे। आकाश में बादल छितरे हुए थे और दक्षिण दिशा से हलकी-सी हवा चल रही थी। हमारी नाव में बर्फ जैसे सफेद चावल लदे थे और उनके ऊपर लाल और सिंदूरी रंग के आम पड़े हुए थे, लगता था जैसे सफेद पर्वत पर सूर्यास्त के समय आग लगी हो।

ऐसे सुहावने मौसम के भयानक झंझावात में बदलने का अंदाजा मुझे लगा लेना चाहिए था। हालांकि अभी मैं बच्चा ही था लेकिन जून के महीने में मौसम का मिजाज बदलने की कुछ जानकारी मुझे अवश्य थी।

हमने मुश्किल से बीस मील की दूरी तय की होगी कि आकाश में पहली बरसात के बादल दौड़ते हुए नजर आने लगे। हवा इतनी तेज चलने लगी कि उसने हमारी नाव का एक पाल उखाड़ फेंका। मैंने अधिक समय न लेते हुए पिंजरा खोला और कबूतरों को उड़ा दिया। जैसे ही उनका हवा से सामना हुआ उन्होंने झट से छलांग लगाई और बहुत नीचे-नीचे उड़ने लगे, लगभग पानी की सतह के पास। इस तरह वे लगभग पौना घंटा उड़ते रहे, हालांकि हवा के विरुद्ध मुश्किल से उड़ पा रहे थे लेकिन उनकी कोशिश जारी थी और अगले दस मिनट में टेढ़ी-मेढ़ी उड़ान भरते हुए जमीन की ओर उड़ गए। ज्यों ही वे हमारी बाईं ओर गांवों के पास पहुंचे, आकाश में एकदम घुप्प अंधेरा छा गया और मूसलाधार बारिश होने लगी। चारों ओर पानी ही पानी नजर आने लगा।

आकाश में बिजली रह-रहकर कौंधकर तांडव नृत्य करने लगी। मैंने अपने कबूतरों के मिलने की आशा छोड़ दी थी। हमारी नाव भी डूबते-डूबते मुश्किल से बची। लेकिन हमारी किस्मत अच्छी थी कि नाव एक गांव के पास किनारे से जा लगी। जब अगले दिन सुबह मैं रेलगाड़ी से घर पहुंचा तो तीन की जगह दो भीगे कबूतरों को घर पाया। चित्र-ग्रीव का पिता उस झंझावात में अपनी जान गंवा बैठा था। निस्संदेह गलती मेरी थी। आगामी कुछ दिनों तक हमारे घर में शोक छाया रहा। जैसे ही बरसात रुकती दोनों कबूतरों को लेकर मैं छत पर जाता और आकाश की ओर देखता रहता ताकि हमारे कबूतर की झलक मिल सके। अफसोस, वह कभी वापस लौट कर नहीं आया।

हिमालय में चित्र-ग्रीव

मैदानी इलाके में बारिश और गर्मी काफी बढ़ गई थी, इसलिए मेरे परिवार ने हिमालय में जाने का निश्चय किया। यदि आप भारत का मानचित्र देखें तो आप इसके उत्तर-पूर्व में दार्जिलिंग शहर पाएंगे जो विश्व के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर माउंट एवरेस्ट के आमने-सामने स्थित है। दार्जिलिंग से काफिले के साथ धीरे-धीरे चलते हुए मेरा परिवार, मैं और मेरे दोनों कबूतर एक छोटे-से गांव डेंटम में पहुंचे। यहां हम समुद्रतल से दस हजार फीट की ऊंचाई पर थे। इतनी ऊंचाई पर अमेरिकी पर्वत अथवा एल्पस पर कुछ बर्फ अवश्य मिल जाएगी लेकिन भारत में जो उष्ण-कटिबंधीय क्षेत्र है और हिमालय भूमध्य रेखा से लगभग 30 अक्षांश उत्तर में है, यहां पर दस हजार फीट की ऊंचाई तक बर्फ नहीं दिखाई देती। इसकी तलहटी के घने जंगलों में जंगली जानवर बहुतायत से पाए जाते हैं। यहां पर सितंबर के बाद काफी सर्दी पड़ने लगती है। इसी कारण यहां रहने वाले लोग इन दिनों में दक्षिण की ओर चले जाते हैं।

अपने निवास स्थान की थोड़ी-सी जानकारी आपको दे दूं। हमारा घर पत्थरों और मिट्टी का बना था, जो चाय उगाने वाली छोटी-सी घाटी के ऊपर था। इस घाटी के पार शानदार मोड़ों वाली घनी पहाड़ियों के बीच धान, मकई और फलों के बाग थे। वहां से कुछ दूरी पर उठती हुई सदाबहार घनी हरियाली से ढकी पर्वतों की चोटियां थीं। उनके पीछे हजारों फीट बर्फ से ढकी कंचनजंघा, मकालू और एवरेस्ट की पर्वत-श्रेणियां थीं। ऊषाकाल में ये सफेद नजर आती हैं लेकिन जैसे ही प्रकाश बढ़ता है और सूर्य ऊपर उठता है तो एक के बाद एक पर्वत-श्रेणियां क्षितिज से सटी अलग-अलग दिखने लगती हैं और आकाश को भेदती हुई और मंगलकामना-सी करती हुई किरमिजी प्रकाश बिखेर देती हैं।

अकसर हिमालय की शोभा प्रातःकाल में सबसे अच्छी दिखती है क्योंकि दिन के दौरान उस पर बादल छाये रहते हैं। धार्मिक हिंदू लोग सवेरे जल्दी उठकर इन भव्य पर्वत-श्रेणियों को देखकर ईश्वर की आराधना करते हैं। आराधना के लिए इससे अच्छा स्थान और क्या हो सकता है? इनमें से अधिकांश पर्वत-श्रेणियां मनुष्य की पहुंच से अछूती हैं। इनकी अनुलंघनीय पवित्रता अमूल्य है, इसी कारण ये स्थायी दिव्यता की प्रतीक बनी हुई हैं। ये ईश्वर की रहस्यमयता की भी प्रतीक हैं, क्योंकि प्रातः वेला के अतिरिक्त सारे दिन ये रहस्यमय ढंग से बादलों से ढकी रहती हैं। जो विदेशी लोग भारत में आते हैं, वे सोचते हैं कि वे सारे दिन एवरेस्ट को देखना पसंद करेंगे। लेकिन किसी को इस बात की शिकायत नहीं होनी चाहिए क्योंकि जिसने भी एवरेस्ट की प्रातःकालीन शालीनता और विस्मयकारी भव्यता को देखा है, वह यही कहेगा कि 'यह इतना अधिक शोभायुक्त है कि इसे सारे दिन देखा ही नहीं जा सकता, कोई भी लगातार अपनी आंखों के सामने इसे सहन नहीं कर सकता।'

जुलाई के महीने में एवरेस्ट के ये प्रातःकालीन दृश्य रोजाना देख पाना संभव नहीं होता, क्योंकि यह महीना वर्षा का होता है। सभी पर्वत-श्रेणियां अत्यंत विनाशकारी बर्फीले तूफानों की चपेट में आ जाती हैं। कभी-कभी बर्फीले तूफानों से जूझते हुए ये चोटियां प्रकट हो जाती हैं कठोर बर्फ के ढेर और सफेद अग्निपुंज की तरह। सूर्य के प्रकाश में ये प्रचंड रूप से चमकती हैं, जबकि इनकी तलहटी में बर्फीले बादल उमड़ते रहते हैं, मानो मस्त होकर कट्टर दरवेश अपने भयंकर देवता के आगे तांडव नृत्य कर रहा हो।

गर्मी के मौसम के दौरान मेरा दोस्त राद्जा और वन्य जीवन के हमारे गुरु वयोवृद्ध घोंड हमारे घर आए। राद्जा लगभग सोलह साल का था, जो बाह्मण पुजारी था। घोंड को हम वृद्ध इसलिए कहते थे क्योंकि उसकी उम्र

की जानकारी किसी को नहीं थी। राद्जा और मुझे अत्यंत सक्षम शिकारी के सुपुर्द कर दिया गया ताकि उसकी देख-रेख में हम लोग जंगल के रहस्य और पशु-पक्षियों के बारे में अध्ययन कर सकें। इसके बारे में मेरी अन्य पुस्तक में वर्णन हो चुका है, अतः यहां पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं है।

डेंटम में रहना शुरू करने के साथ ही मैंने अपने कबूतरों को दिशाओं की जानकारी की कला सिखाना आरंभ कर दिया। जब कभी दिन साफ होता, हम सवेरे ही ऊंची पहाड़ियों पर बलसाम तथा इलैक्स के जंगलों के मध्य ऊपर चढ़ जाते और वहीं अपने कबूतरों को किसी मठ या भद्रपुरुष के घर की छत से हवा में छोड़ देते थे। शाम को जब हम घर लौटते तो निश्चित रूप से चित्र-ग्रीव और उसकी मां को पहले से ही पहुंचा हुआ पाते।

जुलाई के महीने में मुश्किल से एक दर्जन दिन साफ होते लेकिन लगभग सारी जानकारी रखने वाले घोंड और अपने मित्र राद्जा के साथ थोड़े समय में ही हम काफी दूर-दूर तक घूम चुके थे। इन दिनों हम सभी वर्गों के पहाड़ी लोगों से मिले और उनके साथ ठहरे जो शक्ल से चीनी जैसे लगते थे। उनका व्यवहार बड़ा ही सौहार्दपूर्ण और उनका आतिथ्य-सत्कार का तरीका बहुत उदार होता था। निश्चित ही हम अपने कबूतरों को साथ ले जाते थे, कभी-कभी पिंजरे में और अधिकतर अपनी जैकेट में छिपाकर। हालांकि कई बार हम बारिश के पानी में सराबोर हो जाते लेकिन चित्र-ग्रीव और उसकी मां को अत्यंत सावधानी से मौसम की बारिश से बचाकर रखते थे।

जुलाई के अंत में हम लोगों ने और दोनों कबूतरों ने सभी मठ और सिक्किम के सामंतों के जो महल देखे और जाने थे, उनसे दूर की यात्रा की। हमने सिंहलीला को पार किया जहां छोटा-सा सुंदर मठ था, जो फालूत और एक अनजानी जगह की ओर था। अंत में हम गरुड़ों की निवास-स्थली पर पहुंचे। हमारे चारों तरफ ग्रेनाइट की चट्टानें थीं, जो देवदार और छोटे-छोटे चीड़ के पेड़ों से घिरी हुई थीं और हमारे सामने थी कंचनजंघा और एवरेस्ट की पर्वत-श्रेणियां। यहीं पर एक खाई के किनारे हमने दोनों कबूतरों को छोड़ दिया। उस उल्लासपूर्ण हवा में वे ऐसे उड़े जैसे स्कूल से छुट्टी के बाद बच्चे दौड़ते हैं। चित्र-ग्रीव को भव्य ऊंचाई दिखाने के उद्देश्य से उसकी मां आकाश में काफी ऊंचाई पर उड़ने लगी।

दोनों पक्षियों के उड़ जाने के बाद हम तीनों आपस में बातें करने लगे कि ऊंचाई पर उड़कर ये पक्षी क्या-क्या देख रहे होंगे। निस्संदेह उनके सामने कंचनजंघा समूह की उठती हुई दो चोटियां होंगी, जो एवरेस्ट से थोड़ी नीची लेकिन उतनी ही निर्दोष और आडंबरहीन जैसी वह निर्मल चोटी है जो अभी तक मनुष्य की पहुंच से परे है। इस तथ्य से हमारे मन में उदात्त भाव उठने लगे। कुछ क्षण हमने इस पर्वत को दूर से देखा जैसे ईश्वर के मुखमंडल के सामने दर्पण हो और मैंने अपने मन-ही-मन में कहा–'हे पवित्रता के सर्वोच्च शिखर, तुम अनुलंघनीय और शाश्वत हो, कोई मानव तुम्हें कलंकित न करे और न कोई तुम्हारी पवित्रता को थोड़ा-सा भी छूकर धब्बा लगाए। तुम सदैव अजेय रहो, हे धरा के मेरूदंड और अमरत्व के मापदंड!'

लेकिन इतनी ऊंचाई पर मैं आपको पर्वतों के बारे में बताने के लिए नहीं लाया हूं। लेकिन वहां पर जो एक साहसिक काम हमने किया, उसे आपको बताना है। क्योंकि अब चित्र-ग्रीव और उसकी मां उड़ गए थे। हमने उन्हें देखना बंद कर दिया और निकट ही एक चट्टान में गरुड़ के घोंसले की खोज में निकल पड़े। हिमालय के गरुड़ सुनहरे, चमकदार और भूरे रंग के होते हैं। हालांकि देखने में बहुत सुंदर लगते हैं, सुंदरता और शक्ति का सही संतुलन, लेकिन ये भयानक शिकारी पक्षी होते हैं।

लेकिन शुरू में इस विशेष दोपहर बाद हमारा सामना किसी वहशीपन से नहीं हुआ। इसके विपरीत हमको घोंसले में गरुड़ के रोयेंदार दो छोटे बच्चे मिले। वे नवजात बच्चों की तरह आकर्षक लग रहे थे। दक्षिणी हवा सीधे उनकी आंखों से टकरा रही थी लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। हिमालय के गरुड़ आदतन अपना घोंसला हवा के रुख की ओर बनाते हैं। ऐसा वे क्यों करते हैं, यह कोई नहीं जानता। साफ तौर से कहा जा सकता है कि जिस हवा में यह पक्षी तैरता है, उसी का सामना करना पसंद करता है।

ये छोटे बच्चे लगभग तीन सप्ताह के थे क्योंकि साफ जाहिर होता था कि इन्होंने अपने रूई जैसे शरीर को बदलना शुरू कर दिया था और असली पंख उगाना शुरू कर दिया था। उनकी उम्र के हिसाब से उनके पंजे काफी तेज और चोंच मजबूत और पैनी थी।

गरुड़ का घोंसला खुला और बड़ा होता है। इसका प्रवेश द्वार, जहां ये उतरते हैं, लगभग छह-सात फीट चौड़ा और काफी साफ-सुथरा होता है। लेकिन इसके अंदर अंधेरा और संकरापन होता है। वहां पर बहुत सारी टहनियां और कूड़ा-करकट पड़ा होता है और थोड़े बाल तथा शिकार किए गए पक्षियों के पंख होते हैं। बाकी सभी अंगों को गरुड़ के बच्चे खा जाते हैं। उनके माता-पिता मांस के साथ अधिकांश हड्डियां, बाल और पंख खा जाते हैं।

हालांकि आसपास का इलाका छोटे-छोटे चीड़ के पेड़ों से ढका था, फिर भी यहां पर पक्षियों का काफी शोर था और अजीब किस्म के कीड़े-मकोड़े देवदार के वृक्षों पर भिनभिना रहे थे। रत्नजड़ित-सी तितलियां बैगनी आर्किड्स के ऊपर नीले पंखों से हलचल कर रही थीं।

बुरॉस के फूल चंद्रमा के बराबर चमक रहे थे। कभी-कभी बीच में जंगली बिल्ली की आवाज सुनाई दे जाती थी। लगता था, दोपहर की नींद में बोल रही हो।

अचानक घोंड ने लगभग 12 गज दौड़कर हमें झाड़ियों में छुप जाने के लिए कहा। हम मुश्किल से ऐसा कर पाए थे कि अगले कुछ क्षणों में कीड़े-मकोड़ों का भिनभिनाना भी बंद हो गया। सभी पक्षी शांत हो गए और ऐसा लगा कि वृक्ष भी किसी आशंका में चुपचाप खड़े हो गए हों। हवा में धीरे-धीरे किसी सीटी की-सी आवाज सुनाई देने लगी और थोड़ी देर में यह धीमी होने लगी। इसके बाद चीख जैसा अजीब-सा शोर हुआ और एक विशालकाय पक्षी गरुड़ के घोंसले पर उतरा। इसके पंखों से अब भी सीटी की-सी आवाज निकल रही थी। उसका आकार देखकर घोंड ने सोचा कि यह उन बच्चों की मां है। जब तक उसके बच्चे घोंसले के अंदर नहीं गए तब तक वह हवा में उड़ती रही। उसके पंजों में खाल छिली हुई कोई चीज थी। लगता था, यह खरगोश था। वह उतरी और शिकार को घोंसले की पटिया पर छोड़ दिया। उसके पंखों को देखकर लगता था कि वे लगभग छह फीट लंबे होंगे। आदमी जैसे कागज मोड़ता है उसी तरह उसने अपने पंख समेटे और यह देखकर कि उसके बच्चे उसकी ओर आ रहे हैं, उसने अपने पंजे खींच लिए ताकि उनके कोमल शरीर में न चुभ जाएं। अब वह एक

विकलांग की तरह लंगड़ाती हुई चलने लगी। दोनों बच्चे दौड़कर उसके अधखुले पंखों के नीचे छुप गए। लेकिन उन्हें उसका लाड़-प्यार नहीं चाहिए था, क्योंकि वे भूखे थे। वह उन्हें मृत खरगोश के पास लाई। उसने कुछ मांस काटा और उसमें से हड्डियां बाहर निकालीं और उसे उन्हें खाने को दिया। अब फिर नीचे से सभी तरफ पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों का शोरगुल शुरू हो गया। हम अपने छुपने के स्थान से उठकर घर की ओर चलने लगे। मैंने और राद्जा ने घोंड से आश्वासन लिया कि बाद में किसी दिन वह, जब ये बच्चे बड़े हो जाएंगे तो, हमें उन्हें दिखाने अवश्य लाएगा।

लगभग एक महीने बाद हम लोग फिर वहीं पर आए। हम चित्र-ग्रीव और उसकी मां को साथ लाए, क्योंकि मैं चाहता था कि अपनी दूसरी उड़ान में निश्चित रूप से वे हर एक गांव, मठ, झील और नदी तथा पशु-पक्षियों—सारस, तोते, हिमाचली बगुले, जंगली हंस, गोताखोरों, छोटे बाज़ों और अबाबीलों को अच्छी तरह देख लें। इस बार हम गरुड़ के घोंसले से परे लगभग 100 गज दूर गए। बुरॉस की झाड़ियों पर शरद ऋतु का असर दिखाई पड़ने लगा था। इसके फूलों की पंखुड़ियां झड़ने लगी थीं और इसकी लंबी टहनियां, जो कई फीट ऊंची थीं, हवा में सरसराने लगी थीं। बहुत-से पेड़ों की पत्तियां पीली पड़ने लगी थीं और हवा में पूरी उदासी छाई हुई थी। लगभग ग्यारह बजे हमने कबूतरों का पिंजरा खोल दिया और वे नीचे आकाश में उड़ गए जो बर्फ से ढकी चोटियों पर पाल की तरह टंगा हुआ था। लगभग आधे घंटे तक वे हवा में उड़ते रहे तभी उनके ऊपर एक बाज़ आ पहुंचा। वह दोनों कबूतरों के पास आता गया और उनके पीछे पड़ गया। लेकिन उसके शिकार काफी सतर्क थे और बिना किसी नुकसान के बच निकले। ज्यों ही चित्र-ग्रीव और उसकी मां तेजी से पेड़ों के पास नीचे आ रहे थे तभी बाज़ की साथी निकली और उसने उन पर धावा बोल दिया। जैसा धावा उसके पति ने बोला था वैसा ही उसने किया और वह भी असफल रही। अपने शिकार को हाथ से निकलता देख नर बाज़ अपनी पत्नी पर जोर से चीखा। सुनकर वह हवा में रुक गई और मौके की तलाश करने लगी। अपने आपको सुरक्षित समझकर कबूतरों ने दक्षिण दिशा की ओर अपनी उड़ान कर दी और बाज उन्हें घेरते हुए पूर्व और पश्चिम दिशा

से उनका पीछा करने लगे। उड़ान भरते हुए वे कबूतरों के नजदीक पहुंच गए। उनके पंख, जो कसाई के छुरे के समान थे, आंधी की तरह हवा को चीरते हुए भाले की तरह उनके ऊपर टूट पड़े। चित्र-ग्रीव की मां रुकी और हवा में तैरने लगी। इससे बाज़ों का अंदाज गड़बड़ा गया। अब क्या किया जाए? किस पर आक्रमण किया जाए? इसी सोच-विचार में कुछ समय लगा और चित्र-ग्रीव ने मौका पाकर अपनी उड़ान की दिशा बदल दी। वह तेजी से ऊपर ही ऊपर उड़ता गया। थोड़ी देर बाद उसी की तरह उसकी मां भी उड़ने लगी। लेकिन उसने देर कर दी थी। इतने में बाज़ों ने उसके ऊपर छलांग मारी। वह घबरा गई। उसे डर था कि बाज उसके बेटे के पीछे पड़े हैं और व्यर्थ ही वह उनकी ओर उड़ने लगी। अगले ही क्षण वे दोनों शिकारी बाज़ उसके ऊपर टूट पड़े। चारों ओर हवा में पंख छितराने लगे। यह दृश्य देखकर चित्र-ग्रीव भयभीत हो गया और स्वयं को बचाने के लिए पास की चट्टान पर जा गिरा। उसकी मां की गलती थी जिसके कारण उसे अपनी जान गंवानी पड़ी और अपने बेटे की जान को भी उसने खतरे में डाल दिया था।

हम तीनों उस चट्टान की खोज में निकल पड़े जहां चित्र-ग्रीव गिरा था। यह काम आसान नहीं था क्योंकि हिमालय की तलहटी में चलना बड़ा जोखिम भरा होता है। यहां बाघों से अधिक अजगरों से डर लगता है, फिर भी मेरे मित्र राद्जा ने आग्रह किया और शिकारी घोंड भी उससे सहमत था कि इससे हमारी जानकारी में वृद्धि होगी।

जिस चट्टान पर हम थे, वहां से नीचे उतरे और एक पतली-सी खाई में घुसे, जहां किसी शिकार किए गए जानवर की ताजी हड्डियां बिखरी पड़ी थीं जिससे पता चलता था कि पिछली रात किसी शिकारी जानवर ने जमकर भोजन किया है। लेकिन हम डरे नहीं, क्योंकि हमें सही रास्ते पर ले जाने वाला बंगाल का मशहूर शिकारी घोंड हमारे साथ था। शीघ्र ही हमने दरारों और खोहों से होकर कठिन चढ़ाई शुरू की, जहां हरी काई पर बैगनी फूलों के पौधे छाये हुए थे। चीड़ और बलसाड की गंध चारों ओर फैली हुई थी। हवा ठंडी थी और चढ़ाई खत्म होने का नाम नहीं ले रही थी। कहीं-कहीं अब भी कोई बुरॉस खिलता नजर आ जाता था। दोपहर बाद दो बजे थोड़े से चने

खाकर हम उस चट्टान पर पहुंचे जहां चित्र-ग्रीव छुपा हुआ था। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब हमें पता चला कि यह वही स्थान था जहां हमने पिछली बार गरुड़ का घोंसला देखा था लेकिन अब वे गरुड़ के दोनों बच्चे बड़े हो गए थे। वे अपने घोंसले के सामने वाली शिला पर बैठे थे जबकि पास ही कगार पर चित्र-ग्रीव दुबककर किनारे पर बैठा हुआ था। यह देखकर हम आश्चर्यचकित रह गए। हमको आता देख गरुड़ के बच्चे अपनी चोंच से हम पर हमला करने आगे बढ़े। राद्जा का हाथ सबसे नजदीक था, उस पर उन्होंने जोर से चोंच मारी जिससे उसके अंगूठे पर घाव हो गया और उससे खून बहने लगा। हमारे और चित्र-ग्रीव के बीच ये चील के बच्चे थे और किसी भी उपाय से हमको ऊपर वाली चट्टान पर जाना था। हम लोग घोंसले से मुश्किल से छह गज दूर गए होंगे कि घोंड ने हमें तुरंत छुप जाने का इशारा किया, जैसा कि पिछली बार गरुड़ के आने पर किया था। हम फुर्ती से एक देवदार के पेड़ के नीचे छुप गए और तभी हवा में गर्जना-सी करता हुआ गरुड़ के जोड़े में से एक नजदीक आता गया। और जैसे ही वह अपने घोंसले पर उतरा, एक जोरदार-सी आवाज हुई। एक अतिसंवेदनशील खुशी की कंपकंपी की लहर मेरी रीड़ में महसूस हुई जैसे ही उस मादा गरुड़ की पूंछ वाला पंख हमारे पेड़ के ऊपर से सीटी की-सी आवाज करता हुआ मैंने सुना।

जो लोग यह सोचते हैं कि गरुड़ अपना घोंसला एकांत और अगम्य चट्टान पर बनाते हैं, मैं पुनः इस तथ्य को जोरदार शब्दों में कहना चाहता हूं कि उनका ऐसा सोचना गलत है। एक शक्तिशाली पक्षी अथवा जानवर अपना घर इतनी सावधानी से नहीं बनाता। ये लापरवाह हो सकते हैं। ऐसे विशालकाय पक्षी का घर काफी बड़ा होना जरूरी है ताकि घोंसले के बाहरी हिस्से में ये अपने पंख आसानी से खोल और बंद कर सकें और इतना बड़ा स्थान अगम्य कैसे हो सकता है?

दूसरी बात है कि गरुड़ घोंसला बनाने का हुनर नहीं जानते। ये खड़ी चट्टानों में बनी कंदराओं को चुनते हैं, जहां इनका दो तिहाई काम प्रकृति द्वारा किया गया होता है, एक तिहाई काम इन्हें करना होता है, जो टहनियों, पत्तों और घास आदि से बनता है, जिस पर अंडे दिए और सेये जा सकें।

ये सारी जानकारी हमने छुपने के स्थान से घुटनों के बल चलकर घोंसले को दूर से देख-परखकर हासिल की थी। निस्संदेह वे दोनों बच्चे और उनकी मां हमारे पुराने मित्र थे। हालांकि अब वे बड़े हो गए थे लेकिन उनकी मां ने उतरते वक्त आदतन अपने पंख बंद कर लिए ताकि उसके बच्चों को चोट न लगे। लेकिन यह मात्र क्षण-भर के लिए था, जब उसे यकीन हो गया कि वे उसकी तरफ दौड़कर आ रहे थे तो उसने पंख खोल दिए और बाहरी शिला पर स्थिर होकर बैठ गई। गरुड़ के बच्चे (हालांकि अब उन्हें बच्चे नहीं कहना चाहिए क्योंकि अब वे पूरी तरह बड़े हो गए थे) दौड़कर आए और मां के खुले पंखों के नीचे आ गए। लेकिन वे ज्यादा देर वहां नहीं बैठे क्योंकि उन्हें प्यार नहीं बल्कि भूख मिटाने के लिए कुछ भोजन चाहिए था। लेकिन अफसोस, वह कुछ नहीं लाई थी। इस पर वे मां से मुंह फिराकर हवा की ओर रुख करके बैठ गए और इंतजार करने लगे।

घोंड के इशारे पर हम तीनों उठे और ऊपर की ओर चढ़ने लगे। अगले एक घंटे हम छिपकली की तरह रेंगते हुए चील के घोंसले की छत पर पहुंच गए। जैसे ही मैं इसके ऊपर से गुजरा, हड्डियों और सूखे मांस की घिनौनी दुर्गंध से मेरी नाक भर गई। इससे यह सिद्ध होता है कि गरुड़ पक्षियों का राजा होने के बावजूद भी उतना साफ-सुथरा नहीं होता जितना कि एक कबूतर। इसलिए मैं गरुड़ के घोंसले की अपेक्षा कबूतर के घोंसले को पंसद करता हूं।

शीघ्र ही हम चित्र-ग्रीव के पास पहुंच गए और उसे पिंजरे में बंद करने की कोशिश करने लगे। हमको देखकर वह प्रसन्न तो हुआ लेकिन पिंजरे में आने से कतराने लगा। मैंने उसे खाने के लिए कुछ दाल के दाने दिए क्योंकि उसे पकड़ने में काफी समय लग रहा था। उसे दाल के दाने खाने में मस्त देख मैंने उसे पकड़ने का यत्न किया। इससे वह बेचारा डर गया और ऊपर उड़ गया। उसके उड़ने की आवाज सुनकर मादा गरुड़ अपने घोंसले से बाहर निकल आई। उसने बाहर की ओर देखा। उसकी चोंच में कंपन हुआ और उड़ान भरने के लिए उसके पंख खुलने लगे। नीचे होने वाला शोरगुल तुरंत शांत हो गया और वह ऊपर उड़ गई। हमको लगा अब चित्र-ग्रीव नहीं बच पाएगा। अचानक उसके ऊपर एक छाया पड़ी, मैंने सोचा, उसके ऊपर

मादा गरुड़ टूट पड़ी है, हालांकि वह छाया केवल क्षण-भर ही उसके ऊपर आई और फिर दूर चली गई। लेकिन वह बेचारा बुरी तरह डर गया था और उड़कर दूर चला गया और भय से आतंकित होकर टेढ़ा-मेढ़ा उड़ता हुआ हमारी आंखों से ओझल हो गया।

मुझे पक्का विश्वास हो गया कि हम चित्र-ग्रीव को गंवा बैठे हैं। लेकिन घोंड को भरोसा था कि एक-दो दिन में हम उसे अवश्य खोज लेंगे। इसलिए हमने समय व्यतीत करने के लिए इंतजार करने का निश्चय किया।

जल्दी ही रात होने लगी और हमने एक देवदार के पेड़ के नीचे शरण ली। अगले दिन घोंड ने हमको बताया कि अब गरुड़ के बच्चों के उड़ने का समय आ गया है। उसका विचार था कि गरुड़ अपने बच्चों को उड़ना कभी नहीं सिखाते। वे जानते हैं कि उनके बच्चे कब उड़ने लायक हो जाते हैं और तब गरुड़ उन्हें अकेला छोड़ जाते हैं।

उस दिन गरुड़ अपने घोंसले पर वापस लौटकर नहीं आए। फिर जब रात हुई तो उन्होंने उनके आने की उम्मीद छोड़ दी और घोंसले के भीतरी हिस्से में चले गए। हमारे लिए यह रात याद रखने लायक सिद्ध हुई। हम इतनी ऊंचाई पर थे कि हमको पूरा भरोसा था कि वहां तक कोई जंगली जानवर नहीं पहुंच पाएगा। चीते और तेंदुए अकसर नीचे की ओर जाते हैं, यह इसलिए नहीं कि उन्हें ऊंचाई से डर लगता है बल्कि अन्य जानवरों की तरह ये भी अपने शिकार की तलाश में रहते हैं। हिरन, कुरंग, भैंसे और जंगली सूअर वहां होते हैं, जहां जंगल में बहुतायत से हरा चारा होता है, उन्हीं घाटियों में ये चरते हैं। हरी-हरी घास, छोटे-छोटे पौधे, पेड़ों की कोंपले और टहनियां नदियों के पास पाई जाती हैं, ये इन्हीं की तलाश में वहां जाते हैं। यही कारण है कि जंगली बिल्ली, अजगर और हिम तेंदुए आदि के अलावा अन्य शिकारी जानवर ऊंचाइयों पर नहीं जाते। यहां तक कि याक, जो गाय की तरह होता है, वह भी इतनी ऊंचाई पर नहीं चढ़ता। कभी-कभी एक-दो जंगली बकरी ऊपर दिखाई दे जाती हैं लेकिन इससे बड़ा जानवर ऊपर नहीं पहुंच पाता। इसलिए इस रात हमको कोई नाटकीय अनुभव नहीं हुआ। लेकिन इसके विपरीत कड़कड़ाती ठंड ने सुबह से पहले हमारे शरीर को झकझोर दिया था। नींद का तो प्रश्न ही

नहीं उठता था, इसलिए मैं अपने शरीर पर कंबल लपेटकर बैठा रहा और दृश्य देखता और सुनता रहा। इतनी गहन खामोशी थी कि यदि किसी नगाड़े पर सांस भी छोड़ी जाए तो उसकी आवाज भी कराहने जैसी लगे। हर तरफ से इस प्रचंड नीरवता में मुझे बोलने में हिचकिचाहट महसूस हो रही थी। कभी-कभी किसी जंगली बिल्ली के सूखे पत्तों पर पेड़ से कूदने पर धमाके की-सी आवाज और दबे पांव उन पर चलने से चट-चट सुनाई देती थी। बहुत जल्दी वह आवाज नीरवता में डूब जाती जैसे उमड़ते ज्वार में पत्थर डूब जाता है। धीरे-धीरे एक के बाद एक तारे छुपने लगे। रहस्य का ज्वार, जो चारों ओर छाया हुआ था, अब गहराने लगा तभी बरछी की तरह भेदती हुई गरुड़ के घोंसले में कुछ सुगबुगाहट-सी हुई। अब इसमें कुछ संदेह न रहा कि दिन निकलने वाला है। फिर वैसी ही आवाज उसी जगह से उठी। गरुड़ अपनी चोंच से पंखों को साफ कर रहे थे जैसे मनुष्य पूरी तरह नींद से जागने के बाद अंगड़ाई लेता है। अब मैं पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुन सकता था। मैंने सोचा, शायद गरुड़ अपने घोंसले के आगे वाली पटिया पर आगे आ रहे हैं। धीरे-धीरे और आवाज उठने लगी। ऊपर से सारस उड़ने लगे। अजीब पक्षी, जो देखने में हंस जैसे लगते थे, आकाश में छाने लगे और नजदीक ही याक के रंभाने की आवाज शांति भंग करती हुई ऐसी लगी जैसे उसने नगाड़े में सींग घुसा दिए हों। नीचे की ओर कुछ दूर चिड़ियां चहचहाने लगीं और अंत में कंचनजंघा पर्वत-श्रेणियों पर सफेदी छा गई। उसके बाद सिर पर दूधिया सफेदी लिए मकालू प्रकट हुआ। इसके बाद माउंट ब्लैंक के बराबर ऊंचाई वाली पर्वत-श्रेणियां दूध जैसी सफेदी से चमक उठीं। तरह-तरह की आकृतियों और रंगों के पत्थर और पेड़-पौधे नजर आने लगे। सुबह की ओस की बूंदों से आर्किड कांपने लगे। अब आकाश के कंधों पर शेर की भांति सूरज ने छलांग लगाई और क्षितिज का बर्फीला किला सिंदूरी आग से रक्तरंजित हो गया।

घोंड और राद्जा पहले से जागे हुए थे, वे दोनों खड़े हो गए। राद्जा, जो एक अच्छा पुजारी था, ने सूरज की आराधना में वैदिक मंत्र का उच्चारण करना शुरू किया–

हे प्राची दिशि के मूक कुसुम
मानव अगम्य प्राचीन पंथ पर हो प्रशस्त।
अपने निर्मल पथ पर बढ़ते जाओ,
पहुंचो प्रभु के स्वर्णिम सिंहासन तक
और बनो हमारे अधिवक्ता
प्रभु की अमुखरित मौन अनुकंपा के समक्ष ॥

मानव वाणी से अपरिचित गरुड़ प्रार्थना के स्वर से विचलित हो गए। वैसे वे पहले से ही क्रोध से उत्तेजित थे। हमारी प्रार्थना की औपचारिकता समाप्त हुई और हम चीड़ के घने पेड़ों में छुप गए। गरुड़ों को सवेरे का नाश्ता नहीं मिला था। उन्होंने बाहर झांककर देखा और आकाश को निहारा लेकिन उनके माता-पिता को कोई झलक दिखाई नहीं दी। उन्होंने नीचे की ओर झांका, जहां तोते और नीलकंठ उड़ रहे थे। बर्फीली चोटियों को पार करते हुए जंगली हंस दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए रात गुजारकर आए। वे भी थोड़ी देर में भौंरे की तरह दिखाई देने लगे और आकाश में विलुप्त हो गए। घंटे के बाद घंटे बीतते गए लेकिन बड़ी गरुड़ दिखाई नहीं दी। पूरी तरह विकसित गरुड़ के बच्चे पंख फड़फड़ाने लगे। घोंसले के अंदर से झगड़ने की आवाज सुनाई देने लगी। और जोर से शोरगुल होने लगा और तभी उनमें से एक खीझकर घोंसले से बाहर आया और चट्टान के ऊपर चढ़ने लगा। वह ऊंचे से ऊंचे ऊपर चढ़ता गया। बिना पंख खोले वह चट्टान पर चलने लगा। अब तक लगभग आधा दिन बीत चुका था। हमने खाना खाया लेकिन अभी तक माता-पिता गरुड़ों का कोई अता-पता नहीं था। हमने अनुमान लगाया कि जो घोंसले में है, वह उसकी बहन है, जो ऊपर चला गया है, वह उसका भाई है, क्योंकि आकार में वह छोटी है। वह हवा का सामना करती हुई बहुत देर तक एकटक नजरें लगाए रही। लेकिन इंतजार करके वह भी निराश हो गई। आपको अजीब-सा लगेगा लेकिन मैंने आज तक हिमालयी गरुड़ नहीं देखी जो जन्म से हवा की ओर मुंह करके न बैठी हो जब तक कि वह उड़ना न सीख जाए। जैसे कि एक नाविक का बेटा समुद्र की ओर निहारता रहता है जब तक वह स्वयं नाव चलाना न सीख जाए। दोपहर बाद दो बजे तक वह गरुड़ घोंसले में इंतजार करती थक

गई। वह अपने भाई की खोज में बाहर निकली, जो दूर चट्टान के ऊपर बैठा हुआ था। वह भी हवा की ओर मुंह करके बैठा हुआ था। अपनी बहन को ऊपर आते देख उसकी आंखों में चमक आ गई। उसे इस बात की खुशी थी कि अब वह अकेला नहीं है और अपनी बहन को देखकर भोजन के लिए उड़ने के उदासीन विचार से उसे मुक्ति मिली। मैंने किसी गरुड़ को अपने बच्चों को उड़ना सिखाते नहीं देखा। इसी कारण ये दोनों छोटे गरुड़ तब तक पंख नहीं खोलेंगे जब तक ये भूख से व्याकुल न हो जाएं। गरुड़ माता-पिता ये बात अच्छी तरह जानते हैं और इसी कारण समय आने पर वे अपने बच्चों को छोड़कर चले जाते हैं।

छोटी बहन मेहनत करके अपने भाई के पास पहुंच गई। लेकिन अफसोस कि वहां दोनों के बैठने की जगह नहीं थी। बैठने की जगह पर अपना संतुलन बनाने की कोशिश में बहन के वजन से भाई को धक्का लगने से वह लगभग नीचे गिरने लगा। तुरंत उसने अपने पूरे पंख खोल दिए। उनमें हवा भर जाने से वह ऊपर उठने लगा। उसने अपने पंजों को ताना लेकिन वे जमीन तक नहीं पहुंच सके। वह लगभग दो फीट ऊपर उठ गया। उसने अपनी पूंछ नीचे की ओर झुकाई जिसने पतवार का काम किया। इससे वह इधर-उधर झूलने लगा, पहले पूर्व, दक्षिण और फिर पूर्व। वह हमारे ऊपर से उड़ा और हमने उसके पंखों की हवा की मंद-मंद आवाज सुनी। उसी क्षण तत्काल विषादपूर्ण शांति सभी पर छा गई। कीड़े-मकोड़ों का शोर शांत हो गया, खरगोश अपने बिलों में छुप गए। यहां तक कि ऐसा लगता था कि पेड़ों के पत्ते भी शांत होकर अपने नये महाराजा के पंखों की आवाज सुन रहे हों जैसे-जैसे वह ऊपर से ऊपर उड़ता गया। उसे तो उड़ना ही था क्योंकि उड़कर दूर जाने पर ही उसे वह चीज मिल सकती थी जिसकी उसे तलाश थी। कभी-कभी अठारह सौ से तीन हजार फीट की ऊंचाई से गरुड़ जमीन पर कूदते हुए खरगोश को देख लेता है तब वह अपने पंख बंद करके बिजली की तरह उस पर टूट पड़ता है। उसके आने की भयंकर आवाज सुनकर बेचारा शिकार सकपका जाता है और उसी जगह सिकुड़कर बैठ जाता है और फिर गरुड़ के पंजे उस पर झपट पड़ते हैं।

अपने भाई को हवा में उड़ता देखकर और अकेलेपन से डरकर बहन ने

भी अपने पंख अचानक फैला दिए। नीचे से आती हवा ने उसे भी ऊपर उठा दिया। वह भी हवा में तैरने लगी और अपनी पूंछ से उड़ान को टेढ़ा-मेढ़ा करती हुई अपने भाई की ओर उड़ गई और कुछ ही देर में दोनों हमारी नजरों से ओझल हो गए। अब अपने कबूतर की तलाश में उन पहाड़ियों से प्रस्थान करने की हमारी बारी थी। वह शायद डेंटम चला गया होगा। लेकिन हमको तो वे सभी मठ और किले देखने होंगे, जहां पिछली उड़ान के दौरान चित्र-ग्रीव गया था।

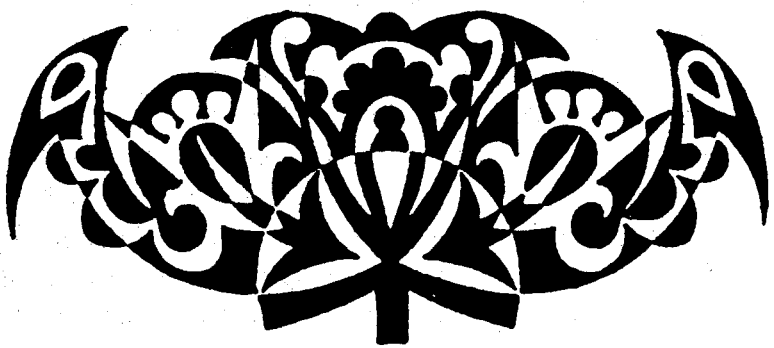

चित्र-ग्रीव की तलाश में

जैसे ही हम अत्यंत ठंडी, अंधकारपूर्ण, संकरी और गहरी घाटी में नीचे उतरे, हमने अपने आपको गहन अंधकारपूर्ण दुनिया में पाया, हालांकि उस समय मुश्किल से दोपहर के तीन बजे थे। यह उन ऊंची पहाड़ियों की छाया के कारण था जिनके नीचे हम चल रहे थे। ठंडी हवा के डर से हमारे कदम तेजी से चल रहे थे। ज्यों ही हम लगभग एक हजार फीट से अधिक नीचे उतरे, यहां ऊपर की तुलना में कुछ गरम था लेकिन जैसे ही तेजी से रात होने लगी, तापमान फिर से गिरने लगा और हमने मजबूर होकर एक दोस्ताना मठ में शरण ली। इस विशेष सराय में पहुंचने पर बौद्ध लामाओं ने बड़ी उदारता से हमारी आवभगत की। इन लामाओं ने रात्रि भोजन और हमको कमरों तक पहुंचाने के समय ही हमसे बातचीत की। वे शाम का वक्त अपना ध्यान लगाने में व्यतीत करते थे।

एक पहाड़ी के किनारे को काटकर बनाई गई तीन कोठरियां हमारे पास थीं। उनके आगे छोटा-सा घास का लॉन था, जिसके बाहरी किनारों पर रेलिंग लगी हुई थी। लालटेन की रोशनी में हमको यहां लाया गया और इन पत्थर की कोठरियों में हमको केवल घास के बिछोने मिले। किसी तरह रात जल्दी बीत गई, क्योंकि हम इतने थके थे कि नींद इतनी अच्छी आई जैसे कि हम मां की बांहों में सो रहे हों। अगली सुबह लगभग चार बजे बहुत सारे कदमों की आवाज से मैं नींद से पूरी तरह जाग गया। बिस्तर से निकलकर मैं उनकी दिशा में गया और जल्दी ही मुझे तेज प्रकाश दिखाई दिया। थोड़ा नीचे उतरकर फिर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ता हुआ मैं मठ के मुख्य ध्यान-केंद्र में पहुंच गया। यह स्थान तीन तरफ से खुला एक विस्तृत गुफा के अंदर था, जिसके ऊपर एक चट्टान थी। मेरे सामने वहां लालटेन लिए हुए आठ लामा खड़े थे। उन्होंने धीरे से लालटेन एक ओर रख दी और टांगें मोड़कर पालथी मारकर ध्यान करने बैठ गए। मंद-मंद प्रकाश उनके नारंगी रंग के चेहरे और नीले वस्त्रों पर पड़ रहा था। उनके चेहरे से शांति और प्रेम प्रकट हो रहा था।

उस समय उनके प्रमुख लामा ने मुझे हिंदी में बताया कि जो सोये हुए हैं उनके लिए प्रार्थना करने की उनकी यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। क्योंकि इस प्रातः वेला में अनिद्रा से पीड़ित व्यक्ति भी विस्मृति में होता है और निद्रा में मनुष्य के विचारों में चेतना नहीं होती। हम उनके लिए शाश्वत अनुकंपा से उन्हें पवित्र करने की प्रार्थना करते हैं। ताकि जब वे सुबह नींद से जागें तो अपना दिन पवित्र, सौम्य और वीरतापूर्ण विचारों के साथ शुरू करें। क्या तुम हमारे साथ ध्यान करने बैठोगे?

मैं तुरंत तैयार हो गया। हम सारी मानव जाति के लिए दया की प्रार्थना करने बैठ गए। आज तक भी मैं जब सवेरे जागता हूं तो हिमालय के उन लामाओं के बारे में सोचता हूं, जो उन सभी सोये हुए स्त्री-पुरुषों के विचारों को पवित्र करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

जल्दी ही दिन निकल आया। मुझे मालूम हुआ कि हम पहाड़ के नीचे एक खाली जगह पर बैठे हैं और हमारे पैरों के पास एक पूरी तरह खड़ी चट्टान है। धीरे-धीरे घंटियों की आवाज आने लगी और सूर्य के प्रकाश में सभी ओर से चांदी और स्वर्णिम घंटियों का मधुर संगीत गूंजने लगा। यह प्रकाश के अग्रदूत सूर्य के लिए लामाओं द्वारा स्वागत था। अंधकार के ऊपर प्रकाश की और मृत्यु के ऊपर जीवन की स्पष्ट घोषणा करता हुआ सूर्य उदय हुआ।

नाश्ते के समय नीचे राद्जा और घोंड से मेरी मुलाकात हुई। वहीं पर नाश्ता परोसने वाले लामा ने हमसे कहा–"कल शरण लेने आपका कबूतर

यहां आया था।'' उसने हमको चित्र-ग्रीव के बारे में बिलकुल सही जानकारी दी, यहां तक कि उसकी ललटी, आकार और रंग सभी कुछ बताया।

घोंड ने पूछा, ''आपको कैसे पता चला कि हम कबूतर की तलाश में आए हैं?''

चपटे चेहरे वाले लामा ने बिना पलक झपके तथ्यपूर्ण आवाज में कहा, ''मैं आपके विचार पढ़ सकता हूं।''

राद्जा ने उतावलेपन से सवाल किया, ''आप हमारे विचारों को कैसे पढ़ पाएंगे?''

लामा का उत्तर था, ''यदि आप सभी चेतन प्राणियों की खुशी के लिए शाश्वत अनुकंपा से बारह वर्ष तक प्रतिदिन चार घंटे प्रार्थना करते हैं तो वह आपको कुछ लोगों के विचार पढ़ने की शक्ति प्रदान कर देती है, विशेष तौर से उन लोगों को जो यहां आते हैं। जब आपके कबूतर ने यहां शरण ली तो हमने उसे खाना दिया और उसके डर का इलाज किया।''

''हे भगवान, डर का इलाज!'' मैं खुशी से चिल्लाया।

लामा ने अत्यंत सहजता से कहा, ''हां, वह बुरी तरह डर गया था। इसलिए मैंने उसे उठाकर अपने हाथों में लिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे नहीं डरने के लिए कहा और पिछली सुबह मैंने उसे जाने के लिए छोड़ दिया। उसका कुछ नुकसान नहीं होगा।''

घोंड ने विनम्रता से पूछा, ''प्रभु, ऐसा कहने का कारण बता सकते हैं?''

ईश्वर भक्त लामा ने कहा, ''हे शिकारी शिरोमणि! कोई भी जानवर अथवा मनुष्य तब तक हमला या हत्या नहीं कर सकता तब तक कि वह अपने शिकार के अंदर डर पैदा न कर दे। मैंने देखा है कि निडर खरगोश भी शिकारी कुत्तों और लोमड़ियों से बचकर निकल जाते हैं। डर के कारण अक्ल पर परदा पड़ जाता है और व्यक्ति निश्चेष्ट हो जाता है। जो डर गया, वह मर गया।''

''प्रभु, आप एक पक्षी के डर का इलाज करते कैसे हैं?''

राद्जा के इस प्रश्न का उत्तर इस पवित्र आत्मा ने इस प्रकार दिया–

''यदि आप निडर हैं, और न केवल अपने विचारों को शुद्ध रखते हैं बल्कि अपनी नींद को भी महीनों तक डरावने सपनों से अछूता रखते हैं तब

आप जिस किसी को भी छुएंगे तो वह एकदम भयमुक्त हो जाएगा। आपका कबूतर अब भयरहित है, क्योंकि मैंने उसे छुआ है और मैं लगभग बीस साल से अपने विचारों में, कामों में और सपनों में भी निडर रहा हूं। इस समय आपका पालतू कबूतर सुरक्षित है, उसको कोई हानि नहीं होगी।''

सहज भाव से कहे गए और शांत और विश्वसनीय शब्दों से मुझे महसूस हुआ कि सच ही चित्र-ग्रीव सुरक्षित होगा और अधिक समय नष्ट न करते हुए मैंने उन बौद्ध भक्तों से विदा ली और दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। मैं दृढ़ विश्वास के साथ कहता हूं कि बौद्ध लामा सही थे। यदि आप दूसरों के लिए रोजाना प्रार्थना करते हैं तो आप उन्हें उनका दिन पवित्र विचारों, साहस और प्रेम से शुरू करने में समर्थ बनाते हैं।

अब हम तेजी से डेंटम की ओर उतरने लगे। हमारा सफर उन स्थानों में से होकर था जो हमारे परिचित थे और जहां गर्मी बढ़ती जा रही थी। हमको कहीं भी बुरॉस नजर नहीं आए।

शरद ऋतु का आगमन होने लगा था। हालांकि अभी तक पेड़ों के पत्ते किरमिजी, सुनहरे, लाल और तांबे जैसे रंग के नहीं हुए थे। चेरी के पेड़ों पर अभी तक फल लदे हुए थे। पेड़ों पर गहरी काई जमी हुई थी। उस पर हवा से फूलों के पौधों का पराग बिखरा हुआ था जो कि बैगनी और सिंदूरी रंग में खिल रहा था। अनेक सफेद धतूरे के पौधों से सूर्य की तेज ताप से ओस टपक रही थी। बड़े-बड़े वृक्ष दिखाई देने लगे जो बड़े भयानक लगने लगे। मीनारों की भांति ऊंचे-ऊंचे बांसों के झुरमुट आकाश को चीरते हुए दिखाई देने लगे। अजगर जितनी मोटी-मोटी लताओं ने हमारा रास्ता घेर लिया था। लगातार कीड़े-मकोड़ों की आवाज असहनीय हो रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर में हरियल तोतों का झुंड सूर्य के प्रकाश में अपनी छटा दिखाकर फिर गायब हो जाता था। मखमल-सी काली तितलियों का समूह फूलों पर मंडरा रहा था और नीले रंग की असंख्य छोटी-छोटी चिड़ियां भिनभिनाती मक्खियों का शिकार कर रही थीं। हम लोग कीड़ों के तेज डंक मारने से परेशान थे और कभी-कभी तो हम सांपों को अपने रास्ते से निकल जाने तक रुक जाते थे। यदि घोंड की अनुभवी आंखें, जिन्हें जानवरों के आने-जाने के रास्तों का पता यदि न होता तो न जाने हम सांपों और भैंसों द्वारा कई बार मार दिए

गए होते। कभी-कभी घोंड अपने कान जमीन पर लगाकर ध्यान से कुछ सुनता था। कई मिनट सुनने के बाद कहता था, "हमारे सामने से भैंसों का झुंड आ रहा है, हमें उनके गुजर जाने तक इंतजार करना होगा।" और थोड़ी ही देर में भैंसों के खुरों की तेज आवाज सुनाई देती और हमें लगता जैसे हमारे पैरों के नीचे की जमीन खिसकती जा रही है। फिर भी हम चलते रहे। केवल खाना खाने के लिए लगभग एक घंटा रुके। अंत में हम सिक्किम की सीमा के पास पहुंचे, यहां की छोटी-सी घाटी में लाल रंग की ज्वार झिलमिला रही थी और हरे संतरे और सुनहरे केले पहाड़ियों के सम्मुख चमक रहे थे और गेंदे के फूलों के ऊपर बैगनी रंग के फूल महक रहे थे।

तभी अचानक हमने ऐसा दृश्य देखा जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। छोटे-सी तंग पक्की सड़क पर हमारे पैरों तले रंग-बिरंगी हवा चल रही थी, गर्मी इतनी तेज थी कि उसमें हवा सतरंगी होकर झूम रही थी। हम कुछ ही दूर गए होंगे कि बिजली की कड़क की भांति आवाज करता हुआ हिमालयी तीतरों का विशाल झुंड ऊपर उठा और जंगल की ओर उड़ गया, गरम हवा में उनके पर मोरपंख जैसे चमक रहे थे। हम आगे बढ़ते गए। अगले दो मिनट बाद एक और झुंड ऊपर उड़ा लेकिन यह मटमैले रंग की कोई अन्य चिड़िया थी। अपनी असमंजस की स्थिति में मैंने उसके बारे में जानना चाहा, घोंड ने कहा, "बंधु, क्या आपने यहां से गुजरने वाले कारवां को ज्वार के बोरों से लदा हुआ नहीं देखा? उनके एक बोरे में छेद हो गया होगा, उसे सीने से पहले उसमें से कुछ ज्वार सड़क पर बिखर गई थी। बाद में उसी ज्वार को यह चिड़िया चुग रही थी। अचानक हम आ गए और हमें आया देख यह डर गई और ऊपर उड़ गई। लेकिन ओ बुद्धिमता के सरताज, यह बताओ कि नर-पक्षी इतने सुंदर क्यों हैं और मादा-पक्षी मटमैली-सी क्यों है? क्या प्रकृति सदैव नर-जाति के प्रति पक्षपात करती है?"

इस विषय में घोंड का कहना था कि "प्रकृति ने सभी पक्षियों को ऐसे रंग दिए हैं जिससे वे अपने शत्रुओं से छुपकर अपना बचाव कर सकें। लेकिन आप देखते नहीं हो कि तीतरों के पंख इतने खूबसूरत हैं कि इन्हें अंधा आदमी भी देखकर मार सकता है।"

राद्जा ने विस्मित होकर कहा, "क्या ऐसा हो सकता है?"

घोंड ने उत्तर दिया, "अपनी उम्र से अधिक सतर्क बंधु, नहीं, ऐसा नहीं होता। असली कारण यह है कि पक्षी पेड़ों पर रहते हैं और जब पृथ्वी अच्छी तरह तप जाती है तब ये जमीन पर उतरते हैं। हमारे गरम देश में तपती धूप में हवा पृथ्वी से दो इंच ऊपर उठकर हजारों रंग में झिलमिलाती है और तीतरों के पंख भी उसी रंग में मिल जाते हैं। जब हम उनकी ओर देखते हैं तो हम तीतरों को नहीं देख पाते क्योंकि ये रंग-बिरंगी हवा में पूरी तरह छुप जाते हैं। अभी कुछ देर पहले हम इनके ऊपर चल पड़ते, यह सोचकर कि हम सड़क पर ही चल रहे हैं।"

"यह बात तो मेरी समझ में आ गई।" राद्जा ने आदरपूर्वक कहा, "लेकिन आपने यह बात तो बताई नहीं कि मादा तीतर मटमैली क्यों है और वे नर-पक्षियों के साथ उड़ी क्यों नहीं?"

घोंड ने बेझिझक उत्तर दिया, "जब शिकारी अचानक उन पर धावा बोल देता है तो नर-पक्षी शिकारी की गोलियों से बचने के लिए ऊपर उड़ जाते हैं, बिना किसी बहादुरी के विचार के। मादा पक्षियों के पंख इतने अच्छे नहीं होते कि वे उनके साथ उड़ सकें।"

इसके अलावा मटमैले रंग की होने कारण वे अपने पंख खोलकर अपने बच्चों को उनके नीचे छुपा लेती हैं और जमीन से चिपक जाती हैं और जमीन के रंग में पूरी तरह घुल-मिल जाती हैं। मारे गए तीतरों की तलाश में जब शिकारी चले जाते हैं तो मादा अपने बच्चों के साथ पास की झाड़ियों के झुरमुट में छुप जाती हैं। यदि उनके बच्चे साथ नहीं होते तो भी मादाएं जमीन पर कूदती रहती हैं और पंख फैलाकर बच्चों को छुपाने का-सा संकेत करती हुई वहीं रहती हैं। आत्म-बलिदान उनकी आदत-सी बन जाती है और आदतन अपने पंख फैलाकर बैठ जाती हैं, चाहे उनके बच्चे उन पंखों के नीचे हों अथवा न हों। जब हम यहां आए थे तब ये वही कर रही थीं। हमें आगे बढ़ता देखकर ये अपने आपको असुरक्षित समझ सहसा ऊपर उड़ गई थीं हालांकि ये अच्छी उड़ान नहीं भर पाती हैं। शाम होते ही हमने सिक्किम के एक भद्र पुरुष के घर आश्रय लिया, जिसका बेटा हमारा मित्र था। यहां पर हमको चित्र-ग्रीव के बारे में और जानकारी मिली, वह पहले भी कई बार इस घर में आ चुका था, इसलिए जब वह इस परिचित जगह पर पहुंचा तो

यहां आकर उसने कुछ ज्वार के दाने खाए, पानी पिया और स्नान किया। यहां पर उसने अपनी चोंच से अपने पंखों को भी संवारा और छोटे-छोटे दो आसमानी रंग के पंख भी छोड़ गया था, उन्हें मेरे मित्र ने रंगने के लिए अपने पास रख लिया था। जब मैंने उन पंखों को देखा तो मेरा हृदय गद्‌गद हो उठा और उस रात मैं संतुष्ट होकर चैन की नींद सोया। चैन की नींद सोने का एक अन्य कारण भी था कि घोंड ने हमें अच्छी तरह सोने के लिए कहा था, क्योंकि अगले दिन चलने के बाद हमको रात जंगल में बितानी थी। अगली रात जब हमने घने जंगल में पेड़ के ऊपर बैठकर बिताई तो मुझे अपने मित्र के घर में मिले आराम की बार-बार याद आई।

आप स्वयं कल्पना कीजिए कि सारा दिन चलने के बाद, भयानक जंगल के बीच एक विशाल बरगद के पेड़ के ऊपर सारी रात बिताना कैसा रहा होगा। इस पेड़ को खोजने में हमको आधे घंटे से अधिक समय लगा क्योंकि अकसर ऊंचाइयों पर बरगद के पेड़ कम ही उगते हैं। इसी कारण एक विशाल बरगद का पेड़ ढूंढ़ने में हमको समय लगा।म छोटे-मोटे पेड़ से हमारा काम नहीं चल सकता था, क्योंकि ऐसे पतले पेड़ को हाथी धक्का मारकर आसानी से तोड़ सकता था। पीछे से धक्का मारकर हाथी अकसर अच्छे मजबूत पेड़ों तक को गिरा देता है। हमें खोज थी ऐसे ऊंचे और विशाल पेड़ की जिसके ऊपरी तनों पर हाथी की सूंड़ न पहुंच पाए और यदि दो हाथी मिलकर पूरी ताकत लगाकर धक्का मारें तो भी उसको तोड़ न पाएं। आखिर हमें अपनी पसंद का ऐसा पेड़ मिल ही गया। राद्‌जा घोंड के कंधों पर खड़ा हो गया और मैं राद्‌जा के कंधों पर खड़ा रहा जब तक कि हमको अच्छा-खासा काफी मोटा तना नहीं मिल गया। मैं ऊपर चढ़कर एक तने पर बैठ गया और वहां से रस्से की सीढ़ी नीचे लटका दी। ऐसी सीढ़ी हम सदैव अपने साथ रखते थे ताकि जंगल में ऐसी मुसीबत के समय हमारे काम आ सके। राद्‌जा चढ़कर मेरे पास बैठ गया। उसके बाद घोंड ऊपर आकर हम दोनों के बीच बैठ गया। जहां नीचे घोंड थोड़ी देर पहले खड़ा था वहां हमने झांका तो देखा, वहां कोयले जैसा गहरा काला अंधेरा छाया था। वहीं पर हमने पास-पास दो तेज हरी बत्तियां-सी जलती देखीं। हम समझ गए, वे क्या हैं। घोंड ने मुस्कराते हुए कहा, "यदि मैं दो

मिनट और नीचे रहा होता तो इस धारीदार बंधु (बाघ) ने मुझे मार डाला होता। अपने शिकार को हाथ से निकल जाने पर बाघ गरजते हुए चीखा। इससे एकदम सन्नाटा छा गया और सारे कीड़े-मकोड़ों और छोटे जीव-जंतुओं का शोर-शराबा एकदम शांत हो गया और यह खामोशी धरती तथा पेड़ों की जड़ों तक छा गई।

हम लोग पेड़ के तने पर सावधानी से बैठ गए और घोंड ने रस्सी की सीढ़ी को अपनी कमर में बांधा, फिर मेरी और राद्‌जा की कमर में, उसके बाद उसने उस रस्सी की सीढ़ी को कसकर पेड़ के मोटे तने से बांध दिया। हममें से एक ने अपना पूरा वजन इस पर डालकर इसकी जांच की। ऐसा करना जरूरी था ताकि सोते हुए कोई नीचे न गिरने पाए। फिर नींद आने पर घोंड ने अपनी बांहें फैलाकर हम दोनों के सिर के नीचे तकिये की तरह फैला दीं।

अब जबकि हमने सारी आवश्यक सावधानियां बरत ली थीं तो हमने अपना ध्यान पेड़ के नीचे होने वाली हलचलों पर लगा दिया। हमारे पेड़ के नीचे से बाघ गायब हो चुका था। कीड़ों ने अपना गाना शुरू कर दिया था, जो बीच-बीच में कुछ देर के लिए थम जाता था क्योंकि कुछ दूर पेड़ों से विशाल आकृतियां धम्म से कूदती उतर रही थीं। ये तेंदुए और चीते थे जो सारा दिन पेड़ों के ऊपर सोते रहे थे और अब रात में अपने शिकार की तलाश में पेड़ों से कूद रहे थे।

जब ये चले गए तो मेढकों ने टर्राना, कीड़ों ने लगातार गुंजारना और उल्लुओं ने घू-घू करना शुरू कर दिया। हजारों तरह की ध्वनियों का शोरगुल होने लगा। जैसे सूर्य की तेज रोशनी आंखों पर पड़ती है, उसी तरह ये आवाजें कानों को फोड़े दे रही थीं। अपने आगे से कुछ तोड़ता और चटकाता एक जंगली सूअर निकला। तुरंत मेढकों ने टर्राना बंद कर दिया, फिर जंगल की बड़ी-बड़ी घास में कुछ हलचल-सी हुई। घास नीचे गिरती और फिर सांस-सी लेती ऊपर उठ जाती। वह दूषित उच्छवास समुद्री लहरों की तरह उठती-गिरती नजदीक आती गई और हमारे पेड़ के नीचे से निकल गई। हमारी जान में जान आई। यह अजगर था जो पानी के गड्‌ढे की ओर जा रहा था। हम पेड़ के ऊपर उसकी छाल की तरह चिपके रहे क्योंकि घोंड

ने बताया कि हमारी सांसों की आवाज से अजगर हमारी स्थिति का पता लगा सकता है।

कुछ देर बाद हमको कुछ टहनियों के चटकने की आवाज सुनाई दी, ऐसी हल्की-सी जैसी उंगलियां चटकाने में आती है। यह हिरन था जिसके सींग किसी लता में उलझ गए थे और वह कुछ टहनियां चटकाकर सींग छुड़ा रहा था। मुश्किल से वह थोड़ी-सी दूर गया होगा कि जंगल किसी आशंका से एकदम गंभीर हो गया। आवाजें शांत हो गईं। जो दस-बारह तरह की आवाजें हम सुन रहे थे, उनमें से केवल तीन आवाजें ही सुनाई देने लगीं। कीड़ों की टिक, टैक, टोक, हिरन का हल्का-सा रंभाना, लगता था, पानी के गड्ढे के पास उसे अजगर ने जकड़ लिया था, और हमारे ऊपर हवा की आवाज। अब हमको हाथियों का झुंड आता दिखाई दिया और वे हमारे पेड़ के आसपास आकर खेलने लगे। हथिनियों की चिंघाड़, हाथियों का घुरघुराना और हाथी के बच्चों की भागम-भाग से सारा वातावरण भर गया था।

इसके बाद क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं, क्योंकि मैं अर्धनिद्रा में झपकियां ले रहा था और उसी अर्धनिद्रित अवस्था में कबूतरों की भाषा में चित्र-ग्रीव से बात कर रहा था। मैं नींद और स्वप्न की गहरी उलझन का अनुभव कर रहा था। किसी ने मुझे झकझोरकर जगा दिया। मुझे अजीब हैरानी हुई जब घोंड मेरे कान में फुसफुसाया, "अब मैं तुम्हें नहीं संभाल सकता। नींद से जागो, कुछ गड़बड़ होने वाली है। एक पागल हाथी पीछे छूट गया है। यह मस्ताना नुकसान पहुंचाने पर उतारू है। हम इतनी ऊंचाई पर नहीं हैं, जहां इसकी सूंड़ न पहुंच सके। यदि इसने अपनी सूंड़ अधिक ऊपर उठाई तो इसे हमारे यहां होने की गंध मिल जाएगी। जंगली हाथी इंसानों से घृणा करते हैं और डरते हैं; और यदि इसने हमारी गंध सूंघ ली तो यह पूरे दिन यहीं ठहरा रहेगा, यह जानने के लिए कि हम कहां पर हैं। सजग हो जाओ लड़के! एकदम सतर्क हो जाओ इससे पहले कि शत्रु हम पर हमला करे।"

उस हाथी के बारे में हमें कोई गलतफहमी नहीं थी। उषा की पूर्व वेला की पीली रोशनी में मैं स्पष्ट रूप से पहाड़-सी काली आकृति को पेड़ के

नीचे चलता हुआ देख सकता था। वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक जाकर रसीली हरी टहनियों को तोड़ रहा था, जो अभी सर्दी से मुरझाई नहीं थीं। वह लालची हाथी उन रसीली टहनियों को खाए जा रहा था, जो इस मौसम में कम ही दिखाई देती थीं। आधे घंटे के अंदर उसने एक अजीब हरकत की, उसने अपने अगले दोनों पैर पास के मजबूत पेड़ के तने के ऊपर की ओर झुला दिए। इससे उसकी आकृति एक विशालकाय हाथी की-सी लग रही थी। इस अत्यंत लंबी पहुंच से उसकी सूंड़ लगभग पेड़ की चोटी तक पहुंच गई तो उसने ऊपर की नरम टहनियों को झुकाकर सारी टहानियां चबाकर पेड़ को लगभग ठूंठ कर दिया। उस पेड़ की अच्छी-अच्छी टहनियों का सफाया करने के बाद हमारे पेड़ के पास वाले पेड़ का भी उसने वही हाल किया जो पहले पेड़ का किया था। अब उसने एक पतला-सा लंबा पेड़ देख उसे अपनी सूंड़ से पकड़कर नीचे झुका लिया और झुके हुए पेड़ के ऊपर अपने दोनों अगले पैर रखकर अपने भार से उसे चटकाकर तोड़ दिया। उस पेड़ की सारी टहनियां भी खा गया। उसे इस तरह अपने सुबह के भोजन के लिए उत्पात करते देखकर सभी पक्षी और बंदर डर गए। पक्षी ऊपर हवा में उड़ने लगे और बंदर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर डर के मारे कूद-कूदकर भागने लगे। उसके बाद हाथी टूटे पेड़ के तने पर पैर रखकर हमारे पेड़ के नीचे आ गया। जैसे ही उसने अपनी सूंड़ से वह तना छुआ जिस पर हम बैठे थे, वह जोर से चिंघाड़ा और अपनी सूंड़ वापस नीचे ले आया, क्योंकि इंसान की गंध सूंघकर सभी जानवर डर जाते हैं। चिंघाड़ने और अपने आपसे शिकायत-सी करने के बाद उसने फिर से अपनी सूंड़ उठाकर बिलकुल घोंड के चेहरे के पास रख दी। तुरंत घोंड ने लगभग उसकी नाक में जोर से छींक मारी। इससे हाथी एकदम घबरा गया और इंसानों से घिरा महसूस करने लगा। इसके बाद चीखता, चिंघाड़ता, डरे हुए पिशाच की तरह, अपने रास्ते में आए सभी को नष्ट-भ्रष्ट करता हुआ जंगल के अंदर भाग गया। फिर तोतों का दल घनी हरी चादर की तरह आकाश में उड़ा। बंदर पेड़ों पर उछल-कूद करते हुए चिल्लाने लगे। जंगल की जमीन पर जंगली सूअर और हिरनों की भगदड़ शुरू हो गई। कुछ देर के लिए जंगल में शोरगुल व कोलाहल बे-रोक-टोक छा गया। घर की ओर अपनी यात्रा शुरू

करने के लिए पेड़ से नीचे उतरने का साहस करने के लिए हमको थोड़ा इंतजार करना पड़ा।

हमारी किस्मत अच्छी थी कि रास्ते में हमें कारवां मिला और उसके घोड़ों पर बैठकर शाम को हम लोग घर पहुंच गए। हम तीनों बुरी तरह थक गए थे लेकिन जब हमने डेंटम के अपने घर के पिंजरे में चित्र-ग्रीव को देखा तो हम अपनी थकान भूल गए। हमारी खुशी का ठिकाना नहीं था। उस शाम सोने से पहले मुझे उस बौद्ध लामा के शांत और सौम्य आश्वासन की याद आई जिसने कहा था–'तुम्हारा पक्षी सुरक्षित है।'

चित्र-ग्रीव का भगोड़ापन

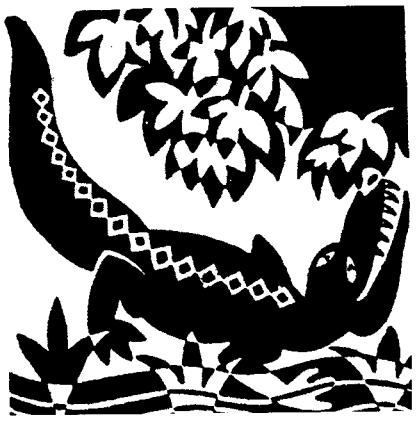

लेकिन हमारे वापस आने के दूसरे दिन की सुबह ही फिर से चित्र-ग्रीव उड़ गया और देर तक नहीं लौटा। लगातार चार दिनों तक हमने बड़ी बेसब्री से उसका इंतजार किया और जब हम इस अनिश्चय को बर्दाश्त नहीं कर पाए तो मैं और घोंड उसकी खोज में निकल पड़े और हमारा इरादा उसे जिंदा अथवा मुर्दा खोज के लाना था। इस बार सिक्किम तक जाने के लिए हमने दो टट्टू भाड़े पर लिए। प्रत्येक गांव में जहां से हम गुजरे, हमने सबसे चित्र-ग्रीव के बारे में पूछताछ की। उनमें से अधिकांश ने चित्र-ग्रीव को देखा था और कुछ लोगों ने तो उसका सही-सही पूरा विवरण दिया। एक शिकारी ने तो एक मठ के कमरे में छज्जे पर एक अबाबील के साथ उसे आराम करते हुए देखा था। एक दूसरे बौद्ध भिक्षु ने नदी किनारे सिक्किम के अपने मठ में उसे देखा था। जहां वह जंगली बतखों के साथ आराम कर रहा था। दूसरे दिन की दोपहर को जब हम अंतिम गांव से गुजरे तो वहां हमको बताया गया कि उन्होंने उसे अबाबीलों के झुंड के साथ उड़ते देखा था।

इस तरह की सही जानकारी के आधार पर चलते हुए हम सिक्किम के उच्चतम पठार पर पहुंच गए थे और वहां हमें एक खुले शिविर में तीसरी रात गुजारनी पड़ी। हमारे टट्टू थक गए थे और हमें भी नींद सता रही थी।

लेकिन लगभग एक घंटे की नींद के बाद मैं हर एक वस्तु पर फैले तनाव से जाग गया। मैंने देखा, दोनों जानवर तनकर खड़े हुए थे। जलती हुई आग और उगते हुए आधे चंद्रमा की रोशनी में मैंने देखा कि दोनों जानवरों के कान एकदम तने हुए थे मानो सावधानीपूर्वक कुछ सुनने का प्रयास कर रहे हों। यहां तक कि उनकी पूंछें तक हिल-डुल नहीं रही थीं।

मैंने भी ध्यान लगाकर सुना। इसमें कोई संदेह नहीं कि रात्रि की शांति मात्र नीरवता से कहीं अधिक थी। नीरवता में एक खालीपन-सा होता है लेकिन हमारे आसपास की शांति अर्थपूर्ण थी मानो ईश्वर चांद के प्रकाश में जमीन पर उतरकर हमारे इतने नजदीक आ गया हो कि यदि मैं अपना हाथ निकालता तो उसके कपड़े छू लेता।

तभी टट्टुओं ने अपने कानों को घुमाया मानो उस आवाज की प्रति-ध्वनि को पकड़ने की कोशिश कर रहे हों, जो उस शांत वातावरण में अगोचर रूप से फैली हुई थी। महान विभूति तो अब तक जा चुकी थी और अब तनाव को कम करती अजीब-सी सनसनी वातावरण में फैल रही थी। घास की मामूली-सी कंपन भी महसूस की जा सकती थी, लेकिन यह भी थोड़ी देर के लिए ही थी। अब टट्टुओं को उत्तर दिशा से आती एक नई आवाज सुनाई दी। पूरी ताकत लगाकर वे उसे सुनने का प्रयास करने लगे। आखिर में मैं भी इसे सुन सका। ऐसी आवाज स्पष्ट सुनाई दी जैसी नींद में बच्चे की जंभाई होती है। फिर नीरवता छा गई। फिर एक लंबी आह जैसी आवाज हवा में व्याप्त हो गई और धीरे-धीरे नीचे से नीचे डूबती गई जैसे कोई मोटा हरा पत्ता धीरे-धीरे ठहरे शांत पानी में डूब रहा हो। फिर क्षितिज पर कुछ बड़बड़ाने की-सी आवाज उठी मानो कोई क्षितिज के सम्मुख प्रार्थना कर रहा हो। एक मिनट बाद टट्टुओं ने अपने कान ढीले छोड़ दिए और पूंछ हिलाना शुरू कर दिया तो मुझे भी राहत महसूस हुई। अरे, हजारों हंसों का झुंड ऊपर हवा में उड़ रहा था। वे हमसे करीब चार हजार फीट की ऊंचाई पर उड़ रहे थे, लेकिन फिर भी मुझसे पहले टट्टुओं को उनके आने की जानकारी हो गई थी।

हंसों की उड़ान से हमको पता चला कि उषाकाल होने वाला है। मैं उठकर बैठ गया और देखने लगा। एक-एक करके तारे छुपने लगे। टट्टुओं

ने घास चरना शुरू कर दिया। मैंने उनका रस्सा ढीला कर दिया क्योंकि अब रात बीत चुकी थी, उन्हें आग के पास बांधना जरूरी नहीं था।

अगले दस मिनट में उषा की घनी नीरवता ने सभी चीजों को अपनी लपेट में ले लिया था और उसका असर हमारे जानवरों पर भी देखा जा सकता था। इस बारे में मैं साफ तौर से देख सकता था कि वे अपना सिर उठाकर कुछ सुन रहे थे। वे क्या सुनने की कोशिश कर रहे थे, मुझे जानने में ज्यादा देर नहीं लगी। नजदीक ही एक पेड़ पर एक चिड़िया ने अपने आपको जोर से हिलाया, दूसरी डाली पर एक और ने भी वैसा ही किया। उनमें से एक ने चहचहाना शुरू किया। यह गाने वाली गौरैया थी और इसने सारी प्रकृति को जगा दिया। अन्य गौरैया गाने लगीं, उनके साथ और गौरैया फिर और, फिर और, इस तरह सभी गाने लगीं। इसके बाद तेजी से आकृतियों और तरह-तरह के रंग प्रकाश में आने लगे। इस तरह उष्ण-कटिबंधीय ऊषा की लाली खत्म हुई और घोंड सुबह की प्रार्थना के लिए उठ खड़ा हुआ।

उस दिन घूमते हुए हम सिंहलीला के पास वाले बौद्ध मठ पर पहुंच गए जिसके बारे में आपको पहले बता चुका हूं। लामाओं ने खुशी-खुशी हमको चित्र-ग्रीव के बारे में सारी जानकारी दी। उन्होंने मुझे बताया कि पिछली दोपहर अबाबीलों के साथ चित्र-ग्रीव ने मठ के छज्जे पर आराम किया था और बाद में वे दक्षिण की ओर उड़ गए थे।

फिर हमने लामाओं का आशीर्वाद लेकर उस आरामदायक सराय से विदा ली और चित्र-ग्रीव की तलाश में निकल पड़े। जैसे ही हमने मुड़कर पहाड़ों की ओर अपनी अंतिम दृष्टि डाली तो वे जलती हुई टॉर्च-से दिखाई देने लगे। अब हमारे सामने था शरद काल की झलक से सुनहरी, बैगनी, हरी और लाल रंग की छटा से झिलमिलाता जंगल।

चित्र-ग्रीव की कहानी

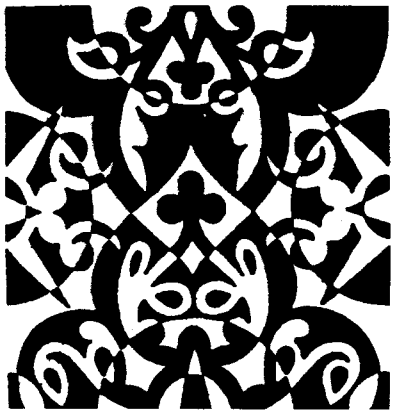

पिछले अध्याय में मैंने उन स्थानों और घटनाओं का थोड़ा-सा विवरण दिया था जहां से चित्र-ग्रीव को खोजा गया था। उसके लिए इस की खोज के पहले दिन ही घोंड ने निश्चित रूप से उसके जाने का रास्ता जान लिया था। लेकिन उन सभी चीजों को लगातार और स्पष्ट रूप से जानने के लिए बेहतर यही होगा कि चित्र-ग्रीव स्वयं अपनी साहसिक यात्रा का वर्णन करे। यदि हम कल्पना के शब्दकोश और विचित्र व्याकरण का प्रयोग करें तो उसे समझना कठिन नहीं होगा। अक्तूबर की दोपहर को जब हम दार्जिलिंग से शहर के लिए वापसी यात्रा के लिए रेलगाड़ी में सवार हुए तो पिंजरे में बैठे हुए चित्र-ग्रीव ने अपनी हाल ही की डेंटम से सिंहलीला और वहां से वापसी के पलायन की कहानी शुरू की–

ओ अनेक बोलियों के जानकार, ओ इंसानों और जानवरों की भाषाओं के जादूगर, मेरी कहानी सुनिए! बेचारे पक्षी की हकलाते हुए भ्रमण की कहानी सुनिए! जैसे नदी का उद्गम पहाड़ से होता है, वैसे ही पहाड़ों से मेरी कहानी शुरू होती है।

जब गरुड़ के घोंसले के पास दुष्ट बाज़ द्वारा मेरी मां को उसके पंजों से चीरते हुए सुना और देखा तो मुझे बड़ा दुःख हुआ। तभी मैंने मरने का निश्चय कर लिया था लेकिन कपटी बाज़ के पंजों से नहीं। यदि मुझे किसी का भोजन बनना है तो हवा के राजा (गरुड़) का बनूंगा, इसलिए मैं गरुड़ के घोंसले की शिला पर जाकर बैठ गया लेकिन उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुंचाई। उनके घर में शोक मनाया जा रहा था। उनके पिता को पकड़कर मार डाला गया था। उनकी मां तीतर और खरगोशों का शिकार करने बाहर गई थी। अभी तक गरुड़ के बच्चों ने वही खाया था जो मारकर उनके लिए लाया जाता था। मुझ जीवित प्राणी को झपटकर मारने की उन्होंने हिम्मत नहीं की। मेरी समझ में अभी तक नहीं आया कि किसी गरुड़ ने मुझे क्षति नहीं पहुंचाई हालांकि पिछले दिनों मैंने बहुत-से गरुड़ देखे थे।

फिर तुम आए मुझे पकड़ने और पिंजरे में बंद करने के लिए। क्योंकि मेरी मनःस्थिति इंसान के साथ रहने की नहीं थी, इसलिए मैं खतरों का सामना करते हुए दूर उड़ गया। लेकिन मुझे तुम्हारे दोस्त और स्थान याद थे इसलिए मैं दक्षिण दिशा में डेंटम जाते हुए उन स्थानों पर ठहरा। मैं केवल दो दिन ही उड़ा था। उन दो दिनों के दौरान नये पंखधारी बाज़ ने मुझ पर हमला किया और मैंने उसे करारी हार चखाई। इसी तरह एक दिन सिक्किम के दक्षिण में जंगल के ऊपर उड़ते समय मुझे अपने ऊपर हवा में चीख सुनाई दी। मैं समझ गया, इसका क्या मतलब है, तो मैंने एक चालाकी दिखाई, मैं अचानक रुक गया और बाज़, जो मुझ पर झपट्टा मारने वाला था, निशाना चूक गया और धड़ाम से नीचे जा गिरा और उसके पंख पेड़ की चोटी पर फंस गए। मैं ऊपर उड़कर तेजी से उड़ान भरने लगा लेकिन वह पीछा करते हुए मेरे नजदीक आ गया। फिर मैं हवा में चक्कर लगाने लगा। मैं ऊपर, और ऊपर उड़ता गया, इतना ऊपर कि मुझे सांस लेने में भी परेशानी होने लगी और फिर से मुझे नीचे उतरना पड़ा। लेकिन जैसे ही मैं नीचे उतरा तो अनिष्टकारी चीख-चिल्लाहट के साथ बाज़ मेरे ऊपर टूट पड़ा। भाग्यवश तुरंत जीवन में पहली बार अपने पिता की तरह मैंने कलाबाजी की और मैं दूसरी बार कलाबाजी में भी सफल रहा। इसके बाद एकदम फव्वारे की भांति ऊपर उड़ गया। बाज़ ने फिर एक बार मुझसे मात खाई और पुनः हमला करने उठा, लेकिन मैंने उसे कोई मौका नहीं दिया। मैं उससे ऊपर उड़ा। और जैसे ही मैं उससे आगे निकल रहा था, वह तुरंत नीचे मुड़ा और फिर ऊपर आकर अपना पंजा मेरी ओर बढ़ाया, मैंने फिर से कलाबाजी दिखाई और उस पर इतने जोर से प्रहार किया कि वह अपना

संतुलन खो बैठा। उसी समय न मालूम क्या हुआ, मुझे लगा, कोई चीज मुझे जमीन की ओर खींच रही थी। मेरे पंख शक्तिहीन हो चुके थे। मैंने गरुड़ की तरह भारी और निश्चित रूप से अपने पूरे भार के साथ बाज़ के सिर पर प्रहार किया। मुझे लगता है, मेरे इस प्रहार से वह दंग रह गया। वह गिरा और नीचे जंगल में गायब हो गया। लेकिन मुझे खुशी है कि मैंने अपने आपको एक पेड़ की डाल पर पाया।

मुझे हवा के चक्रवात ने नीचे खींच लिया था। अपने इस पहले अनुभव के बाद मैंने इस तरह कई बवंडरों का सामना किया है, लेकिन मेरी समझ में यह कभी नहीं आया कि कुछ पेड़ों और जल-प्रवाहों के ऊपर हवा बहुत ठंडी हो जाती है और जो पक्षी इसके सम्मुख आते हैं, वे इसमें फंस जाते हैं। इसलिए भंवर में फंसकर ऊपर-नीचे गिरने के बाद, इन बवंडरों में मैंने उड़ना सीख लिया है। लेकिन मैं इनसे घृणा नहीं करता, क्योंकि जो पहला चक्रवात मैंने झेला था, उसने मेरी जान बचाई थी।

इलेक्स पेड़ की डाल पर बैठे हुए मुझे जोर की भूख लगी और उसने मुझे घर की ओर उड़ने को मजबूर कर दिया। भाग्यवश किसी निर्दयी बाज़ ने मेरी तीर के समान तेज उड़ान को नहीं रोका। लेकिन उस नये पंखधारी हत्यारे बाज़ के चंगुल से सफलतापूर्वक निकल भागने ने मुझे मेरा आत्म विश्वास लौटा दिया था और जैसे ही तुम घर वापस आए तो मैंने अपने आपसे कहा, 'अब जबकि मेरे मित्र ने मुझे जीवित देख लिया है, वह मेरे बारे में चिंतित नहीं होगा। अब मुझे अपने साहस की परीक्षा करने के लिए बाज़ों से भरे वायुमंडल में से होकर उड़ना चाहिए।'

अब शुरू होती है मेरी असली साहसिक यात्रा। मैं उत्तर की ओर गरुड़ के घोंसले पर गया, और उस मठ पर गया जिसके साधु पुरुष ने मुझे पहले आशीर्वाद दिया था। उसके बाद मैं अपने पुराने मित्र अबाबील के जोड़े से मिला। उत्तर दिशा में और आगे बढ़ते हुए, सिंहलीला को पार करता हुआ ऊंचाई पर बने गरुड़ के घोंसले पर पहुंचा। गरुड़ बाहर गए हुए थे। इसलिए मैं आराम से वहां बैठ गया लेकिन यहां मुझे खास खुशी नहीं हुई, क्योंकि गरुड़ अपने घोंसलों में कई तरह की गंदगी छोड़ देते हैं और मुझे डर था कि उस घोंसले में कीड़ों की भरमार होगी। हालांकि मैं गरुड़ के घोंसले पर एक

दिन रुका लेकिन मैंने पेड़ पर बैठकर रात बिताने का निश्चय किया, जहां ये घिनौने कीड़े नहीं थे। गरुड़ के घोंसले में दो दिन आने-जाने के बाद अन्य पक्षियों में मेरी काफी प्रतिष्ठा बढ़ा दी थी। वे मुझसे डरने लगे, शायद वे मुझे गरुड़ जैसा ही कोई पक्षी समझने लगे थे। यहां तक कि बाज़ भी मेरा सम्मान करने लगे थे। इससे मुझे वैसा आत्मविश्वास मिला जिसकी मुझे आवश्यकता थी। एक दिन सवेरे दक्षिण की ओर आती हुई सफेद कतार देखकर मैं उनमें जाकर मिल गया। उनमें मिलने से उन्हें कोई आपत्ति नहीं हुई थी। वे जंगली हंस थे, जो श्रीलंका और उससे भी आगे खिली धूप वाले सागर की तलाश में जा रहे थे।

दो घंटे की उड़ान के बाद उन हंसों को गर्मी लगने लगी, अतः वे एक तेज बहते हुए झरने पर उतर गए थे। जैसे गरुड़ नीचे देखते हुए उड़ते हैं वैसा ये शायद ही कभी करते हों, इनकी नजर तो सदैव क्षितिज की ओर लगी रहती है। ये आकाश के अंतिम छोर के पास गेहुएं और नीले रंग की पट्टी की खोज में उड़ान भरते रहते हैं। हम सीधी पंक्ति में नीचे की ओर उड़ते गए जब तक कि हमें लगा कि धरती हमारा स्वागत करने उठ रही थी और शीघ्र सभी रुपहली जलधारा में कूद पड़े, क्योंकि अब इसका पानी नीले रंग के बजाय रुपहला अधिक लग रहा था। वे पानी के ऊपर तैरने लगे। लेकिन मुझे पता था कि मेरे पंजे जालयुक्त नहीं थे, इसलिए मैं पेड़ पर बैठकर इनकी हरकतें देखता रहा। आप जानते हैं, हंसों की चोंच कितनी चपटी और भद्दी होती है, लेकिन अब इसका कारण मैं जानता हूं। ये किनारों पर उत्पन्न सीपियों को पकड़ने के लिए चिमटे की तरह इनका प्रयोग कर रहे थे। बार-बार हंस अपनी चोंच किसी पौधे अथवा सीपी पर मारता था और उसे मरोड़ता जैसे कसाई बतख की गरदन मरोड़ता है। इसके बाद उसका गला दबाकर मार देता था और शीघ्र ही अपने शिकार को समूचा निगल जाता था। एक हंस को तो मैंने इससे भी बदतर हरकत करते हुए देखा। उसने पानी के सांप से भी पतली-सी मछली देखी किनारे के नीचे एक बिल में, उसने उसे चोंच से पकड़कर खींचना शुरू किया। ज्यों-ज्यों वह खिंचता, मछली पतली और लंबी होती जाती। इस भयंकर रस्साकशी के बाद बेचारी मछली बिल से बाहर खींच ली गई। फिर वह हंस कूदकर किनारे

के ऊपर आ गया और इसे जमीन पर पटककर दे मारा और अपनी चोंच से काटकर उसका गूदा निकाल दिया, फिर तड़पकर बेचारा शिकार मर गया। इसके बाद एक दूसरा हंस आ पहुंचा। (वैसे जब ये हंस उड़ते या तैरते हुए नहीं होते तो कितने भद्दे लगते हैं! पानी में ये नींद के सरोवर में तैरते हुए सपनों की तरह होते हैं, लेकिन जमीन पर ये बैसाखियों पर लंगड़ाते विकलांगों की तरह होते हैं) अब ये दोनों हंस आपस में झगड़ने लगे। एक-दूसरे के पंख नोचने लगे, पंखों से चपेट मारने लगे और जमीन से उछल-उछलकर पैरों से ठोकर मारने लगे। जब वे इस तरह झगड़ने में व्यस्त थे, वे भूल गए कि उनके झगड़ने का कारण क्या है और इतने में पास के सरकंडों में से एक बिल्ली जैसा जंतु शायद ऊदबिलाव कूदा और मरी हुई मछली को मुंह में दबाकर चंपत हो गया। जब तक हंसों का युद्ध-विराम हुआ तब तक देर हो चुकी थी। ओह, ये हंस कितने कम अक्ल होते हैं। इनकी तुलना में हम कबूतर तो चतुराई में आदर्श पक्षी होते हैं।

उनका झगड़ा खत्म होने पर हंसों के मुखिया ने आवाज दी, क्लक, काउ, काउ, काउ। तुरंत सभी ने पैरों पर दौड़कर पंख फैला दिए। थोड़ी-सी पंखों की फड़फड़ाहट और वे सब ऊपर हवा में पहुंच गए। अब वे कितने सुंदर लग रहे थे। उनके पंखों की कोमल सरसराहट, उनकी गरदन और शरीर आकाश में चित्र की भांति और उनकी कतार आंखों को लुभावनी लग रही थी। मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊंगा।

हर झुंड से कोई एक भटक जाता है। इनमें से भी एक साथी पीछे छूट गया, क्योंकि वह अभी तक एक मछली से संघर्ष कर रहा था। अंत में उसने मछली पकड़ ही ली और एक पेड़ की तलाश में उड़ा, जहां छिपकर वह इस मछली को खा सके। अचानक खुली हवा में से एक भारी-भरकम बाज़ ने उस पर धावा बोल दिया। हंस काफी ऊंचा उड़ा लेकिन उस न थकने वाले बाज़ ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। चीखते-चिल्लाते वे ऊपर से और ऊपर चक्कर काटने लगे। अचानक एक हल्की-सी लेकिन एकदम स्पष्ट कौं-कौं की आवाज की प्रतिध्वनि सुनाई दी। झुंड का मुखिया पथ से भटके इस हंस को पुकार रहा था जिससे यह विचलित हो गया और उत्तर देने के लिए कौं-कौं करने लगा और उसी क्षण मछली उसके मुंह से गिर पड़ी और पत्ते

की तरह नीचे गिरती गई। बाज़ ने झट से डुबकी मारी और जैसे ही उसने पंजों से मछली को चीरना चाहा, ऊपर से हवा में उफनती और दहाड़ती आवाज आई। पलक झपकते ही एक गरुड़ ऊपर से गिरा जैसे कोई चट्टान पहाड़ की चोटी से गिरती है। बाज़ अपनी जान बचाकर भागा। यह देखकर मुझे बड़ा आनंद आया।

पाल के समान, गरुड़ के पंखों से दमकते पंजे निकले और मछली को दबोच लिया और फिर हवा का राजा अपने भूरे सुनहरी चमकते कवच के साथ पंख फड़फड़ाता दूर उड़ गया। कहीं दूर बाज़ अभी अपनी जान बचाने के लिए उड़ा चला जा रहा था।

मुझे प्रसन्नता थी कि वह दूर उड़ गया, क्योंकि मुझे अब कारवां मार्ग की तलाश में उड़ना था, जहां मनुष्यों द्वारा कुछ अन्न के गिराए हुए दाने पा सकूं। शीघ्र ही मुझे कुछ अन्न के दाने मिल गए और मामूली-सा अच्छा खाना खाने के बाद एक पेड़ की डाली पर जा बैठा और सो गया। जब मैं उठा तो दोपहर ढल चुकी थी। मैंने ऊपर की ओर उड़ने का निश्चय किया ताकि पवित्र बौद्ध मठ पर पहुंच जाऊं और वहां अपने मित्र अबाबीलों से मिल सकूं। मुझे रास्ते में किसी संकट का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि अब मैं सावधानीपूर्वक उड़ना सीख गया था। आम तौर से मैं काफी ऊंचाई पर पहुंच जाता था और नीचे और साथ ही क्षितिज की ओर देखता था। हालांकि मेरी गरदन जंगली हंसों के जितनी लंबी नहीं है, फिर भी मैं थोड़ी-थोड़ी देर में इसे घुमाकर दाएं-बाएं देख लेता था। यह जानने के लिए कि कोई पीछे से हमला न कर दे। मैं मठ पर समय रहते पहुंच गया। संध्या के समय सभी के लिए मंगलकामना करने के लिए लामा मठ के किनारे खड़े होने की तैयारी कर रहे थे। अबाबीलों का जोड़ा घोंसले के पास उड़ रहा था, जहां उनके तीन बच्चे सोये हुए थे। निस्संदेह मुझे आया देखकर वे बड़े प्रसन्न थे। अपनी सांध्यकालीन पूजा के बाद लामाओं ने मुझे खाना खिलाया और प्रिय वृद्ध लामा ने आशीर्वाद के बारे में कुछ कहा, जिसे किसी ने मेरी ऊपर की गई परम अनुकंपा बताया। फिर मैं अत्यंत निर्भीकता का अनुभव करता हुआ उसके हाथ से उड़ गया। उसी शारीरिक और मानसिक स्थिति में मैं मठ के छज्जे पर स्थित अबाबीलों के घोंसलों के पास अपने घोंसले में चला गया।

अक्तूबर में रात ठंडी होती है। प्रातःकाल जब पुजारियों ने मठ की घंटियां बजाईं, तो अबाबील के बच्चे इधर-उधर उड़कर व्यायाम करने लगे जबकि उनके माता-पिता और मैं सुबह की ठंड छुड़ाने के लिए उड़ने गए। वह दिन मैंने उनकी दक्षिण दिशा की यात्रा की तैयारी के लिए मदद करने में बिताया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उनका इरादा श्रीलंका या अफ्रीका में घोंसला बनाने का था, जहां वे जा रहे थे। उन्होंने मुझे बताया कि अबाबीलों का घोंसला बनाना कोई आसान काम नहीं है। फिर मेरी ज्ञान-पिपासा को शांत करने के लिए उन्होंने बताया कि वे अपने घरों का निर्माण कैसे करते हैं।

चित्र-ग्रीव की साहसिक यात्रा (जारी)

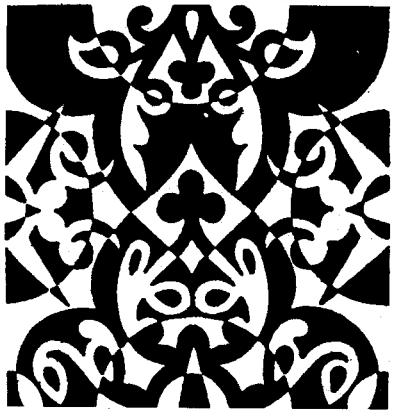

अबाबीलों की वास्तुकला के विषय में स्पष्ट रूप से बताने से पहले मैं उनकी अक्षमता की ओर तुम्हारा ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। इनकी चोंच छोटी होती है, जो केवल छोटे-मोटे उड़ते कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए उपयुक्त होती है। इनका मुंह बहुत चौड़ा होता है जिससे उड़ते समय ये अपने शिकार को पकड़ने में सफल होते हैं। जब ये कीड़ों पर धावा बोलते हैं तो इनके चौड़े मुंह से बहुत कम कीड़े बच पाते हैं। क्योंकि ये बहुत छोटे होते हैं, इसलिए श्रीमान अबाबील अधिक वजन नहीं उठा पाता। इसलिए आश्चर्य की बात नहीं है कि इसका घर बहुत बारीक, पतले तिनकों और पत्तों की सीकों से बनता है जो मध्यम आकार की सुइयों से अधिक मोटे नहीं होते।

पहली बार जब मैंने अबाबील को देखा तो वह मुझे शक्तिहीन और विकलांग-सा लगा। सभी अबाबील जानते हैं कि उनकी टांगें घटिया किस्म की होती हैं। इन पर ये संतुलन मुश्किल से रख पाते हैं। मछली पकड़ने वाले कांटे की तरह इनके छोटे-छोटे पैर नीचे बैठने के लिए इनके शरीर से बाहर निकलते हैं। इनके कांटों जैसे पंजे अनमनीय-से लगते हैं। इनके शरीर और पंजों के बीच टांगें बहुत छोटी होती हैं, इसलिए लंबी टांगों वाले पक्षियों की तरह इनकी टांगें उछाल नहीं दे पातीं। इसमें आश्चर्य नहीं कि ये न कूद सकते हैं और न ही छलांग मार सकते हैं। लेकिन इनकी यह कमी पूरी हो

जाती है इनकी एक विशेषता से कि ये किसी भी पत्थर के घेरों, संगमरमर के छज्जों और दूधिया सजावटी पट्टियों पर चिपक जाते हैं, जैसा अन्य कोई पक्षी नहीं कर पाता। अपने मित्र अबाबील को मैंने चमचमाती दीवार पर लटकते देखा था जैसे कि वह लहरियादार सतह हो।

इन कमजोरियों के अधीन यह अपना घर केवल छज्जों की दीवारों के छिद्रों में ही बना पाते हैं। लेकिन वहां यह अपने अंडे नहीं रख पाते, क्योंकि वहां से ये लुढ़क सकते हैं। इसलिए वह उड़ते हुए तिनकों और गिरती हुई छोटी पत्तियों को पकड़ता है और अपनी लार से उन्हें पत्थर की सतह पर अपने घोंसले पर चिपका देता है। यह उसी वास्तुकला का रहस्य है। इसकी लार अद्‌भुत होती है। यह सूखकर कठोर हो जाती है, अलमारी बनाने वाले बढ़ई के उत्तम सरेस की भांति। जब घोंसला तैयार कर दिया जाता है तब उसमें लंबे सफेद अंडे दिए जाते हैं। अबाबीलों की मादा उतनी स्वाधीन नहीं होती जितनी कि कबूतरों की मादाएं। हमारी मादाएं, पुरुष कबूतरों के समान अधिकारों का उपयोग करती हैं, लेकिन मादा अबाबील को सदैव अधिक काम करना पड़ता है। उदाहरण के लिए श्रीमान अबाबील कभी अंडों के ऊपर नहीं बैठता, अपनी पत्नी को ही उन पर बैठने देता है। दिन में कभी-कभी वह उसके लिए खाना लाता है लेकिन अकसर वह अपना समय अन्य अबाबीलों के पास जाकर बिताता है जिनकी पत्नियां भी अंडों पर बैठने में व्यस्त होती हैं। मैंने अपने मित्र अबाबील से कहा कि कबूतरों की भांति उसे भी अपनी पत्नी को कुछ अधिक आजादी देनी चाहिए लेकिन उसे लगा कि मैं उसके साथ मजाक कर रहा हूं।

हमारी सारी तैयारियां होने के बाद एक दिन शरद्‌काल की सुहावनी सुबह को श्रीमान अबाबील की अगुवाई में, पांच अबाबीलों और मैंने दक्षिण दिशा की ओर यात्रा शुरू की। हम सीधी रेखा में नहीं उड़े, बल्कि आढ़े-तिरछे पूर्व अथवा पश्चिम में उड़ते गए हालांकि हम सामान्य तौर से दक्षिण दिशा का रास्ता ही पकड़े रहे। अबाबील नदियों और झीलों के ऊपर उड़ते हुए मक्खी और मच्छरों को खाते हैं। छोटे पक्षी होने के बावजूद भी वे अंधाधुंध गति से लगभग पचास मील प्रति घंटे के हिसाब से उड़ते हैं। इन्हें जंगल पसंद नहीं होते क्योंकि जब ये उड़ते हैं तो इनकी नजर नीचे

मक्खी-मच्छरों पर होती है और पेड़ से टकराकर ये अपने पंख तोड़ सकते हैं। इन्हें पानी के ऊपर खुला आसमान पसंद होता है और ये अपने हंसिया के समान लंबे पंखों से हवा को चीरते हुए गरुड़ की भांति तेजी से अपने शिकार पर टूट पड़ते हैं। अबाबील की आंखों और मुंह की सुनिश्चितता के बारे में सोचिए! जब यह पानी के ऊपर चक्कर लगा रहा होता है तो उड़ते हुए मक्खी-मच्छरों को बड़ी आसानी से खाता जाता है और जहां से यह निकलता है, वहां इनका सफाया होता जाता है, जो कि थोड़ी देर पहले धूप में नाच रहे होते हैं।

इस तरह हम झरनों, झीलों और समुद्र तालों के ऊपर उड़ते गए। बहरहाल, श्रीमान अबाबील अपना खाना शीघ्रता से खाता है और पानी भी उतनी ही जल्दी। वह पानी के ऊपर उड़ता है, पानी की बूंदें लेता है, उन्हें बहुत तेज गति से निगल जाता है। इसमें आश्चर्य नहीं कि वह पेड़, पौधों और टहनियों से भरे स्थानों पर उड़ने से नफरत करता है।

लेकिन खुली हवा में उतना उड़ना अपने आप में असुविधापूर्ण है। जब अबाबील मक्खी-मच्छरों को इतनी तेजी से खा रहा होता है तब छोटा बाज़ उस पर ऊपर से हमला कर सकता है। ऐसी स्थिति में अबाबील नीचे नहीं झुक सकता, यदि नीचे झुका तो पानी में डूबकर उसकी मृत्यु हो सकती है। अपने मित्रों पर इस तरह के हमले के बारे में बताना चाहता हूं। दोपहर बाद वे एक विशाल झील के ऊपर अपना भोजन पकड़ने में व्यस्त थे और जब मैं आसपास उड़ते हुए अबाबीलों के बच्चों पर नजर रखे हुए था, तभी एक छोटा बाज़ नीचे उतरा। मैंने बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी ले रखी थी, इसलिए मुझे अपनी जान जोखिम में डालकर तुरंत कार्यवाही करनी पड़ी। बिना झिझके मैंने तुरंत डुबकी मारी और दुश्मन और बच्चों के बीच में आकर गिरा। भला छोटे बाज़ ने पंडुक-परिवार के सदस्य से इस तरह के साहस की कभी आशा नहीं की होगी और न उसे मेरे वजन का अंदाजा रहा होगा। मैं उससे कम से कम पांच औंस अधिक भारी था। उसने अपना पंजा मेरी पूंछ पर मारा और कुछ पंख उखाड़े और यह सोचते हुए कुछ क्षण ऊपर हवा में चक्कर लगाने लगा कि उसने कुछ पा लिया है। इससे पहले कि उसे पता चला कि उसे मेरे पंख ही मिले हैं तब तक सभी अबाबील सुरक्षित पेड़

की छाल से जा चिपके, जहां उन तक कोई भी नहीं पहुंच पाता। लेकिन छोटा बाज़ इतना क्रोधित था कि वह बड़े बाज़ की-सी प्रचंडता से मेरे ऊपर टूट पड़ा। हालांकि उसका शरीर बहुत छोटा था और उसके पंजे और भी छोटे थे और मैं जानता था कि उसके पंजे मेरे पंखों और त्वचा तक नहीं चुभ सकते। अतः मैंने उसकी चुनौती स्वीकार की और ऊपर की ओर कलाबाजी की। उसने पीछा किया। मैंने तेजी से डुबकी मारी, उसने भी मेरे पीछे गोता मारा। तब फिर मैंने ऊपर की ओर उड़ना शुरू किया। उसने पहले की तरह पीछा किया। लेकिन इन छोटे बाज़ों को ऊपर हवा में उड़ने से डर लगता है और अब उसके पंख थक गए। मेरे दो बार पंख फड़फड़ाने की तुलना में वह एक बार ही पंख फड़फड़ा पाता। उसे निराश और थका देख, मैंने उसके जीवन का अच्छा सबक सिखाने की तरकीब सोची। जैसे ही यह तरकीब मुझे सूझी, मैंने तुरंत इसका कार्यान्वयन किया। मैंने नीचे की ओर छलांग लगाई, उसने पीछा किया। नीचे, नीचे और नीचे। झील का पानी हमारी तरफ उठता गया, प्रतिक्षण ऊपर, और ऊपर उठता गया, जब तक कि वह मेरे पंखों की चौड़ाई के बराबर दूर न रह गया। फिर मैं तेजी से कुछ इंच ऊपर उछला और गरम हवा के झोंके से जा टकराया। उसमें फंसकर मैं ऊपर उठ गया। जैसा कि तुम जानते हो, पहाड़ों और घाटियों की खाली जगहों पर हवा का झुकाव गरम होकर ऊपर की ओर होता है। पक्षी इस हवा का सहारा लेकर ऊपर उड़ान भरते हैं। अब मैंने तीन बार कलाबाजी की और जब नीचे देखा तो पाया कि छोटा बाज़ पानी में डूबा हुआ है। वह हवा के प्रवाह तक नहीं पहुंच पाया था। काफी डुबकियां मारने के बाद बड़ी मुश्किल से वह किनारे तक पहुंचा और वहां शर्म के मारे पत्तियों के ढेर में जा छुपा। उसी क्षण अबाबील अपने छुपने के स्थान से बाहर आए और दक्षिण की ओर उड़ गए।

अगले दिन हम जंगली बतखों से मिले। उनका गला मेरे गले की तरह रंगीन था वैसे वे बर्फ जैसे सफेद थे। वह बहती धारा वाली बतखें थीं, जिनकी आदत मछली पकड़ने के लिए पहाड़ी झरनों में तैरते हुए आने की होती है। जब वे दूर पहुंच जाते हैं तो पानी से बाहर निकलकर उड़ते हुए वापस वहीं पहुंच जाते, जहां से शुरुआत की होती है। इस तरह वे

आने-जाने में अपना दिन व्यतीत करते हैं। उनकी चोंच हंसों की चोंच से अधिक चपटी होती है और उसके अंदर गड्ढा होता है, क्योंकि एक बार मछली पकड़ में आने के बाद इनकी चोंच से खिसक नहीं पाती। वे घोंघे खाने की चिंता नहीं करते क्योंकि शायद झील में मछलियां बहुत तादाद में होती हैं। अबाबीलों को यह स्थान पसंद नहीं था क्योंकि यहां बतखें हवा में लगातार पंख फड़फड़ाती थीं जिससे मक्खी-मच्छर पानी की सतह से उड़ जाते थे। फिर भी उन्हें बतखों से मिलकर खुशी थी जो पहाड़ी जलधाराओं पर रहते हैं और उन्हें पसंद करते हैं और झीलों के शांत जल की कभी परवाह नहीं करते।

उन इलाकों में व्याप्त रात में शिकार करने वाले उल्लुओं और अन्य हत्यारों के बारे में इन बतखों ने ही हमको सचेत किया था। इसलिए हम सब सावधानीपूर्वक ऐसी छोटी संकरी जगहों पर छिप गए जहां उल्लुओं का पहुंचना मुश्किल था। अबाबीलों को पेड़ों में ऐसे छोटे सूराख आसानी से मिल गए थे लेकिन मैंने जोखिम उठाते हुए पेड़ की डाल पर रहने का निश्चय किया। जल्दी ही रात होने लगी। अब अंधेरा इतना घना हो गया कि मेरी आंखें कुछ भी नहीं देख पा रही थीं। जैसे काले कपड़े की परत पर परत पड़ी हो वैसे ही अंधकार के बीच अंधकार बढ़ता गया। मैंने अपने इष्ट देवताओं का ध्यान किया और सोने की कोशिश करने लगा। लेकिन आसपास से आती हुई उल्लुओं की घू-घू की आवाजों में भला कौन सो सकता था। रात-भर के लिए मुझे दहशत होने लगी। एक घंटा भी बिना किसी पक्षी के दर्द से कराहने के नहीं गुजरा था। उल्लू भी अपनी जीत पर घुघुआते थे।

अब एक तेलियर पक्षी की, फिर एक बुलबुल की मरणांतक चीख और फिर उल्लू की पकड़ से उनकी मृत्यु। हालांकि मेरी आंखें बंद थीं लेकिन मेरे कान इन होने वाले हत्याकांडों को समझ रहे थे। एक कौवे की चीख निकली, उसके बाद दूसरे की, फिर एक और की चीख निकली। कौवे का लगभग एक झुंड आतंकित होकर उड़ा और पेड़ों से टकराकर चकनाचूर हो गया। लेकिन उल्लुओं की चोंच और पंजों से की गई चीर-फाड़ से मौत के बजाय इस तरह की मौत बेहतर थी। तुरंत पूरी घबराहट में, मैंने हवा में

नेवले की गंध पाई और मुझे लगा, अब मेरी मौत नजदीक है। उससे मैं भयभीत हो गया, देखने के लिए मैंने आंखें खोलीं। सभी चीजों पर पीली-सी रोशनी चमक रही थी। वहां मेरे सामने लगभग छह फीट की दूरी पर नेवला था। मैंने ऊपर उड़ान भरी, हालांकि उससे उल्लुओं द्वारा मारा जाने का खतरा बढ़ गया था। और निश्चय ही एक उल्लू चीखता और घू-घू करता मेरी ओर बढ़ा। दो और उल्लू उसके साथ हो लिए। मैंने उनके पंखों की फड़फड़ाहट सुनी, और फड़फड़ाहट की आवाज की किस्म से मुझे पता चला कि हम पानी के ऊपर उड़ रहे थे, क्योंकि पंखों की मामूली-सी आवाज की प्रतिध्वनि पानी से आ रही थी। मैं किसी भी दिशा में दूर तक नहीं उड़ सकता था, क्योंकि मैं एक समय में छह फीट से अधिक नहीं देख पा रहा था, अतः मैं हवा में इंतजार करने लगा और नदी में झूलती डालियों के ऊपर से आने वाले हवा के झोंके को टोहने लगा। अफसोस कि उल्लू अब तक मेरे नजदीक आ चुके थे। मैंने तुरंत नीचे की ओर कलाबाजी की और फिर गोलाई में चक्कर लगाने लगा। उल्लुओं ने पीछा करना नहीं छोड़ा। मैं और ऊपर की ओर उड़ा। अब मेरे पंखों से चांदनी जैसा सफेद पानी गिरने लगा। मुझे थोड़ा अधिक स्पष्ट दिखाई देने लगा और उससे मुझमें साहस वापस आया। लेकिन मेरे दुश्मनों ने हिम्मत नहीं हारी। वे भी ऊपर की ओर उड़े, उनकी आंखों पर अधिक प्रकाश पड़ने लगा जिससे उनकी आंखें चुंधियाने लगीं हालांकि उन्हें पूरी तरह दिखना बंद नहीं हुआ। अचानक दो उल्लू मेरे ऊपर टूट पड़े, मैं तुरंत ऊपर की ओर उड़ गया। उल्लुओं का निशाना चूक गया, वे एक-दूसरे से जा टकराए। दोनों के पंजे आपस में उलझ गए, विवश होकर हवा में पंख फड़फड़ाने लगे और भूतों की तरह चीत्कार करते हुए नदी किनारे सरकंडों में जा गिरे।

जब मैंने ध्यानपूर्वक इधर-उधर देखा तो मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं दिन की ऊषा की ओर उड़ रहा था, न कि रात्रि के चंद्रमा की ओर। मैं पहले भयभीत होने के कारण सचमुच अच्छी तरह देख नहीं पाया था। अब आसपास उल्लू नहीं थे, चमकती धूप से बचने के लिए वे छुपने के स्थान खोजने लगे थे। हालांकि मैं सुरक्षित महसूस कर रहा था, फिर भी मैं बड़े-बड़े वृक्षों की घनी छाया से दूर रहा, क्योंकि वहां इस समय भी कोई उल्लू छुपा

हो सकता था। मैं एक वृक्ष की चोटी पर पतली-सी डाली पर बैठ गया, जहां सूरज की पहली किरण पड़ रही थी और इसे नटराज की छतरी के जैसा गौरव प्रदान कर रही थी। धीरे-धीरे प्रकाश नीचे फैलता गया और प्रकाश का तेज फैलाव नेवले की आंखों की तरह नीचे झिलमिलाने लगा।

तभी मैंने नदी के किनारे एक भयंकर दृश्य देखा। दो बड़े कौवे, कोयले से भी ज्यादा काले, एक पलक झपकाते असहाय उल्लू को चोंच मार-मार कर कौंच रहे थे, जो सरकंडे में फंसा हुआ था। अब क्योंकि सूरज पूरी तरह निकल आया था इसलिए वह अपनी आंखें नहीं खोल पा रहा था। निस्संदेह, रात्रि में कौवों का हत्याकांड काफी बड़ा था और अब बदला लेने की बारी कौवों की थी, लेकिन फिर भी मुझे उन दोनों कौवों द्वारा सरकंडों में फंसे उल्लू को मारना सहन नहीं हो पा रहा था। इसलिए इन हत्यारों से दूर, मैं अपने मित्र अबाबीलों की खोज में निकल पड़ा। मैंने उन्हें आपबीती बताई और अबाबीलों ने मुझे बताया कि उन्होंने भी दर्द भरी चीखें सुनी थीं और वे रात भर सो नहीं पाए थे। श्रीमान अबाबील ने मुझसे पूछा कि बाहर सब कुछ सुरक्षित है तो मैंने कहा, सब ठीक-ठाक है। जब हम बाहर आए तो हमने बेचारे उल्लू को सरकंडों के बीच मरा हुआ पाया।

कहने में अजीब लगता है कि उस दिन की सुबह हमने जलधारा पर बतखों को नहीं देखा। स्पष्ट रूप से लगता था कि सुबह बहुत जल्दी वे दक्षिण दिशा की ओर उड़ गए थे, फिर हमने भी वैसा ही करने का निश्चय किया। जो पक्षी हमारे रास्ते पर जा रहे थे, हमने उन पक्षियों के साथ नहीं उड़ने की योजना बनाई, क्योंकि प्रवास के मौसम में जहां-जहां कबूतर, तीतर या अन्य पक्षियों का झुंड जाता है, उनके पीछे उनके दुश्मन जैसे उल्लू, बाज़ और गरुड़ चले आते हैं। जैसे हम पहले एक भयंकर दृश्य देख चुके थे वैसे खतरे से बचने के उद्देश्य से हम पूर्व की ओर उड़े, और दिन-भर पूर्व दिशा में उड़ने के बाद हम सिक्किम के एक गांव में ठहरे। अगले दिन हम दक्षिण दिशा में आधा दिन उड़े और फिर पूर्व की ओर। इस तरह घूम-फिर कर यात्रा करने में अधिक समय लगा लेकिन इससे हम खतरों से बचे रहे। एक बार हम तूफान में फंस गए थे और झीलों वाले देश में पहुंचा दिए गए थे तो वहां मैंने अजीब नजारा देखा। मैं एक वृक्ष की चोटी पर बैठा था तभी मैंने

अपने नीचे बहुत सारी पालतू बतखें मुंह में मछली दबाए पानी में तैरती हुई देखीं। लेकिन उनमें से कोई भी उन्हें निगल नहीं रही थी। मैंने पहले कभी इस तरह बतखों को मछली खाने के लालच में रुकावट नहीं देखी थी, इसलिए मैंने अबाबीलों को यह नजारा दिखाने के लिए बुलाया। वे कई वृक्षों की छालों से चिपके थे। उन्होंने बतखों को देखा और मुश्किल से अपनी आंखों पर विश्वास कर पाए। बतखों के साथ यह मामला क्या था? शीघ्र ही एक नाव आती दिखाई दी जो दो चपटे और पीले चेहरे वाले आदमियों द्वारा चप्पू से ठेल के लाई जा रही थी। उन्हें देखकर बतखें यथाशक्ति जल्दी चलकर नाव के पास पहुंचीं, ऊपर उछलीं और बड़ी-सी टोकरी में मछलियां डाल दीं और नीचे कूदकर और मछलियां पकड़ने चल पड़ीं। यह सिलसिला कम से कम दो घंटे तक चलता रहा। क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं? तिब्बती-बर्मी लोग स्पष्टतया मछली पकड़ने के लिए जाल का प्रयोग कभी नहीं करते। वे बतखों की गरदन में कसकर रस्सी बांध देते हैं, लगभग गला घोंटने की सीमा तक, फिर उन्हें लाकर मछली पकड़ने के लिए पानी में छोड़ देते हैं। जो कुछ मछलियां उन्होंने पकड़ी, वे सब उन्होंने अपने स्वामी इंसानों को सौंप दीं। तथापि जब उनकी टोकरियां पूरी मछलियों से भर गईं तो उन्होंने बतखों की गरदन से रस्सी खोल दी, फिर वे झील में डुबकी मारकर मछलियां निगलने लगीं।

अब हम झीलों से दूर फसल वाले खेतों की खोज में थोड़ी देर उड़े। वहां नई कटी फसल पर भिनभिनाते कीड़ों पर अबाबील टूट पड़े और उन्हें निगलने लगे। मैं भी अन्न के दाने खाकर पूरी तरह तृप्त हुआ। जब मैं धान के खेत की बाड़ पर बैठा था तब मैंने किसी के कुछ तोड़ने की आवाज सुनी। आवाज कुछ ऐसे लगी जैसे कोई चिड़िया चेरी की गुठली चोंच से फोड़कर उसका गूदा निकाल रही हो (क्या यह अनोखी बात नहीं है कि छोटी-सी चिड़िया की चोंच में सरौते जैसी शक्ति होती है)। लेकिन जब मैं बाड़ के नीचे उतरकर घूमता हुआ उस जगह पहुंचा, जहां से आवाज आ रही थी, तो वहां मैंने एक अन्य चिड़िया देखीं जो हिमालयी बाम्कार थी। वह चेरी की गुठली नहीं तोड़ रही थी बल्कि अपनी चोंच से चलते हुए घोंघे पर प्रहार कर रही थी–टिक, टैक, टिक। वह बार-बार प्रहार करती रही जब तक

कि घोंघा अचेत होकर थम नहीं गया। बाम्कार चिड़िया ने अपना सिर उठाकर इधर-उधर देखा, पंजों पर अपना संतुलन बनाया, पंख खोले और जल्दी निशाना साधकर तीन बार और प्रहार किया, टैक, टैक, टैक। सीपी टूटकर खुल गई और लजीज घोंघा प्रकट हो गया। उसने अपनी चोंच में उसे उठाया जिससे थोड़ा खून टपक रहा था। साफ तौर पर चोंच के प्रहार से उसे क्षति पहुंची थी। घोंघे को अच्छी तरह पकड़कर, संतुलन बनाकर ऊपर उड़ा और एक पेड़ पर जाकर गायब हो गया, जहां उसका साथी भोजन करने के लिए उसका इंतजार कर रहा था।

सिक्किम के फसल वाले खेतों से गुजरती हुई हमारी शेष यात्रा घटना-विहीन रही। एकमात्र याद रखने वाली चीज थी जंगलों में मनुष्यों द्वारा मोरों को पकड़ना। ये पक्षी भोजन और गर्मी की तलाश में दक्षिण के गर्म दलदलों की तरफ आ जाते हैं–जब सांप और दूसरे जीव-जंतु, जिन्हें ये खाते हैं, उत्तर की सर्दी में अपने बिलों में छुप जाते हैं।

मोर और बाघ एक-दूसरे की सराहना करते हैं। मोर बाघ की चमड़ी को पसंद करते हैं और बाघ मोर के सुंदर पंखों को देखकर खुश होते हैं। कभी-कभी किसी जलाशय के पास बाघ पेड़ की टहनियों पर बैठे मोर के पंखों को निहारता खड़ा रहता है और मोर अपनी गरदन उठाकर बाघ की धारीदार चमड़ी देखकर आनंदित होता है। अब इस दृश्य में शाश्वत हमलावर इंसान का प्रवेश होता है। उदाहरण के लिए, एक दिन एक आदमी आता है बाघ की चमड़ी के समान कपड़े का टुकड़ा पेंट करके, जिसे देखकर कोई भी पक्षी उसे देखकर यह नहीं कह सकता था कि वह धारीदार बाघ नहीं है। फिर उसने पास के पेड़ की टहनी पर रस्सी का फंदा बांध दिया और जाकर छुप गया। मैं उस पेंट किए हुए कपड़े के टुकड़े से आती गंध से बता सकता था कि यह बाघ नहीं है, लेकिन मोरों में थोड़ी-सी भी सूंघने की समझ नहीं होती। उनकी आंखें धोखा खा जाती हैं। थोड़ी देर में मोरों का एक जोड़ा आया और पेड़ की चोटी से उस नकली बाघ को निहारने लगा और नीचे से नीची डाली पर आ गए। उन्हें विश्वास था कि बाघ सोया हुआ है। उस गलतफहमी की वजह से उनकी हिम्मत बढ़ गई और बहुत नजदीक आकर फंदे के पास डाली पर बैठ गए। उन्हें उस फंदे में फंसने में देर नहीं

लगी लेकिन एक ही फंदे में दोनों किस तरह फंसे, मैं यह समझ नहीं सका। जैसे ही वे पकड़ में आए, उन्होंने विवशता में कराहना शुरू कर दिया। इतने में ही बहेलिया प्रकट हो गया और उसने एक और बाजीगरी दिखाई। उसने कैनवास की दो बड़ी टोपियां दोनों मोरों के सिर पर कसकर बांधी जिससे बेचारे मोरों की आंख छुप गई। एक बार आंखों के आगे अंधेरा होने पर पक्षी अधिक प्रतिरोध नहीं करता। अब उसने उनके पैर बांध दिए ताकि वे चल न सकें। फिर उसने एक बांस के लट्ठे के प्रत्येक सिरे पर दोनों को बांध दिया। उसने बांस के लट्ठे को बीच में से पकड़कर कंधे पर लटकाया और चलता बना। मोरों के लंबे पंख उसके आगे और पीछे इस तरह झिलमिला रहे थे जैसे झरने का इंद्रधनुष होता है।

वहां मेरी यात्रा संपूर्ण हुई। मैंने अगले दिन अबाबीलों से विदा ली। वे दक्षिण दिशा में और आगे चले गए और मैं घर आने पर खुश था, कुछ अधिक बुद्धिमान और गंभीर पक्षी बनकर।

चित्र-ग्रीव ने याचना की, "अब तुम मुझे यह बताओ—पशु-पक्षियों में इतनी मारकाट और एक-दूसरे को कष्ट देने की प्रवृत्ति क्यों है? मेरे विचार से इंसान एक-दूसरे को आहत नहीं करते। क्या तुम करते हो? लेकिन पशु और पक्षी करते हैं। इस सबसे मैं बहुत दुखी होता हूं।"

दूसरा भाग

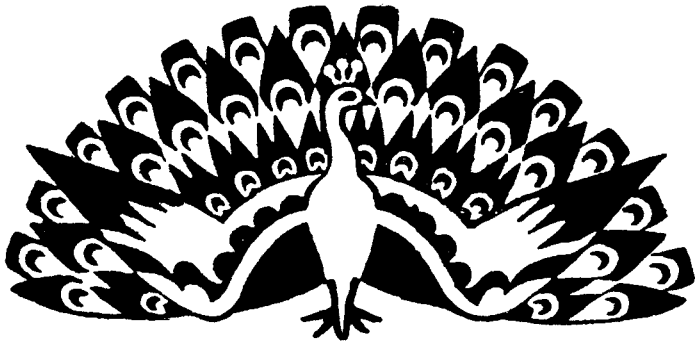

युद्ध के लिए चित्र-ग्रीव का प्रशिक्षण

जब हम शहर में वापस आए तो यूरोप में किसी जगह होने वाले युद्ध की अफवाहें फैली हुई थीं। क्योंकि अब सर्दी आ चुकी थी, मैंने चित्र-ग्रीव को ऐसा प्रशिक्षण देना चाहा जो ब्रिटिश युद्ध विभाग में संदेशवाहक होने के लिए आवश्यक था। क्योंकि वह उत्तर-पूर्वी हिमालय की जलवायु में रहने का अभ्यस्त हो चुका था अतः वह किसी भी यूरोपीय देश की सेना के लिए महत्त्वपूर्ण संदेशवाहक हो सकता था। टेलीग्राफ और रेडियो होने के बावजूद अब भी कोई सेना संदेशवाहक कबूतरों की सहायता से छुटकारा नहीं पा सकती। जैसे-जैसे यह कहानी आगे बढ़ेगी, यह सब आपको स्वतः स्पष्ट होता जाएगा।

युद्ध-कार्य के संदेशवाहक के प्रशिक्षण की योजना मैंने स्वयं बनाई, जिससे घोंड भी सहमत था। संयोगवश, यह वृद्ध महाशय हमारे साथ-साथ शहर आए थे। वह दो दिन हमारे घर रहे और फिर शहर छोड़कर जाने का निश्चय कर बैठे यह कहते हुए, "शहर मेरी बर्दाश्त के बाहर है। मुझे कभी कोई शहर पसंद नहीं आया, लेकिन यह शहर तो मुझे अपनी बिजली की ट्राम गाड़ियों और अन्य स्वचालित मोटर गाड़ियों से भयभीत कर देता है। यदि इस शहर की धूल को मैं अपने पैरों से नहीं झाड़ता हूं तो मैं एक कायर से कम नहीं होऊंगा।

जंगल में बाघ से मुझे डर नहीं लगता, लेकिन यही बात मैं मोटर

गाड़ियों के बारे में नहीं कह सकता। आधुनिक शहर के एक चौराहे पर एक मिनट में कहीं अधिक ज्यादा जानों को खतरा होता है, बनिस्बत अत्यंत खतरनाक जंगल में एक दिन में होने वाले खतरे के। अलविदा, मैं जाता हूं, जहां जंगलों में शांति होती है, हवा दुर्गंध और धूल से मुक्त होती है और आकाश की नीलिमा आढ़े-तिरछे तारों और खंभों से नहीं भेदी जाती। फैक्टरियों की सीटियों के बजाय मैं चिड़ियों का मधुर गान सुनूंगा और चोरों और बंदूकचियों की जगह निर्दोष बाघों और चीतों को आमने-सामने देखूंगा, अलविदा!''

लेकिन जाने से पहले उसने लगभग चालीस संदेशवाहक और कुछ गिरहबाज कबूतर खरीदने में मेरी सहायता की। इन दो किस्मों के कबूतरों को वरीयता देने का कारण आप मुझसे जानना चाहेंगे? मुझे इन दो किस्मों– संदेशवाहक और गिरहबाज कबूतरों से कोई खास प्रेम नहीं है लेकिन यह बात भी सच है कि अर्धवृत्ताकर पूंछ वाले तथा पाउटर किस्म के कबूतर उपयोगी होने के बजाय अधिक शोभा बढ़ाने वाले होते हैं। इन किस्मों के कबूतर हमारे घर में थे लेकिन उन्हें संदेशवाहक और घुमंतू कबूतर के साथ रखना अत्यंत कठिन सिद्ध हुआ, इसलिए अंत में मैंने अपनी सारी गुण-ग्राहकता इन्हीं शुद्ध रंगीन कबूतरों को प्रदान कर दी।

भारत में एक अजीब रिवाज है, जो मुझे बिलकुल पंसद नहीं है। यदि आप कितनी भी भारी-भरकम कीमत पर संदेशवाहक कबूतर बेचते हैं और वह वापस उड़कर आपके पास आ जाता है तो वह फिर से आपकी संपत्ति बन जाता है और चाहे कीमत कितनी रही हो, आप उसे लौटाते नहीं हैं। कबूतरबाजों की इस स्वीकृत-प्रथा को जानते हुए, मैंने अपने खरीदे हुए पालतुओं को सबसे पहले स्वयं को प्यार करना सिखाया। क्योंकि मैंने उनका मूल्य चुकाया था, इसलिए मैं नहीं चाहता था कि वे वापस अपने पहले मालिकों के पास लौट जाएं। मैंने भरपूर कोशिश की कि वे अपने नये घर के प्रति वफादार रहें। लेकिन व्यावहारिकता का नाम ही जीवन है। मैंने अत्यंत आवश्यक कदम उठाए। पहले कुछ सप्ताहों तक मुझे उनके पंख बांधने पड़े ताकि वे पूरी तरह छत की सीमाओं के अंदर ही रहें। कबूतर उड़ने न पाए इसलिए उसके पंख बांधने की कला अत्यंत नाजुक होती है।

आप एक धागा लेते हैं और एक सिरा एक पंख के ऊपर ले जाते हैं और दूसरा पंख के नीचे, जहां गांठ लगानी होती है। इस तरह पूरी तरह से पंख लपेट दिया जाता है। यही प्रक्रिया दूसरे पंख के साथ की जाती है, फिर धागे के दोनों सिरे आपस में बांध दिए जाते हैं। यह प्रक्रिया बिलकुल कपड़े रफू करने जैसी है। इस तरह से बांधने का ढंग बिलकुल पीड़ारहित होता है, हालांकि इस बंधन से कबूतर उड़ नहीं पाता, परंतु वह पंख खोल सकता है और उन्हें फड़फड़ा सकता है। वह उन्हें फैला सकता है और चोंच से उनकी मालिश भी कर सकता है। इसके बाद मैं अपने नये कबूतर को छत के विभिन्न कोनों पर रख दिया करता था ताकि वे स्थिर होकर बैठ सकें और अपनी आंखों से अपने आस-पड़ोस के रंग-ढंग देख सकें। इस प्रक्रिया के लिए कम-से-कम पंद्रह दिन होने चाहिए।

यहां मैं चित्र-ग्रीव की चालाकी के बारे में बताना चाहता हूं, जब उक्त तरीके से उसके पंख बांधे गए थे। मैंने नवंबर की शुरुआत में उसे यह देखने के लिए बेच दिया था कि किस तरह धागे की जंजीर से पंख खोल दिए जाने पर वह मेरे पास लौटेगा।

जी हां, चित्र-ग्रीव को बेचे जाने के दो दिन बाद उसका नया मालिक मेरे पास आया और बोला, ''चित्र-ग्रीव भाग गया है।''

''कैसे?'' मैंने पूछा।

''मैं नहीं जानता, किंतु मैं उसे अपने घर में नहीं ढूंढ़ पाया।''

''क्या तुमने उसके पंख बांधे थे? क्या वह उड़ सकता था?'' मैंने पूछा। ''पंख तो बांधे थे।'' उसका उत्तर था। यह सुनकर मैं अंदर तक दहल गया। मैंने कहा, ''ओ, ऊंट के भाई और गधे के भतीजे, यहां आने के बजाय तुम्हें उसको अपने अड़ोस-पड़ोस में ढूंढ़ना चाहिए था। तुम्हारी समझ में नहीं आता कि उसने उड़ने की कोशिश की होगी, लेकिन क्योंकि उसके पंख बंधे थे, वह तुम्हारी छत से नीचे लुढ़क गया होगा? और अब तक किसी बिल्ली ने उसे मारकर भकोस लिया होगा। ओह, तुमने कबूतर की हत्या करवा डाली। तुमने मानवता से एक श्रेष्ठ संदेशवाहक लूट लिया। तुमने कबूतरपने की गरिमा का कत्ल कर डाला।'' इस तरह मैंने उसकी भर्त्सना की।

मेरे शब्दों से बेचारा इतना अधिक डर गया कि उसने मुझसे मिन्नत की कि मैं उसके साथ आकर चित्र-ग्रीव की खोज करवाऊं। मेरा पहला विचार था–बेचारे कबूतर को बिल्ली से बचाना। दोपहर बाद का सारा समय हमने व्यर्थ ही गंवा दिया। मैंने बारह घंटे में आसपास की सारी गंदी गलियों को छान मारा, इस आशा में कि वह किसी आले में किसी खुजैली बिल्ली के सामने पड़ा मिल जाए। अपनी बाद की सारी उम्र में मैंने इतनी मेहनत कभी नहीं की। उस रात मैं काफी देर से घर पहुंचा जिसके लिए मुझे अच्छी-खासी डांट पड़ी और मैं टूटा दिल लेकर सोने के लिए चला गया।

मेरी मां, जो मेरी मनःस्थिति समझ गई थी, वह नहीं चाहती थी कि मैं आहत और दुखी मन से निद्रा के संसार में प्रवेश करूं। उसने कहा, "बेटा, तुम्हारा कबूतर सुरक्षित है, तुम शांत होकर सो जाओ।"

"किस तरह, मां?"

उसने उत्तर दिया, "यदि तुम शांत हो तो तुम्हारे प्रशांत विचार तुम्हारी सहायता करते हैं। यदि तुम शांतिपूर्ण हो तो तुम्हारा शांत भाव उसे भी शांति प्रदान करेगा। और यदि वह शांत होगा तो उसका दिमाग अच्छी तरह काम करेगा। और मेरे प्रिय बेटे, तुम जानते हो, चित्र-ग्रीव का दिमाग कितना तेज है। यदि वह गंभीरता से काम करेगा तो सभी बाधाओं पर काबू पाकर सुरक्षित घर पहुंच जाएगा। अब हम शांत होकर प्रभु की असीम अनुकंपा के लिए प्रार्थना करते हैं।" इसलिए हम रात्रि की छाई नीवरता में आधे घंटे बैठे रहे यह कहते हुए–'मैं शांत हूं, सभी जीव शांत हैं, शांति, शांति, शांति सभी के लिए। ओउम शांति, शांति, शांति।'

जैसे ही मैं सोने के लिए जाने लगा तो मां ने कहा, "अब तुम्हें बुरे सपने नहीं आएंगे। अब जबकि तुम्हारे अंदर ईश्वर की शांति और अनुकंपा जागृत हो गई है, तुम्हारी रात आनंद से व्यतीत होगी, शांति।"

निस्संदेह, वह रात लाभदायक सिद्ध हुई। क्योंकि सवेरे के लगभग ग्यारह बजे चित्र-ग्रीव आकाश में उड़ता नजर आया। वह काफी ऊंचाई पर था। उसने अपने पंख कैसे बंधनमुक्त किए, यह मुझे उसकी जुबानी बताना होगा। अब हम फिर से विचित्र व्याकरण और कल्पना के शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

हमारी छत पर आकर चित्र-ग्रीव ने कहना शुरू किया–"ओ, बहुत-सी भाषाओं के धनी, उस आदमी के घर मैं एक दिन से अधिक नहीं टिक पाया। उसने मुझे खाने के लिए घुन लगे अन्न के दाने दिए और बासी पानी पीने के लिए दिया। आखिरकार, मैं भी एक जीव हूं। मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया गया जैसे कि मैं कोई पत्थर या ठीकरा होऊं। इसके अलावा, उसने मेरे पंख दुर्गंधयुक्त मछली पकड़ने वाली रस्सी से बांधे थे। क्या मैं ऐसे इंसान के पास रह सकता था? कभी नहीं! इसलिए ज्यों ही वह अपने घर की सफेद छत पर मुझे रखकर नीचे गया तभी मैंने पंख फड़फड़ाए और उड़ा। अफसोस, मेरे पंख भारी थे और उड़ने में कष्ट हुआ। अतः मैं नजदीक की गली की एक दुकान की तिरपाल पर जा गिरा। वहां मैं सहायता के लिए इंतजार करता हुआ देखता रहा। मैंने अबाबीलों को पास से जाता देखा, मैंने उन्हें पुकारा, लेकिन वे मेरे दोस्त नहीं थे। मैंने एक जंगली कबूतर को देखा और उसे पुकारा लेकिन उसने भी मेरी परवाह नहीं की। उसी समय मैंने एक काली बिल्ली अपनी ओर आती देखी जैसे चार पांव पर चलती मौत हो। जैसे-जैसे वह नजदीक आती गई, उसकी पीली आंखें अंगारे-सी लाल होने लगीं। उसने सिकुड़कर छलांग मारने की तैयारी की। मैं भी उसके सिर के ऊपर से तिरपाल के पांच फीट ऊपर बनी कंगनी पर उछलकर जा बैठा, जहां अबाबील ने घोंसला बना रखा था। बिल्ली के ओझल होने तक मैं उसी स्थान पर चिपका रहा, हालांकि यह अत्यंत कठिनाई का काम था। मैंने फिर से छलांग लगाई। मुझसे चार-पांच फीट ऊपर छत थी। मैं वहीं बैठ गया। लेकिन मेरे पंखों में दर्द हो रहा था। दर्द कम करने की खातिर मैंने पंखों की जड़ों की मालिश की। एक के बाद एक पंख को मेरी चोंच ने दबाया और सहलाया और फिर कुछ फिसल गया। एक छोटे पंख को अत्यंत दुर्गंधयुक्त रस्सी की पकड़ से बाहर निकालने में मैं सफल हो गया था। दूसरे पंख को दबाते हुए मैं रगड़ता रहा और देखो, यह भी बंधनमुक्त हो गया। ओहो, क्या शानदार अनुभूति! तुरंत पूरा पंख खुल गया। उसी समय फिर से काली बिल्ली छत पर आ धमकी। लेकिन अब मैं लगभग दस फीट ऊपर उड़ने में समर्थ था और झट से ऊंची इमारत की कंगनी पर आराम

से जा बैठा। उसी जगह से मैंने उस घातक बिल्ली को देखा। वह सिकुड़ी और मछली पकड़ने वाली रस्सी पर कूदी, जो मैंने पंख से निकालकर फेंकी थी। उससे मुझे एक नई बात मालूम हुई, उस रस्सी से आती दुर्गंध उसे खींच लाई थी, मैं उसका निशाना नहीं था, फौरन मैंने दूसरे पंख पर बंधे धागे को काटना और खींचना शुरू किया। जब तक मैं आधे पंख को ही धागे से बंधनमुक्त कर पाया, तब तक रात होने लगी। और जब मैंने उस दुर्गंधयुक्त अंतिम धागे को पंख से निकालकर फेंका तब तक रात हो चुकी थी और मुझे वहीं बैठकर घर आने के लिए सुबह का इंतजार करना पड़ा क्योंकि संध्या के धुंधलके में उल्लू उड़ते हैं और बाद में बाज़ों का प्रकोप होता है और मैं हवा में उड़ता हुआ सुरक्षित रास्ता चाहता था। अब मैं घर आ गया। मैं भूखा और प्यासा था।

सबसे पहला काम मैं अपने नये कबूतरों को खाना और ताजा पानी देने का करता था। जिस पानी में वे नहाते थे, उस पानी को उन्हें पीने नहीं देता था। क्योंकि चित्र-ग्रीव के पंखों से मछली की दुर्गंध आ रही थी, इसलिए मैंने उसे अन्य कबूतरों से अलग नहाने का स्थान दिया। चित्र-ग्रीव को अच्छे समाज में रहने लायक बनाने में तीन दिन लगे और तीन अच्छी तरह स्नान कराने पड़े। यों ही आपको बताऊं कि मेरे पिताजी ने चित्र-ग्रीव को खरीदने वाले उस आदमी को उसकी रकम वापस करा दी जिसने चित्र-ग्रीव के साथ खेदजनक व्यवहार किया था। आपको सच बताऊं, उस समय ऐसा करने की मेरी कतई इच्छा नहीं थी। लेकिन अब मैं महसूस करता हूं कि माता-पिता की आज्ञा मानकर मैंने ठीक किया। एक पखवाड़े के बाद अपने नये कबूतरों के पंख खोलने से पहले मुझे प्यार करने के लिए मैंने उन्हें रिश्वत देनी शुरू की। मैं हर रोज सुबह कुछ ज्वार और मूंगफली के दाने घी में डाल देता था। सारा दिन घी में भिगोने के बाद हर एक कबूतर को एक दर्जन दाने खाने को देता था। दो दिन में ही वे इन स्वादिष्ट दानों के खाने के इतने शौकीन हो गए कि रोज दोपहर बाद पांच बजे से पहले इन घी में भीगे दानों को खाने के लिए मुझसे मांगने की उनकी आदत बन गई। अगले तीन दिनों तक मैं उनके पंख खोलता था, लेकिन बड़ी चालाकी से केवल पांच बजे से पंद्रह मिनट पहले। जैसे ही वे आजाद होने

का अनुभव करते, झट से ऊपर उड़ जाते। लेकिन लीजिए, अपनी आजादी के पहले उल्लास के खत्म होते ही, घी से भीगे मूंगफली और ज्वार के दानों का भोजन करने के लिए छत पर फिर से उतर आते। बड़े खेद की बात है कि कबूतरों का विश्वास जीतने के लिए हमें उनका पेट भरना पड़ता है। लेकिन अफसोस, मैंने देखा है कि कुछ स्त्री-पुरुष इस मामले में कबूतरों से मिलते-जुलते होते हैं।

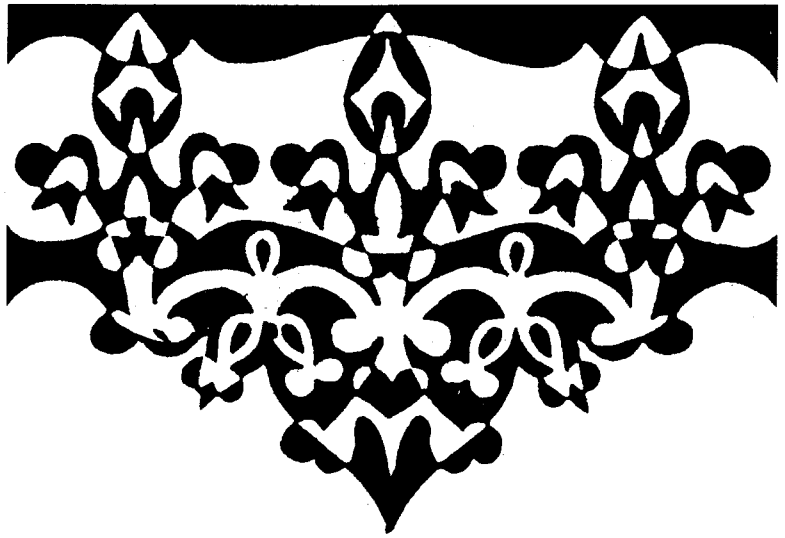

युद्ध-प्रशिक्षण (जारी)

नये कबूतरों ने दिन-प्रतिदिन दूर से दूर धीरे-धीरे उड़ना सीख लिया था। एक महीने बाद उन्हें पचास मील से अधिक दूरी पर ले जाया गया और उन्हें पिंजरों से बाहर छोड़ दिया गया। उनमें से दो कबूतरों को छोड़कर, जो अपने पहले मालिक के घर भाग गए थे, शेष सभी चित्र-ग्रीव के नेतृत्व में मेरे पास वापस आ गए थे।

निर्विवाद नेतृत्व के प्रश्न को सुलझाना आसान नहीं था। वास्तव में चित्र-ग्रीव और दो अन्य नर कबूतरों—हीरा और जाहोर में गंभीर लड़ाई होती थी। इनमें जाहोर पक्का काला गिरहबाज कबूतर था। उसके पंख तेंदुए के लोमचर्म के समान चमकते थे। वह दयालु था और विकराल नहीं था, फिर भी वह सारे झुंड का नेतृत्व चित्र-ग्रीव को मिले, यह मानने के लिए राजी नहीं था। आप जानते हैं, सामान्य तौर पर संदेशवाहक कबूतर कितने झगड़ालू और पूरा दिखावा करने वाले होते हैं। मेरी छत पर सभी नर संदेशवाहक अकड़ दिखाया करते थे। वे गुटर-गूं, गुटर-गूं करते हुए बातें करते थे मानो उनमें से प्रत्येक पूरे समूह का सम्राट हो। यदि चित्र-ग्रीव अपने आपको नेपोलियन समझता था तो सफेद संदेशवाहक हीरा, जो धूप-सा पूरा सफेद था, वह अपने आपको सिकंदर महान समझता था जबकि जाहोर (काला हीरा), हालांकि वह संदेशवाहक नहीं था, पर यह समझिए कि वह जूलियस सीजर और मार्शल फोक का मिला-जुला रूप था। इन तीनों के अतिरिक्त और भी घमंडी नर थे लेकिन वे इन तीनों में से किसी-न-किसी से लड़ाई में हराए जा चुके थे। अब इस प्रश्न का निपटारा आवश्यक था कि पूरे झुंड का एक-छत्र नेतृत्व किसे मिले?

एक दिन हीरा अपने पंख संवारता हुआ और श्रीमती जाहोर के सामने बकवास करता हुआ देखा गया, जो एक स्याह श्यामा सुंदरी थी और जिसकी आंखें रक्तप्रस्तर की तरह लाल थीं। यह मामला ज्यादा दूर तक नहीं फैला था, तभी न जाने कहां से जाहोर आ पहुंचा और हीरा पर टूट पड़ा। वह इतना गुस्से में था कि एक राक्षस की तरह लड़ने लगा। चोंच से चोंच, पंजों से पंजे और पंखों से पंख जूझने लगे। अन्य सभी कबूतर उस दायरे से भाग गए जहां ये दोनों एक-दूसरे को परास्त करने में व्यस्त थे। चित्र-ग्रीव उनके ऊपर शांत होकर खड़ा रहा जैसे टेनिस मैच का अम्पायर खड़ा होता है। अंत में, आधा दर्जन घात-प्रतिघात के बाद हीरा जीत गया। घमंड से अत्यंत फूला हुआ वह श्रीमती जाहोर के पास इतना कहने के लिए गया, "मैडम, तुम्हारा पति कायर है, देखो, मैं कितना मनोहर साथी हूं—बुक, बुकूम, बूम कूम!" उसने तिरस्कार भरी टेढ़ी नजर से उसे देखा और अपने पंख फड़फड़ाती अपने घर पति के पास चली गई। इससे हीरा हतोत्साहित दिखा और वह चिड़चिड़ा गया। फिर अचानक क्रोध के आवेश में पूरी ताकत लगाकर चित्र-ग्रीव पर टूट पड़ा। अनजाने पकड़े जाने से चित्र-ग्रीव उसके आवेश की पहली उग्रता की झपट में लगभग बेहोश हो गया। हीरा ने चोंच मारी और पंख से झापड़ मारे, इससे चित्र-ग्रीव खड़ा होने में भौचक्का रह गया, इसलिए चित्र-ग्रीव वहां से भाग खड़ा हुआ और उस उन्मत्त हीरा ने उसका पीछा किया। वे एक दायरे में दौड़े जैसे दो लट्टू घूमते हैं। मैं मुश्किल से देख पा रहा था कि कौन किसका पीछा कर रहा है। वे इतनी तेज रफ्तार से दौड़ रहे थे कि मैं यह नहीं देख पाया कि कब रुककर उन्होंने चोंच लड़ाना और एक-दूसरे को पंख मारना शुरू किया। उनके पंखों की टकराहट से विस्फोटक आवाज निकल रही थी जिसके अनिष्टसूचक कोलाहल से सारा वातावरण भर गया था। अब हर तरफ पंख बिखरने लगे थे। यकायक चोंच से चोंच और पंजों से पंजे लड़ाते हुए जमीन पर लोटपोट होने लगे, मानो दोनों एक होकर आक्रोश के अवतार हों। इस

तरह लड़ते हुए किसी निर्णय पर न पहुंचते देखकर, चित्र-ग्रीव अपने प्रतिद्वंद्वी की पकड़ से अपने आपको छुड़ाकर ऊपर हवा में उड़ गया। हीरा ने जोर से पंख फड़फड़ाते हुए तेजी से उसका पीछा किया। जमीन से लगभग तीन फीट ऊपर चित्र-ग्रीव ने अपने पंजों से हीरा की श्वास नली को अपने चंगुल में ले लिया और बड़ी कड़ाई से जोर-जोर से दबोचने लगा। उसी समय पंखों की चपेटों से भयंकर बौछार करने लगा और उस फौलादी कुटाई से उसके प्रतिद्वंद्वी के सफेद पंख उखड़कर बरसने लगे। गिरते हुए सफेद पंखों की आंधी में छुपे वे दोनों जमीन पर आ गिरे और पागल सांपों की उग्रता की तरह एक-दूसरे को चोंच मारने लगे। अंत में हीरा हारकर टूटे सफेद फूल की तरह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसकी एक टांग में मोच आ गई थी। चित्र-ग्रीव का हाल यह था कि उसकी गरदन और गले पर शायद ही कोई पंख बचा था। लेकिन वह खुश था कि संघर्ष का निपटारा निर्णायक रहा था। वह यह अच्छी तरह समझता था कि यदि हीरा ने जाहोर से लड़ते हुए अपनी आधी शक्ति खर्च न की होती तो चित्र-ग्रीव लड़ाई जीत नहीं पाता। तथापि अंत भला तो सब भला। मैंने हीरा की मरहम-पट्टी की तथा सभी कुछ किया जो उसकी टांग के लिए जरूरी था। इसके आधे घंटे बाद सभी कबूतर दिन का अंतिम खाना खा रहे थे, उस बात से बिलकुल बेखबर, जो हाल में घटित हुआ था। उनके रक्त में किसी तरह की रूठने और ईर्ष्या की भावना नहीं थी। इसमें कोई शक नहीं कि ये अच्छे खानदान से थे। अच्छी परवरिश छोटे-से-छोटे प्राणियों में भी प्रचलित थी और कहने की आवश्यकता नहीं कि हीरा ने अपनी हार को एक भले मानुस की तरह स्वीकार किया।

अब तक जनवरी आ चुकी थी, ठंडे मौसम और साफ आकाश के साथ कबूतरों के पुरस्कार की प्रतियोगिता आरंभ हुई। हर एक आदमी के झुंड की तीन विशेषताओं के आधार पर परीक्षा ली गई जैसे—टीम-सहयोग, लंबी दूरी की उड़ान और खतरों के बीच उड़ान। हम पहली विशेषता पर पहला पुरस्कार जीते, लेकिन मुझे बताते हुए खेद है कि अन्य दो प्रतियोगिताओं में मेरे कबूतर भाग नहीं ले पाए। इसका कारण एक दुःखद घटना थी जिसके बारे में उचित जगह पर आप जान पाएंगे। टीम-सहयोग प्रतियोगिता का

स्वरूप इस प्रकार है—कबूतरों के विभिन्न झुंड अपने मालिकों की छतों से ऊपर उड़ते हैं। जब वे अपने-अपने मालिकों की सीटी या अन्य ध्वनि, जिसे वे पहचानते हैं, उसकी पहुंच से दूर चले जाते हैं तो अलग-अलग झुंड एक साथ घुल-मिल जाते हैं। फिर वे स्वेच्छा से जिस कबूतर को ठीक समझते हैं, उसकी अगुवाई में उड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह सब ऊपर हवा में होता है, जहां कबूतरों की समझ और सहज-वृत्ति प्रबल होती है। और जो कबूतर आगे उड़ता है और जिसका नेतृत्व सभी मान लेते हैं, उसे यह सम्मान क्यों और किस कारण दिया जा रहा है, यह महसूस किए बिना वह नेतृत्व संभालता है।

तापमान पैंतालीस डिग्री तक गिर गया था। भारत के हमारे प्रदेश में सुहावनी ठंडी सुबह थी, वास्तव में सबसे ठंडा दिन था। जैसा अकसर सर्दियों में होता है, आकाश बिना बादलों के दूरस्थ एकदम साफ, अमूर्त नीलम जैसा था। शहर के मकान गुलाबी, नीले, सफेद और पीले ऐसे लगते थे मानो दानवों की फौज ऊषा की रंग-बिरंगी खाई से बाहर निकल रही हो। बहुत दूर, क्षितिज मटमैली और बैगनी धुंध से सुलग रहा था। स्त्री-पुरुष अपनी अंबर और फीरोजी पोशाकों में ईश्वर से सुबह की प्रार्थना करने के बाद अपनी छतों पर आकर सूर्य के सामने भुजाएं उठाकर नमस्कार कर रहे थे। शहर का शोर और गंदी नालियों से आती दुर्गंध सब तरफ फैली थी। गरुड़ों और कौवों ने अपनी आवाजों से वातावरण भर रखा था। इस शोरगुल और चिल्लाहट के बावजूद कोई वंशीवादक का संगीत सुन सकता था। उसी क्षण मुकाबला शुरू होने का संकेत देती सीटी बजी, और हर एक कबूतरबाज ने अपनी छत से सफेद झंडा फहराया। तुरंत, न मालूम कहां से कबूतरों के अनगिनत झुंड आकाश में उठे। झुंड के बाद झुंड, रंगों के ऊपर रंग, बिखरते फड़फड़ाते पंख उन्हें शहर के ऊपर ले आए। दसियों हजार संदेशवाहक और गिरहबाज कबूतरों के गरजते रेले को देखकर कौवे और लाल और भूरे रंग के गरुड़ आकाश से पहले भाग गए। शीघ्र ही सारे झुंड प्रत्येक पंखे की शक्ल में उड़ता हुआ आकाश में चक्कर लगाने लगा जैसे बहुत सारे बादल हवा के बड़े-से बवंडर में फंस गए हों। हालांकि प्रतिक्षण वे ऊपर उठते गए, फिर भी बहुत देर तक झुंड का प्रत्येक मालिक अपने-अपने

कबूतरों को पहचानता रहा, यहां तक कि जब अंत में विभिन्न झुंड आपस में घुल-मिल गए और पंखों की एक पुख्ता दीवार की भांति उड़े, तब भी उनके उड़ने की चाल से मैं चित्र-ग्रीव, हीरा, जाहोर और अन्य आधा दर्जन अपने कबूतरों को पहचान सकता था। हर पक्षी के व्यक्तिगत लक्षण होते हैं जिनसे उड़ते समय उसकी पहचान हो जाती है। जब कोई मालिक अपने किसी कबूतर को सावधान करना चाहता था तो वह संकेत देने के लिए रुक-रुककर जोर से सीटी मारता था। यदि वह आवाज पहुंच के अंदर हो तो पक्षी सावधान हो जाता था।

अंत में पूरा झुंड इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया कि किसी भी कबूतरबाज की तुरही के विस्फोट की ध्वनि भी उस तक नहीं पहुंच सकती थी। अब उन्होंने हवा में चक्कर लगाना बंद कर दिया और सपाट घूमना शुरू किया। नेतृत्व की स्पर्धा आरंभ हो गई। जैसे ही उन्होंने आकाश में एक दिशा से दूसरी दिशा की चाल चली, हम मालिक लोग लगातार टकटकी लगाए उस कबूतर की लक्षणों से पहचान करने लगे जिसे कबूतरों ने अपनी उड़ान की अगुवाई करने में भरोसा किया था। कुछ क्षणों के लिए लगा जैसे मेरा जाहोर अगुवाई करेगा। लेकिन मुश्किल से वह झुंड के सिरे पर पहुंचा ही था कि सभी दाईं ओर मुड़ गए। इससे पंक्ति व्यवस्था गड़बड़ा गई और रेसकोर्स के घोड़ों की तरह हर किस्म के अनजाने कबूतर आगे बढ़ने लगे लेकिन थोड़ी देर में ही बाकी झुंड ने उन्हें पीछे ढकेल दिया। ऐसा इतनी बार हुआ कि हम लोगों को स्पर्धा से ऊब होने लगी। ऐसा दिखने लगा जैसे कोई मामूली कबूतर इस लालायित नेतृत्व का पुरस्कार जीत लेगा।

अब अचानक घरों की छतों से चिल्लाने की आवाज उठी : 'चित्र-ग्रीव, चित्र-ग्रीव, चित्र-ग्रीव।' हां, बहुत सारे कबूतरबाज यही नाम जोर-जोर से पुकार रहे थे। अब मैं बिना कोई थोड़ी-सी भी गलती किए देख सकता था कि मेरा पक्षी विशाल झुंड के आगे है। नेताओं के मध्य एक नेता, जो उनकी उड़ानों की चाल का नेतृत्व कर रहा था। ओह, क्या शानदार क्षण था! उसने क्षितिज से क्षितिज तक अगुवाई की ओर हर बार अधिक से अधिक ऊंचाई तक ले गया, जब तक कि सुबह के आठ बजे तक कोई भी कबूतर आकाश के किसी भी कोने में दिखाई न दे सका। अब हमने अपने झंडे फहराए और

पढ़ाई करने नीचे चले गए। दोपहर को जब हम फिर से ऊपर छतों पर गए, तो हर आदमी देख सकता था कि कबूतरों से बनी दीवार नीचे उतर रही थी। और देखिए, चित्र-ग्रीव अब भी उनका नेतृत्व कर रहा था! फिर से जोर से आवाजें उठीं, 'चित्र-ग्रीव, चित्र-ग्रीव!' हां, उसने विजय पाई थी क्योंकि वह चार घंटे से अधिक नेतृत्व करता रहा था और जिस शान के साथ वह ऊपर गया, वैसे ही उतरता हुआ—स्वामी की तरह। अब उड़ान का सबसे खतरनाक दौर आया। इस विशाल सम्मिलन को विघटित करने का नायक ने आदेश दिया और मुख्य झुंड से एक के बाद एक कई झुंड अलग-अलग होकर अपने घरों की ओर उड़ने लगे। लेकिन बहुत जल्दी नहीं। आकाश में कुछ कबूतर चौकसी करते रहे जबकि शेष घरों की ओर उड़ गए। चित्र-ग्रीव ने मेरे छोटे-से झुंड की छतरी-सी आकृति बनाकर दूसरे प्रतियोगियों के उतरते हुए कबूतरों की पिछाड़ी की रक्षा की। नेतृत्व के लिए ऐसी ही कीमत चुकानी पड़ती है, जिसका दूसरा नाम 'आत्मत्याग' है।

लेकिन अब शुरू हुई भयंकर पराकाष्ठा। भारत में सर्दियों के दिनों में दक्षिण दिशा से बाज़ आते हैं। वे गरुड़-कौवों की तरह सड़ा-गला मांस नहीं खाते, बाज़ सामान्य तौर पर अपने पंजों से मारा गया शिकार ही खाते हैं। वे घटिया और चालाक होते हैं, मेरे विचार से वे निम्नकोटि के गिद्ध होते हैं लेकिन वे गरुड़ों से मिलते-जुलते होते हैं, हालांकि उनके पंखों के छोर कटे हुए नहीं होते। वे गरुड़ों के झुंड से थोड़ा-सा ऊपर जोड़े में उड़ते हैं और इसके कारण अपने शिकार से छुपे रहते हैं तथापि वे शिकार पर नजर रखते हैं, लेकिन स्वयं नजर नहीं आते।

उस खास दिन, जैसे ही चित्र-ग्रीव ने नेता होने की प्रतिष्ठा हासिल की, मैंने गरुड़ों के झुंड के साथ बाज़ों के जोड़े को उड़ते देखा। मैंने तुरंत मुंह में उंगली डालकर जोर से सीटी बजाई। चित्र-ग्रीव मेरा संकेत समझ गया। उसने अपने साथियों को फिर से व्यवस्थित किया, स्वयं बीच में आकर अगुवाई करने लगा और उड़ान की चंद्राकार पंक्ति के दोनों छोरों पर हीरा और जाहोर को जाने का आदेश दिया। पूरी टोली एक साथ हो गई मानो कोई एक विशाल पक्षी हो। फिर उन्होंने जल्दी-जल्दी नीचे की ओर गोता मारना शुरू किया। अब तक जिस काम के लिए वे आकाश में ठहरे थे, वह

पूरा हो चुका था। अन्य सभी दल, जिनके साथ वे सवेरे से खेल रहे थे, वे अपने घर जा चुके थे।

उन्हें इतनी तेजी से नीचे की ओर डुबकी मारते देखकर बाज़ उनके आगे जा गिरा जैसे हिमालय की चोटी से कोई पत्थर गिरा हो। ज्यों ही वह मेरे पक्षियों की बराबरी पर उतरा, उसने अपने पंख खोले और उनका सामना किया। यह कोई नई चाल नहीं थी, कबूतरों के झुंड को हटाने के लिए पहले भी अनेक बाज़ इस तरह की चाल चलते रहे थे। इसमें कोई शक नहीं कि चाल ग्यारह में से दस मामलों में सफल भी रहती है। क्योंकि जब यह चाल चली जाती है तो कबूतर डर के मारे अपनी एकजुटता की भावना भूल जाते हैं और तितर-बितर होकर इधर-उधर उड़ने लगते हैं। निस्संदेह बाज़ को ऐसा होने की उम्मीद थी, लेकिन हमारा चालाक चित्र-ग्रीव बिना कंपकंपाए, पंख फड़फड़ाता दुश्मन के नीचे पांच फीट पर अपने झुंड के साथ उड़ गया। उसने ऐसा जानबूझकर किया क्योंकि वह जानता था कि दुश्मन कभी भी पक्की तरह एकजुट झुंड पर हमला नहीं करता। लेकिन वह मुश्किल से सौ गज दूर तक ही जा पाया था, जब दूसरी, शायद श्रीमती बाज़, अपने पति की तरह पंख खोलकर उनके सामने आ गिरी। लेकिन चित्र-ग्रीव ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह पूरे झुंड को सीधा उसके सामने ले गया। यह एकदम अविश्वसनीय था। ऐसा करने का साहस किसी कबूतर ने पहले नहीं किया था और वह उनके इस हमले से भाग खड़ी हुई। भागने के लिए मुश्किल से उसने अपनी पीठ फेरी थी कि इतने में चित्र-ग्रीव और उसके झुंड ने डुबकी मारी और जितनी जल्दी वे कर सकते थे, उतनी ही जल्दी झपट्टा मारा। अब तक वे हमारी छत से बमुश्किल छह सौ फीट दूर रहे होंगे और तभी दुर्भाग्यवश श्रीमान बाज़ धमाकेदार गोले की तरह फिर से उन पर टूट पड़ा, इस बार अर्धचंद्राकार के मध्य में उसने अपने पंख खोल दिए और अग्नि के जंदरे के समान चोंच खोल दी और क्रोध से चीखने-चिल्लाने लगा। इसने अपना असर दिखाया। कबूतरों की एक पक्की दीवार के बजाय यह दो हिस्सों में बंट गई। इसमें से आधी चित्र-ग्रीव के पीछे उड़ने लगी, दूसरी आधी दयनीय डर से त्रस्त पता नहीं किधर को उड़ी। चित्र-ग्रीव ने वही किया जो संकट के समय एक सच्चा नेता करता है। उसने

डरे हुए झुंड का पीछा किया जब तक कि उसके आधे झुंड ने वे पकड़ न लिए और देखिए, समय रहते वे फिर से एक बार एक झुंड में घुल-मिल गए। ऐसा मुश्किल से हुआ ही था कि श्रीमती बाज़ अपनी बारी में उसके और अन्य कबूतरों के बीच में बिजली की तरह आ धमकी। वह उसकी पूंछ के ऊपर आकर गिरी और उसे अन्य कबूतरों से अलग कर दिया। जो अब अपने परामर्शदाता से वंचित थे, उन्होंने उड़ जाने में ही अपनी सुरक्षा समझते हुए अन्य किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। इससे चित्र-ग्रीव एकदम अकेला पड़ गया और उसे हर तरफ से आक्रमण झेलने के लिए छोड़ दिया गया। अब भी वह निर्भीक होकर भागते हुए कबूतरों का पीछा करते हुए नीचे की ओर उड़ा। उसके एक दर्जन फीट नीचे उतरने से पहले बाज़ महोदय ने उस पर झपट्टा मारा। अब जबकि चित्र-ग्रीव ने अपने दुश्मन को इतना नजदीक देखा तो वह और अधिक दुस्साहसी हो गया और कलाबाजी करता नीचे लुढ़का। यह काम भाग्यशाली रहा। यदि वह ऐसा न करता तो श्रीमती बाज़, जिसने उसके पीछे अपने पंजे खोल रखे थे, वही उसी वक्त उसे अपने चंगुल में ले लेती।

इस बीच मेरे बाकी कबूतर पंख फड़फड़ाते हुए लगभग घर आ चुके थे। वे छत पर ऐसे गिर रहे थे जैसे पेड़ से पके फल गिरते हैं। लेकिन उनमें से एक कबूतर डरपोक नहीं था बल्कि बहादुरी का पूर्णतया सारतत्त्व था। यह जाहोर था—काला हीरा। जैसे ही सारी भीड़ छत पर आकर बैठी, उसने कलाबाजी की और काफी ऊपर उड़ गया। उसके इरादों में कोई गलती नहीं थी। वह चित्र-ग्रीव का साथ देने के लिए जा रहा था। चित्र-ग्रीव को दोबारा कलाबाजी करते देख बाज़ ने अपना इरादा बदल दिया। उसने चित्र-ग्रीव का पीछा करना छोड़कर जाहोर पर नीचे की ओर झपट्टा मारा। खैर, आप चित्र-ग्रीव को जानते ही हैं, उसने जाहोर को बचाने के लिए नीचे की ओर डुबकी मारी और बिजली की चमक की तेजी से गोलाई में और हांफती हुई श्रीमती बाज़ के आगे टेढ़े-मेढ़े चक्कर काटने लगा। वह चित्र-ग्रीव के बराबर इतने सारे टेढ़े-मेढ़े चक्कर नहीं लगा पा रही थी। लेकिन श्रीमान बाज़, जो काफी अनुभवी था, उसने ऊपर, और ऊपर उड़कर निशाना साधा, जिससे जाहोर खतरे में पड़ गया। एक और गलत कदम लेते ही बाज़ महोदय उसे

धर-दबोचते। अफसोस, बेचारे पक्षी, उसने वही किया जो उसे नहीं करना चाहिए था। वह बाज़ के नीचे सीधी लाइन में उड़ा, जो तुरंत पंख फैलाकर उसके ऊपर बिजली की तरह टूट पड़ा। न कोई शोर सुना जा सका और न कोई आवाज की भनक तक सुनाई दी। मृत्यु के सही प्रतिरूप-सा वह नीचे से नीचे गिरता गया। इसके बाद अत्यंत भयंकर घटना घटित हुई। किसी को पता न चला कि कैसे उन दोनों के बीच चित्र-ग्रीव अपने मित्र जाहोर को बचाने और दुश्मन का हौसला पस्त करने आ गया। अफसोस, लड़ाई बंद करने के बजाय घुसपैठिए की ढीली पकड़ को अपने कब्जे में लेने के लिए बाज़ ने अपने पंजों से उस पर प्रहार किया। हवा में सफेद पंखों की वर्षा होने लगी। कोई भी यह देख सकता था कि चित्र-ग्रीव का शरीर दुश्मन के चंगुल में छटपटा रहा था। जैसे किसी ने गर्म लोहे की सलाख मेरे शरीर में दागी हो, मैं दर्द से अपने पक्षी के लिए चीख पड़ा। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। ऊपर से ऊपर चक्कर पर चक्कर लगाता हुआ बाज़ अपने पंजों की मजबूत पकड़ बनाता हुआ उसे ऊपर ले गया। यहां मुझे कुछ अत्यंत अपमानजनक बात मान लेनी चाहिए। मैं चित्र-ग्रीव को बचाने में इतना निमग्न था कि मुझे यह पता ही न चला कि कब श्रीमती बाज़ आई और उसने कब जाहोर को पकड़ा। यह बहुत जल्दी हुआ होगा—ठीक उसी समय जब चित्र-ग्रीव पकड़ा गया था। फिर हवा में जाहोर के पंख छितराने लगे। दुश्मन ने उसे अपने पंजों में कसकर पकड़ रखा था और उसने अपने आपको छुड़ाने के लिए कोई हरकत नहीं की। लेकिन चित्र-ग्रीव के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह अब भी श्रीमान बाज़ के चंगुल में छटपटा रहा था। ऐसा लगा, अपने शिकार को मजबूती से पकड़ने में अपने पति की सहायता के लिए श्रीमती बाज़ उसके बहुत नजदीक उड़कर आई। तभी जाहोर ने छूटने के लिए संघर्ष किया। उससे वह इतनी नीचे झूल गई कि उसका पंख अपने पति के पंख से जा टकराया। इससे वह अपना संतुलन खो बैठा। जैसे ही वह हवा में उलटा हुआ, हवा में फिर से पंखों की बौछार के साथ चित्र-ग्रीव ने अपने आपको मरोड़कर उसकी पकड़ से छुड़ा लिया। अब वह नीचे से नीचे गिरता गया। अगले तीस सेकेंड में हांफता और खून से लथपथ हमारी छत पर आ गिरा। उसके घावों को देखने के लिए मैंने उसे

उठा लिया। उसके दोनों पंख टूटे थे लेकिन अधिक गहरे घाव नहीं थे। मैं तुरंत उसे कबूतरों के डॉक्टर के पास ले गया। जिसने उसकी मरहम-पट्टी की। इसमें करीब आधे घंटे का समय लगा होगा और जब मैंने घर आकर चित्र-ग्रीव को उसके घोंसले में रखा तो मैं जाहोर को कहीं नहीं देख सका। अफसोस, उसका घोंसला खाली पड़ा था। और जब मैं छत पर गया तो मैंने जाहोर की पत्नी को मुंडेर पर बैठे पाया, जो आकाश की हर दिशा में अपने पति का निशान खोज रही थी। उसने न केवल उसी दिन इस प्रकार बिताया बल्कि अगले दो-तीन दिन भी इसी प्रकार बिताए। मुझे आश्चर्य है कि उसे इस बात से अवश्य सांत्वना मिली होगी कि उसके पति ने अपने बहादुर साथी की जान बचाने के लिए अपना बलिदान दिया था।

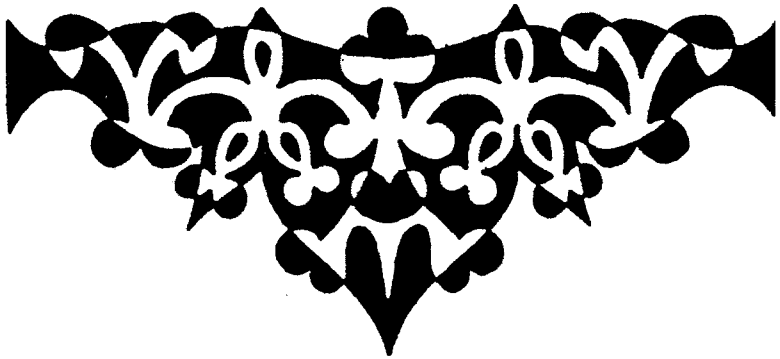

चित्र-ग्रीव का प्रेम-प्रसंग

चित्र-ग्रीव के घाव बहुत धीरे-धीरे ठीक हुए। फरवरी के मध्य तक वह छत पर दस गज से अधिक नहीं उड़ाया जा सकता था। उसकी उड़ान का समय भी बहुत थोड़ा होता था। मैं चाहे उसके पीछे दौड़कर कितनी ही बार उड़ाने का प्रयत्न करता लेकिन मैं उसे हवा में पंद्रह मिनट से अधिक नहीं रख सकता था। पहले मुझे लगा कि उसके फेफड़े खराब हो गए हैं। जब जांच-पड़ताल कराई गई तो वे स्वस्थ पाए गए। उड़ने में उसकी अरुचि के लिए मैंने उसके दिल में गड़बड़ी समझी, जो दुर्घटना में शायद घायल हो गया होगा। दोबारा जांच कराने पर ऐसा मानना भी गलत साबित हुआ।

चित्र-ग्रीव के व्यवहार से अत्यंत परेशान होने पर मैंने घोंड को एक लंबा पत्र लिखा जिसमें उन सब बातों का जिक्र किया जो घटित हुई थीं। पता चला कि वह कुछ अंग्रेजों के साथ शिकार-यात्रा पर गया हुआ है। उस तरफ से कोई सहायता न मिलने पर मैंने बड़ी बारीकी से अपने कबूतर की जांच की। दिन-प्रतिदिन मैं उसे अपनी छत पर रखता, ध्यान से देखता, लेकिन उसे क्या तकलीफ है, इस बात का कोई संकेत मुझे नहीं मिला। इसलिए चित्र-ग्रीव फिर से उड़ सकेगा, मैंने ऐसी आशा करनी छोड़ दी।

फरवरी के लगभग अंत में, गहन जंगल से घोंड द्वारा भेजा गया एक रहस्यमय पत्र मुझे मिला। उसमें लिखा था–'तुम्हारा कबूतर भयभीत है, उसके भय का इलाज करो। उसे उड़ाओ।' लेकिन उसने यह नहीं लिखा था कि कैसे उड़ाऊं? न तो मैं ही ऐसी कोई तरकीब सोच सका जिससे चित्र-ग्रीव ऊपर आकाश में अपने पंख खोलकर उड़ सके। छत पर उसके पीछे दौड़ने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि मैं उसे एक कोने से भगाता तो वह दूसरे कोने पर जाकर बैठ जाता था। और सबसे अधिक विचलित करने वाली बात थी, उस पर किसी बादल या आकाश में उड़ते पक्षियों की छाया पड़ने पर उसकी डर से कंपकंपी बंध जाना। निस्संदेह जो भी छाया उस पर पड़ती, उससे उसे लगता कि कोई बाज़ या गरुड़ उसके ऊपर झपट्टा मारने आ रहा है। इससे मुझे अंदाजा हुआ कि चित्र-ग्रीव कितनी बुरी तरह डरा हुआ था। उसके इस डर के रोग का इलाज कैसे किया जाए, यह बात बहुत व्यथित करने वाली सिद्ध हुई। यदि हम हिमालय में होते तो मैं उसे किसी लामा के पास ले जाता जिसने एक बार पहले भी इसी तरह के रोग का इलाज किया था, लेकिन यहां शहर में तो लामा होते नहीं। अतः मैं इंतजार करने के लिए मजबूर था।

मार्च में वसंत का आगमन हुआ और चित्र-ग्रीव असामान्य रूप से पंख छोड़ने की क्रिया से गुजरा। उसके बाद वह पूर्णतः पीलापन लिए गहरे हरे रंग का दिखता था। वह इतना सुंदर था जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। एक दिन पता नहीं कैसे, मैंने उसे जाहोर की विधवा से बात करते हुए देखा। वसंत के आगमन पर वह बहुत प्रफुल्ल नजर आ रही थी। धूप में उसका सांवला रंग-रूप इस तरह चमक रहा था जैसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में तारों भरी रात। निस्संदेह मैं यह जानता था कि चित्र-ग्रीव और उसकी शादी हालांकि उनकी संतान के लिए ठीक नहीं थी लेकिन फिर भी शायद इससे चित्र-ग्रीव अपने भय पर विजय पा सके और जब से जाहोर की मृत्यु हुई थी तब से आई उसकी (श्रीमती जाहोर की) उदासीनता दूर हो सके।

उनमें मित्रता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मैं उन दोनों को पिंजरे में बंद करके अपने मित्र राद्जा के पास ले गया, जो दो सौ मील दूर जंगल के किनारे रहता था। उसके गांव का नाम घटसिला था। वह एक नदी के किनारे स्थित था, जिसके दूसरी पार ऊंची पहाड़ियां थीं, जो घने जंगलों से ढकी थीं, जहां हर किस्म के जानवरों की भरमार भी। राद्जा इस गांव का एक पुजारी

था, और यह पदवी दसियों सदियों से उसके पूर्वजों के पास रही थी। उसके माता-पिता कंकरीट की एक बड़ी इमारत में रहते थे। गांव का मंदिर भी कंकरीट का बना था, जो उसके घर के साथ सटा हुआ था। मंदिर का प्रांगण ऊंची दीवार से घिरा था, जहां राद्जा प्रत्येक रात को वहां एकत्रित किसानों को शास्त्र पढ़ाने और उनकी व्याख्या करने का कर्तव्य निबाहता था। जब वह अंदर जोर-जोर से पढ़ता था, तो बाहर नदी पर दूर जंगल से बाघ की दहाड़ और जंगली हाथियों के चिंघाड़ने की आवाजें आती थीं। यह बहुत सुंदर और अमंगलकारी स्थान था। घटसिला गांव में कोई खतरनाक घटना घटित नहीं हुई थी लेकिन आपको किसी शिकारी जानवर का सामना करने अधिक दूर नहीं जाना पड़ता, यदि आपको उन्हें देखने की इच्छा हो।

जिस रेलगाड़ी से मैं घटसिला आया था, वह रात में पहुंची। राद्जा और उसके दो नौकरों ने स्टेशन पर मुझसे मुलाकात की एक नौकर ने मेरा पुलिंदा अपने कंधे पर उठा लिया और दूसरे ने दोनों पक्षियों वाला पिंजरा ले लिया। हम सबको एक-एक लालटेन उठानी थी, एक फालतू लालटेन मेरे लिए भी लाई गई थी। एक नौकर हमारे आगे और दूसरा पीछे। इस तरह एक कतार में हम एक घंटा चलते रहे। मेरे मन में शंका उठी और मैंने पूछा, "हम घुमाव-फिराव से क्यों जा रहे हैं?" राद्जा ने कहा, "वसंत ऋतु में जंगली जानवर यहां से होकर निकलते हैं। हम जंगल में से उत्तर की ओर जाने के लिए छोटा रास्ता नहीं पकड़ सकते।"

"बकवास।" मैंने कहा, "पहले मैं ऐसा कई बार कर चुका हूं। हम घर कितनी देर में पहुंचेंगे?"

"आधे घंटे में।"

उसी समय ऐसा लगा जैसे हमारे पैरों तले से जमीन खिसक गई हो और भयंकर शोर करता हुआ ज्वालामुखी फूट पड़ा हो, एक चीत्कार उठा– "होआ, हो, हो, होआ।"

कबूतरों ने घबराहट में पिंजरे के अंदर पंख फड़फड़ाए और अपने खाली हाथ से मैंने राद्जा का कंधा पकड़ लिया। लेकिन मेरे साथ सहानुभूति दिखाने के बजाय वह जोर से हंस पड़ा। और जैसे स्वामी वैसे ही वे दोनों नौकर भी हंसने लगे।

अपने ठहाके के शांत होने के बाद, राद्जा ने समझाया, "तुम तो ऐसा कई बार कर चुके हो, कर चुके हो ना? तो लालटेनों से डरे हुए बंदरों की चीत्कार से तुम क्यों भयभीत हो गए?"

"बंदर?" मैंने प्रश्न किया।

"हां, बंदर, बहुत सारे।" मेरे मित्र ने याद दिलाया, "ये वर्ष में इस समय उत्तर दिशा में जाते हैं। हमने पेड़ों के ऊपर बैठे बंदरों के पूरे समूह को डरा दिया था। बस इतनी-सी बात है कि भविष्य में किसी बंदर की चीख को बाघ की दहाड़ मत समझ लेना।"

भाग्यवश हम थोड़ी देर बाद घर पहुंच गए थे, बिना किसी अन्य घटना के जिससे मैं विचलित होता। दूसरे दिन की सुबह राद्जा अपने पूर्वजों के मंदिर में काम करने गया और मैंने छत पर जाकर कबूतरों को पिंजरे से बाहर निकाल दिया। पहले तो वे चौंक गए लेकिन मुझे अपने पास देखकर और मेरे हाथ में मक्खन से तर दानों को देखकर बिना कोई झमेला किए नाश्ता करने बैठ गए। बड़ी शान से लगभग वह पूरा दिन हमने छत पर ही बिताया। ज्यादा देर तक उन्हें अकेला छोड़ने के लिए मेरी हिम्मत नहीं पड़ी ताकि उन्हें आसपास की अजनबी चीजें विचलित न कर दें।

अगले सप्ताह के दौरान, दोनों पक्षी घटसिला में निस्संकोच व्यवहार करने लगे थे, यहां तक कि आपस में एक-दूसरे के साथ अच्छी तरह घुल-मिल गए थे। अब इस बात में कोई संदेह नहीं था कि मैंने उन्हें कबूतरों के झुंड से अलग करके अक्लमंदी का काम किया था। हमारे ठहरने के आठवें दिन राद्जा और मुझे आश्चर्य हुआ यह देखकर कि चित्र-ग्रीव अपनी साथी के पीछे उड़ने लगा था। वह उड़ी लेकिन नीची सतह पर। उसने पीछा किया। उसे अपने पास आता देख वह ऊपर की ओर उड़ी और पीछे की ओर मुड़ी। उसने भी वैसा ही किया और उसका पीछा करता रहा। फिर से वह ऊपर उड़ी, लेकिन इस बार वह लड़खड़ाया और उसके नीचे हवा में चक्कर काटने लगा। फिर भी मुझे लगा कि वह साहस बटोर रहा है। अंत में, कबूतरों के आदर्श चित्र-ग्रीव अपने डर से मुक्ति पाते हुए और आकाश में उड़ने के भय पर विजय पाते हुए एक बार फिर से आकाश में बिना रुकावट के उड़ने लगा था।

अगली सुबह दोनों ऊंचाई पर उड़े और एक-दूसरे के साथ खेलते रहे। चित्र-ग्रीव ने उसके साथ पूरा रास्ता उड़ने से मना किया और शीघ्रता से नीचे उतरना शुरू किया, बजाय उसके नीचे हवा में चक्कर काटने के। इससे मैं उलझन में पड़ गया लेकिन राद्जा, जो काफी अक्लमंद था, उसने बताया, "एक बादल के टुकड़े ने, जो पंखे के बराबर बड़ा था, सूर्य को ढक लिया है। उसकी छाया इतनी जल्दी चित्र-ग्रीव के ऊपर पड़ी कि वह समझ बैठा था कि उसका दुश्मन आ गया। बादल हटने का इंतजार करो और फिर···"

राद्जा ने सही कहा था। कुछ क्षणों के बाद सूर्य निकल आया और उसका प्रकाश चित्र-ग्रीव के पंखों पर एक बार फिर पड़ने लगा। वह तुरंत नीचे उतरना बंद करके ऊपर हवा में चक्कर लगाने लगा। उसकी साथिन भी, जो उसका साथ देने नीचे उतरने लगी थी, अब करीब सौ फीट ऊपर हवा में उसका इंतजार करने लगी। जैसे गरुड़ पिंजरे से निकलकर उड़ता है, उसी तरह चित्र-ग्रीव पंख हिलाता हुआ ऊपर की ओर उड़ा। धूप उसके आसपास रंग के समूह बना रही थी। वह घूमता हुआ ऊपर से ऊपर झूमता गया। अब अपनी साथिन का पीछा करने के बजाय उसके आगे उड़ने लगा। इस तरह वे आकाश में जा पहुंचे, उसका डर पूरी तरह से दूर हो गया और उसकी साथिन चित्र-ग्रीव की फुर्ती और शक्ति से सम्मोहित थी।

अगले दिन की सुबह उन दोनों ने जल्दी शुरुआत की। वे दूर तक और बहुत देर तक उड़े। पर्वतों से परे वे आंखों से ओझल हो गए। ऐसा लगा जैसे वे पर्वत की चोटी से दूसरी तरफ नीचे लुढ़क गए हों। कम से कम एक घंटे के लिए वे उधर चले गए।

अंत में वे लगभग ग्यारह बजे वापस आए और दोनों अपनी चोंचों में लंबे-लंबे तिनके उठाकर लाए। वे अंडे रखने के लिए घोंसला बनाने वाले थे। मैं उन्हें घर ले जाने की सोच रहा था लेकिन राद्जा ने आग्रह किया कि हमें कम से कम एक सप्ताह और रुकना चाहिए।

उस सप्ताह के हरेक दिन के कुछ घंटे हमने नदी पार के भयानक जंगल में बिताए। हम कबूतरों को ले जाते और उन्हें घने जंगल में छोड़ देते थे जो राद्जा के घर से मुश्किल से पांच मील दूर था। अपने दिशा-ज्ञान को परखने और ऊंची उड़ाने भरने के अतिरिक्त चित्र-ग्रीव सब कुछ भूल गया था।

अर्थात् अपनी साथिन के प्यार और स्थान तथा वातावरण के परिवर्तन ने भय की उस अत्यंत भयानक बीमारी से उसका इलाज कर दिया था।

यहां स्पष्ट शब्दों में उल्लेखनीय है कि हमारी लगभग सारी मुसीबतें भय, चिंता और घृणा के कारण आती हैं। इन तीनों में से यदि किसी आदमी को एक ने भी पकड़ लिया तो अन्य दो स्वतः ही उसके पास आ जाती हैं। कोई भी जंगली जानवर अपने शिकार को डराए बिना नहीं मार सकता। वास्तव में कोई जानवर नहीं मरता जब तक कि उसे मारने वाला उसके दिल में खौफ पैदा न कर दे। संक्षेप में कह सकते हैं कि दुश्मन के अंतिम वार करने से पहले जानवर का अपना डर ही उसे मार देता है।

चित्र-ग्रीव को युद्ध का बुलावा

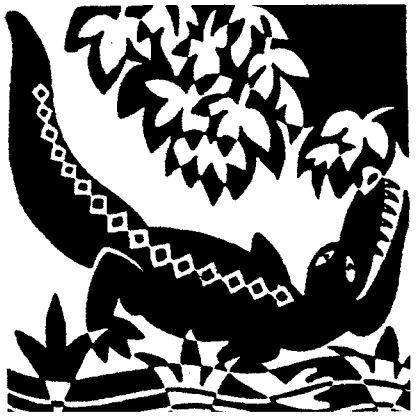

अगस्त के पहले सप्ताह में बच्चों के पैदा होने के तुरंत बाद हीरा और चित्र-ग्रीव घोंड के साथ विश्वयुद्ध में सेवा करने के लिए कलकत्ता से मुंबई जलयान से जाने के लिए भेजे गए। मैंने उस कुंआरे पक्षी हीरा को चित्र-ग्रीव के साथ इसलिए भेजा क्योंकि सेना को उन दोनों की आवश्यकता थी। फ्लांडर्स और फ्रांस के युद्ध क्षेत्र में जाने से पहले चित्र-ग्रीव को अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों की कुछ जानकारी थी, इस बात से मुझे बहुत खुशी थी। इस खुशी का खास कारण यह था कि मैं जानता था कि एक कबूतर अपने नवजात बच्चों और पत्नी को घर पर इंतजार करता सोचकर वापस आने में शायद ही कभी असफल होता है। मैं इस बात से आश्वस्त था कि चित्र-ग्रीव और उसके परिवार के बीच प्यार का बंधन उसे अपना संदेशवाहक का कार्य भली भांति करने में सहायक होगा। जब तक वह जीवित रहेगा, उसे न तो तोपों की आवाज और न गोलियों की बौछार, अंत में अपने परिवार के पास लौटने से रोक पाएंगे।

लेकिन यहां कोई पूछ सकता है कि घर तो कलकत्ता में था और युद्ध हजारों मील दूर हो रहा था। यह सच है। लेकिन फिर भी क्योंकि वह अपनी पत्नी और बच्चों को घर छोड़ गया था, वह घोंड के पास अपने अस्थायी घोंसले पर आने की भरसक कोशिश करेगा।

कहा जाता है कि युद्ध के मोर्चे और हेडक्वार्टर के बीच उसकी प्रतीक्षा करते मुख्य सेनापति और घोंड के पास चित्र-ग्रीव ने बहुत-से संदेश लाकर दिए थे। निस्संदेह चित्र-ग्रीव पहले तो घोंड के साथ जुड़ा था लेकिन आने वाले कुछ महीनों में वह चीफ से प्यार करने लगा था।

युद्ध के मोर्चे पर कबूतरों के साथ घोंड गया था, मैं नहीं जा सका था, क्योंकि कम आयु का होने के कारण मैं किसी भी नौकरी के लिए अयोग्य था, इसीलिए वृद्ध महोदय को जाना पड़ा था। भारत से मार्सेलीज़ तक की लंबी समुद्र-यात्रा के दौरान हीरा, चित्र-ग्रीव और वृद्ध शिकारी पक्के दोस्त बन गए थे। मैंने अभी तक किसी अजनबी जानवर को घोंड से अधिक देर तक मित्रता का प्रतिरोध करते नहीं देखा और क्योंकि मेरे कबूतर उसे पहले से जानते थे, इसलिए उनका उसकी ओर झुकाव सहज था।

फ्लांडर्स में भारतीय सेना के ठहरने के दौरान सितंबर 1914 से अगली वसंत ऋतु तक घोंड अपने पिंजरे के साथ सेना मुख्यालय के पास ही रहा जबकि हीरा या चित्र-ग्रीव को विभिन्न यूनिटों द्वारा मोर्चे पर ले जाया गया। समय-समय पर वहां से पतले-से कागज पर, जिसका वजन एक औंस से अधिक नहीं होता था, संदेश लिखकर उसके पंजे पर बांधकर छोड़ दिया जाता था। चित्र-ग्रीव हमेशा उड़कर सेना मुख्यालय में घोंड के पास पहुंच जाता था। वहां संदेश को पढ़कर स्वयं मुख्य सेनापति उसका जवाब भेजता था। ऐसी अफवाह थी कि यह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति चित्र-ग्रीव को प्यार करता था और उसकी सेवाओं को बहुमूल्य समझता था।

लेकिन बेहतर यही होगा कि स्वयं चित्र-ग्रीव की कहानी उसी से सुनी जाए। जैसे कि स्वप्न के अनुभव कोई अन्य नहीं बता सकता सिवाय स्वप्न दृष्टा के, इसी तरह अपने साहसिक कारनामों का वर्णन स्वयं चित्र-ग्रीव को ही करना चाहिए।

हिंद महासागर और भूमध्य सागर को पार करने के बाद हमने रेल द्वारा एक बहुत अजीब-से देश में से होकर यात्रा की। हालांकि अभी सितंबर ही था, फिर भी वह देश फ्रांस इतना ठंडा था जितना सर्दियों में उत्तर भारत। मुझे बर्फ से ढके पहाड़ और विशाल वृक्ष देखने की आशा थी, क्योंकि मैंने

सोचा, मैं हिमालय के पास पहुंच रहा था। लेकिन क्षितिज के पास मुझे कोई भी पहाड़ी हमारे बड़े-बड़े बांस के झुरमुट से बड़ी नजर नहीं आई। मेरी समझ में नहीं आता कि कोई स्थान ऊंचाई पर न होने के बावजूद भी ठंडा क्यों होता है?

आखिरकार हम युद्ध के मोर्चे पर पहुंच गए। यह मोर्चे के पिछले भाग का अंत था लेकिन वहां भी आग उगलने वालों की बूम-बूम-बूम सुनी जा सकती थी। और एक साधारण कबूतर के तौर पर मैंने विभिन्न आकार और शक्ल के आग उगलने वाले देखे। वे भौंकने और मौत को डकारने वाले धातु के कुत्ते मुझे पसंद नहीं थे। वहां दो दिन रहने के बाद हमारी उड़ान की परीक्षा शुरू हुई। हमारे अपने शहर के मेरे और हीरा के अलावा चार कबूतर और थे। आप जानते हैं, हीरा कितना उतावला हो सकता था। जैसे ही हम एक बड़े गांव के घरों के ऊपर उड़े तभी हीरा बूम, बूम, बूम की दिशा में उड़ गया। वह जांच-पड़ताल करना चाहता था। खैर, एक घंटे में हम वहां पहुंच गए। ओ हो, क्या कमाल का शोरगुल! पेड़ों के नीचे छुपे धातु के कुत्ते फुफकारते हुए बड़े-बड़े आग के गोलों से वज्रपात कर रहे थे। मैं भयभीत हो गया था, इसलिए ऊपर से ऊपर उड़ता गया। लेकिन आकाश की ऊंचाइयों पर भी मैं शांति नहीं पा सका। न मालूम कहां से विशाल गरुड़ गरजते, गुर्राते, हाथियों की तरह चिंघाड़ते हुए आकाश में आए। इस भयंकर दृश्य को देखकर हम उस तरफ उड़े जहां घोंड हमारा इंतजार कर रहा था। उनमें से दो ने हमारा पीछा किया। हम बहुत तेजी से उड़ते गए। भाग्यवश वे हमसे आगे नहीं निकल पाए। ठीक जैसी हमें आशा थी, वैसे ही वे गरुड़ वहीं आकर नीचे उतरे, जहां हम रहते थे। मैंने अनुभव किया कि मौत हमारे नजदीक आ गई। वे गरुड़ हमें नेवले की तरह पिंजरे में से निगलने वाले थे। लेकिन नहीं! शीघ्र ही चिंघाड़ना बंद कर वे मृतक की भांति जमीन पर आ पड़े। उन पक्षियों के पेट से कूदकर एक-एक आदमी निकलकर चल पड़ा। मुझे आश्चर्य हुआ कि कैसे गरुड़ आदमियों को निगल सके और ये लोग कैसे जीवित बाहर निकल आए! बहुत जल्दी ये लोग अपना काम करके वापस लौटे, गरुड़ पर चढ़े और फिर आर्त्तनाद करते, चिंघाड़ते और कोलाहल करते ये गरुड़ जीवित होकर हवा में उड़ गए। इससे मेरे मन में

कोई संदेह नहीं रहा कि ये मनुष्यों के रथ थे और जब मैंने यह जाना तो मुझे बड़ा आराम महसूस हुआ।

हालांकि पहले-पहल हमें हर चीज अनोखी लगी लेकिन जब हम इनके आदी हो गए तो ऐसा लगना समाप्त हो गया। फिर भी लगातार बमों के गूंजने और भौंकने के शोर के कारण हमारी नींद की समस्या बनी रही। सेना में काम करने के उन महीनों में मैं कभी अच्छी तरह नहीं सो सका था। आश्चर्य नहीं कि मैं और हीरा अधीर और घबराए हुए थे जैसे नवजात सांपों के बच्चे घबराए होते हैं।

मेरी पहली साहसिक यात्रा मोर्चे से रिसालदार के संदेश ले जाने की थी, जहां पर बहुत सारे फौलादी कुत्ते दिन-रात भौंकते और आग उगलते थे। आपको रिसालदार के बारे में एक बात बतानी चाहिए। वह कलकत्ता से आए बहुत सारे लड़ाकू सैनिकों का इंचार्ज था। उसने मुझे एक काले कैनवास से पूरी तरह ढके पिंजरे में उठाया और अपने चालीस आदमियों के साथ मोर्चे पर बनी खंदकों के पास लेकर चल पड़ा। घंटों और रातों (क्योंकि पिंजरे में अंधकार के कारण मुझे रात जैसा लग रहा था) चलने के बाद हम अपने निर्धारित स्थान पर पहुंचे। वहां जाकर कैनवास को हटा दिया गया। अब मुझे अपने आसपास दीवार के अलावा और कुछ दिखाई नहीं दिया, जहां भारत से आए पगड़ी वाले जवान छोटे कीड़े-मकोड़ों की तरह जमीन पर धीरे-धीरे रेंग रहे थे। ऊपर यांत्रिक गरुड़ क्रोध से चिंघाड़ रहे थे। यहां पर पहली बार मैंने आवाजों को समझना शुरू किया। एक बूम, बूम की भ्रांत ध्वनि के बजाय यहां कई किस्म के विस्फोट थे, जिन्हें कान अलग करके पहचान सकते थे। सबसे अधिक मुश्किल से सुनी जाने वाली बात मेरे बारे में थी, जो वे लोग कर रहे थे। बहरा बना देने वाली आवाजों के बीच उन लोगों की बात बहुत धीमी सुनाई देती थी जैसे घास में होकर आती मंद हवा की फुसफुसाहट। कभी-कभी वे फौलादी कुत्तों के मुंह खोल देते, जो भौंकते और बहुत देर तक आग उगलते रहते। फिर लकड़बग्घे की हंसी सुनाई दी। सैकड़ों सैनिकों ने उन छोटे पिल्लों को भयानक रूप से खांसने के लिए प्रेरित किया, जो पुक, पुक, पुक करने लगे। यह आवाज ऊपर उड़ते गरुड़ों की गहन चीत्कार में डूब गई, जो झुंडों में ऊपर उड़ रहे थे और पागलों की तरह

चीत्कार करते हुए एक-दूसरे को मार डालने में लगे थे जैसे मानो बहुत सारी गौरैया लड़ रही हों। जो रिसालदार मेरा इंचार्ज था, उसने अपने पिल्ले के मुंह को ऊपर आकाश की ओर किया और गोली दाग दी, कुछ आग निकली और देखा, एक गरुड़ को नीचे ला पटका जैसे मानो कोई खरगोश हो। अब एक बहुत तेज आवाज सुनाई दी—बूम, बाजूम, बज़, बूम। विशालकाय बाघ की-सी भारी-भरकम दहाड़ उठी और दिव्य स्वर संघात की छतरी की भांति चारों ओर फैल गई जिसमें बहुत सारी अन्य छोटी आवाजें समाहित हो गईं। ओह, उस आरगन के दारुण सम्मोहक सुर को क्या मैं कभी भुला सकूंगा! दहाड़ पर दहाड़, विशाल सुर-संगति पर सुर-संगति जैसे विनाशकारी शिलाखंडों के टूटने की धमाकेदार और कोलाहलपूर्ण आवाजें।

मृत्यु के इतने नजदीक सुंदरता क्यों होती है? मुश्किल से मैं ऊपर से आती उस अलौकिक संगीत की अनिर्वचनीय गरिमा से आत्मविभोर हुआ था कि तभी मेरे आसपास आग के गोलों की बौछार मूसलाधार बारिश की तरह होने लगी। आदमी परास्त होकर गिरने लगे जैसे बाढ़ग्रस्त बिलों में चूहे। रिसालदार, जो खून से लथपथ था, उसने जल्दी से कागज के टुकड़े पर संदेश लिखा, मेरे पैर में बांधा और मुझे पिंजरे से बाहर निकाल दिया। उसकी आंखों में झांककर मैं जान गया था कि वह अत्यंत कष्ट में है और उसे घोंड से मदद की उम्मीद थी।

निस्संदेह मेरे मालिक! आप जानते हैं कि मैं ऊपर उड़ा और जो कुछ मैंने देखा, उससे मेरे पंख लगभग जम गए। खंदकों के ऊपर आग की चादर-सी फैली हुई थी। मेरी समस्या थी कि इसके ऊपर कैसे उड़ा जाए। मैंने अपनी पूंछ की पतवार का इस तरह प्रयोग किया और अपनी उड़ान को हर दिशा में चलाता गया। लेकिन मैं चाहे जिस दिशा में उड़ा, मेरे ऊपर जीवन के करघे पर रक्तिम विनाश की चादर बुनते हुए लाखों शोलों की भरनी दौड़ रही थी। लेकिन मैं ठहरा अपने बहादुर बाप का बेटा, मुझ चित्र-ग्रीव को तो ऊपर जाना ही था। शीघ्र ही मैं हवा के एक झोंके से जा टकराया। वह काफी तेज था। उसके बवंडर में फंसकर मैं काफी ऊंचा उड़ गया। मुझे लगा जैसे मेरे पंख टूट गए हों और मैं पत्ते की तरह हल्का हो गया था। इस बवंडर में फंसकर मैं ऊपर उठा, फिर नीचे गिरा, फिर ऊपर उड़ा और उस लगातार तेजी से बनती आग की चादर को चीरता हुआ रास्ता बनाकर ऊपर उड़ गया। अब मुझे और कुछ देखने की इच्छा नहीं थी। मैं केवल 'घोंड, घोंड' की रट लगाए रहा। इस बार जब मैंने यह कहा, इससे मेरे अंदर नया जोश पैदा हुआ और मैंने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। अब जबकि मैं बहुत ऊपर उठ चुका था, मैंने इधर-उधर अवलोकन किया और पश्चिम दिशा में उड़ता गया। तभी मेरी पूंछ की पतवार पर गोली आकर लगी और उसे तोड़ दिया। मेरी आधी पूंछ जल गई और टूटकर गिर पड़ी। आप जानते हैं, इससे मैं आक्रोश में आ गया। मेरी पूंछ मेरे सम्मान का प्रतीक है। इस पर गोली मारना तो दूर, मैं इसे छूना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। खैर, मैं सुरक्षित घर आ गया। लेकिन जैसे ही मैं नीचे उतरने लगा, उसी समय दो गरुड़ों ने मेरे ऊपर लड़ना शुरू कर दिया। मैंने उनका चिंघाड़ना नहीं सुना और न उनका चेहरा देख पाया। यदि वे एक-दूसरे को मार देते तो भी मुझे कोई परेशानी नहीं होती लेकिन उन्होंने मेरे पीछे अंधाधुंध शोलों की बौछार शुरू कर दी। जितनी तेजी से उनकी लड़ाई होती गई, उतनी ही तेजी से उनकी चोंच से आग उगलती गई। मैंने यथाशक्ति नीचे झुककर डुबकी मारी। काश, यहां कुछ पेड़ होते, संभवतः यहां पेड़ तो अवश्य रहे होंगे लेकिन अधिकांश पेड़ गोलियों से भून दिए गए थे अथवा विकृत कर दिए थे। इसलिए वे ठूंठ बने खड़े थे, जिन पर न तो छायादार रमणीय फूल-पत्तियां थीं और न शानदार टहनियां। इसलिए मैं उन टूटे-फूटे नुकीले ठूंठों में होकर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बनाते हुए घूमता हुआ भागा जैसे जंगल में हाथियों से डरकर आदमी भागता है। आखिरकार मैं घर पहुंच गया और घोंड की कलाई पर जा बैठा। उसने धागे को काटा और मुझे और संदेश को लेकर मुख्य सेनापति के पास ले गया, जो पकी हुई चेरी जैसा दिख रहा था और उससे खुशबूदार साबुन की गंध आ रही थी। संभवतः अधिकांश सैनिकों के विपरीत वह दिन में तीन-चार बार साबुन लगाकर नहाता था। रिसालदार द्वारा कागज पर लिखे संदेश को पढ़कर उसने मेरे सिर पर हाथ रख शाबाशी दी और लापरवाह बैल की तरह घुरघुराया।

दूसरी बार दिलेरी

रिसालदार के मालूमी घाव ठीक हो जाने के बाद हमको दूसरी बार मोर्चे पर ले जाया गया। इस बार उसने मेरे साथ हीरा को भी ले लिया था। मैं तुरंत समझ गया था कि जो संदेश हम लाने वाले थे, वह इतना महत्त्वपूर्ण था और हम दोनों पर भरोसा इसलिए था कि कम-से-कम हम में से एक अवश्य सफल हो सकेगा।

यहां पर बहुत सर्दी थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं बर्फ के राज्य में था। हर समय वर्षा होती रही। जमीन इतनी गंदी थी कि इस पर पांव रखते ही बलुआ रेत-सी कीचड़ में पांव फंस जाते थे और पांव इतनी ठंड महसूस कर रहे थे मानो मुर्दे पर कदम रख दिए हों।

अब हम एक अनोखे स्थान पर पहुंच गए थे। यह कोई खंदक नहीं थी बल्कि एक छोटा गांव था। इसके चारों ओर दहकते विनाश का भभकता हुआ ज्वार आया हुआ था। यहां के मनुष्यों के चेहरों को देखकर लगता था कि यह कोई पवित्र और महत्त्वपूर्ण स्थान था, क्योंकि यहां पर हर छत, दीवार और पेड़ों पर मौत अपनी लाल जीभ लपलपा रही थी। फिर भी ये लोग इसे छोड़ना नहीं चाहते थे। मैं इस खुले स्थान पर बहुत खुश था। और यहां पाले से सफेद जमीन के टुकड़े देखे जा सकते थे, जहां अभी तक कोई गोला नहीं गिरा था। यहां तक कि धमाकों और गोलीबारी के बिलकुल मध्य, जहां मकान ऐसे गिर रहे हों जैसे आंधी में पक्षियों के घोंसले, फिर भी वहां चूहे बिलों में घूम रहे थे, पनीर चुरा रहे थे। मक्खियां पकड़ने के लिए मकड़ियां जाल बुन रही थीं। उनके जीवन की गतिविधि सामान्य रूप से चल रही थी। उनके लिए मनुष्यों द्वारा अपने भाइयों की मार-काट इतनी ही मामूली-सी बात थी जैसे बादलों द्वारा आकाश को ढकना।

थोड़ी देर के लिए धमाकों की आवाज थम गई और ऐसा लगा कि गांव (जो थोड़ा-सा बचा था) अब आक्रमण से बच गया था। अंधेरा बढ़ता गया। आकाश इतना नीचे आ गया कि मैं उसमें अपनी चोंच डाल सकता था। बर्फीली सर्दी ने मेरे शरीर के हर एक पंख को जकड़ लिया था और लगता था, यह उन्हें उखाड़ देगी। अपने पिंजरे में बैठना मुझे एकदम अंसभव-सा लगा। हीरा और मैंने गरमाहट लाने के उद्देश्य से एक-दूसरे को कसकर छाती से लगा लिया।

दोबारा गोलीबारी होने लगी थी। इस बार हर तरफ से होने लगी थी। हमारे छोटे-से गांव को शत्रु ने चारों ओर से घेर लिया था। स्पष्ट रूप से सब जगह फैली धुंध की आड़ में शत्रु ने पीछे से हमारा संबंध काट दिया था। उसके बाद रॉकेटों से गोलीबारी शुरू कर दी थी। हालांकि मुश्किल से दोपहर बाद का समय था लेकिन हिमालय की रात जैसा अंधेरा और चिपचिपा था। मुझे आश्चर्य है कि इंसानों को कैसे पता चलता कि यह सिवाय रात के और कुछ नहीं है। आखिरकार इंसानों को पक्षियों से कम जानकारी होती है।

हीरा और मुझे अपने-अपने संदेश ले जाने के लिए छोड़ दिया गया था। हम ऊपर उड़े लेकिन ज्यादा दूर नहीं, क्योंकि थोड़ी ही देर में हम घनी धुंध में फंस गए। हमारी आंखें कुछ नहीं देख पा रही थीं। उन पर एक ठंडी चिपचिपी कोहरे की परत पड़ रही थी लेकिन मैंने इस तरह की किसी चीज का अनुमान पहले से ही लगा लिया था। मैंने वही किया जो ऐसी परिस्थिति में मुझे युद्ध के मैदान में अथवा भारत में करना चाहिए था। मैं ऊपर की ओर उड़ा। ऐसा लगा कि मैं एक बार में एक फीट से अधिक नहीं जा पाऊंगा। मेरे पंख गीले हो चुके थे। मेरी सांसों में छींकने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। मुझे लगा कि मैं तुरंत मरने वाला हूं। कबूतरों के इष्ट देवता को धन्यवाद कि मैं अब कुछ गज आगे देख सकता था, इसलिए मैं और अधिक

ऊंचाई पर उड़ गया। अब मेरी आंखों में चुस्ती आने लगी थी। अचानक मैंने महसूस किया कि मुझे अब अपनी आंखों की झिल्ली को नीचे गिरा लेना चाहिए, जो मेरी दूसरी पलकें होती हैं और जिनका प्रयोग मैं धूल-भरी आंधी में से गुजरने के लिए करता हूं। ऐसा करके मैं अपने आपको अंधा होने से बचा सकता हूं, क्योंकि यह कोई धुंध नहीं थी बल्कि मनुष्यों द्वारा छोड़ा गया दुर्गंधयुक्त और आंखों को नष्ट करने वाला धुआं था। मेरी आंखों में ऐसी पीड़ा हो रही थी मानो किसी ने मेरी आंखों में सुई चुभो दी हो। मेरी झिल्ली ने मेरी आंखें ढक ली थीं और मैंने सांस रोककर ऊपर उड़ने की कोशिश की। हीरा, जो मेरा साथ दे रहा था, वह भी ऊपर उड़ा। उस गैस ने उसका दम घोंट रखा था। लेकिन वह हिम्मत हारकर उड़ना नहीं छोड़ने वाला था। अंत में हम उस जहरीले धुएं की चादर को पार कर साफ हवा में ऊपर उड़ गए। यहां हवा एकदम साफ थी और मैंने अपनी आंखों की झिल्ली उठा दी और धुंधले आकाश के पार बहुत दूर मुझे अपनी सीमा-रेखा दिखाई दी। हम उसकी ओर उड़ने लगे।

मुश्किल से हम आधा रास्ता तय कर पाए होंगे कि तभी एक भयंकर गरुड़, जिसके ऊपर काले क्रॉस बने हुए थे, हमारे पास आता गया और हमारे ऊपर आग उगलने लगा–पुफ, पुफ, पोप पा···। जितनी अच्छी तरह हमसे हो सकता था वैसा ही गोता हमने नीचे की ओर मारा। हम पीछे की ओर मुड़कर उसके पीछे हो लिए। वहां यह मशीन हम पर निशाना नहीं साध सकती थी। कल्पना करो, हम उस मशीनी गरुड़ की पूंछ पर बैठकर उसके साथ उड़ रहे थे। वह हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता था। उसने चक्कर लगाना शुरू किया और हम भी उसके साथ घूमते गए। उसने कलाबाजी की, हमने भी की। वह अपनी पूंछ को ऐंठे बिना कुछ नहीं कर सकता था लेकिन असली गरुड़ के विपरीत उसकी पूंछ मरी मछली की तरह सख्त थी। हम जानते थे कि यदि हम इसके सामने आ गए तो हम तत्काल मारे जाएंगे।

समय बीतता जा रहा था। मैंने महसूस किया कि हम बहुत देर तक उस मशीनी गरुड़ की पूंछ पर बैठे नहीं रह सकते थे। जहरीली गैस से ढके जिस गांव को हम पीछे छोड़ आए थे वहां रिसालदार और हमारे कुछ साथी फंस

गए थे। हमको उनकी हिफाजत और सहायता के लिए उन तक संदेश पहुंचाना था।

तुरंत उसी समय मशीनी गरुड़ ने एक चालाकी की। वह अपने घर की ओर पीछे को उड़ा। हम उसकी पूंछ पर बैठकर शत्रु की सीमा में पक्के निशानेबाजों की गोली से मरने के लिए नहीं जाना चाहते थे। अब जबकि हम अपने घर के आधे रास्ते में थे और अपनी सीमा हमें नजर आ रही थी, हमने सावधानी बरतनी छोड़ दी थी, हम मशीनी गरुड़ से दूर पंख फड़फड़ाते पूरी तेजी के साथ मुड़ गए थे। जैसे ही हमने ऐसा किया तभी उस कमबख्त हिंसक पशु ने मुड़कर हमारा पीछा किया। भाग्यवश ऐसा करने में उसे थोड़ा समय लगा। अब हमें इसमें कोई संशय नहीं था कि हम अपनी सीमा के ऊपर उड़ रहे थे। ठीक उसी समय वह वायुयान हमारी बराबर की ऊंचाई पर उड़कर हमारे ऊपर आग बरसाने लगा--पुफ-पुफ, पोप, पा! अब हमको जबरदस्ती नीचे झुककर गोता मारना पड़ा। मैंने हीरा को अपने नीचे उड़ाया। इससे उसे सुरक्षा मिली। इस प्रकार हम उड़े लेकिन किस्मत में कुछ और ही लिखा था। न मालूम कहां से एक मशीनी गरुड़ आया और दुश्मन पर गोलीबारी करने लगा। अब हम इतना सुरक्षित महसूस कर रहे थे कि मैं और हीरा पंक्तिबद्ध होकर एक साथ उड़ने लगे। ठीक उसी समय एक गोली मेरे पास होकर निकली और हीरा को जाकर लगी जिससे उसके पंख टूट गए। बेचारा हीरा घायल हो गया। उसने हवा में चक्कर काटा और पतले पत्ते की भांति भाग्यवश अपनी सीमा में जा गिरा। उसे मरा हुआ देखकर मैं टेढ़ी-मेढ़ी गति से उड़ा और कभी पीछे मुड़कर उन दोनों गरुड़ों की लड़ाई को नहीं देखा।

जब मैं घर पहुंचा तो मुझे मुख्य सेनापति के पास ले जाया गया। उसने मेरी पीठ थपथपाई। तब मुझे पहली बार मालूम हुआ कि मैं एक महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर आया हूं क्योंकि जैसे ही उस बुजुर्ग ने कागज पर लिखा संदेश पढ़ा, उसने टिक-टिक करती कुछ अजीब-सी चीज को छुआ और एक भोंपू को उठाया और उसमें कुछ बड़बड़ाया। अब घोंड मुझे मेरे पिंजरे के पास लाया। वहां जैसे ही मैं बैठा, मैं हीरा के बारे में सोचने लगा। मुझे महसूस हुआ कि मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई थी। मशीनी गरुड़ घने टिड्डी दल

की तरह आकाश में उड़ रहे थे। वे तेजी से चक्कर लगाते हुए चीखते और भौंकते उड़ रहे थे। नीचे जमीन से अनगिनत फौलादी कुत्ते दनदनाते हुए गरज रहे थे। फिर अत्यंत क्रोधी चीत्कार करती हुई गंभीर आवाजें आईं मानो बाघों का पूरा जंगल पागल हो गया हो। घोंड ने मेरे सिर को थपथपाया और कहा, "तुमने आज बचा लिया।" लेकिन मुझे तो दिन दिखाई नहीं दे रहा था। यहां तो अंधकारमय धुंधला आकाश था जिसके नीचे अजगर की भांति मौत कुंडली मारकर चीख रही थी और अपनी गिरफ्त में लेकर सभी को नष्ट कर रही थी। आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि यह कितना खराब था कि जब मैं अगली सुबह कसरत करने अपने पड़ाव के पास गया तो मेरे पिंजरे से लगभग एक मील दूर सारी जमीन तोप के गोलों से अंटी पड़ी थी। और यहां तक कि चूहे और चुहिया भी यहां नहीं बच पाए थे। वे दर्जनों की संख्या में मारे गए थे और टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे। ओह, यह कितना भयंकर था। मैं बहुत उदास हो गया। अब क्योंकि हीरा मर चुका था, मैं अकेला रह गया था और एकदम थका हुआ था।

घोंड द्वारा गहन सर्वेक्षण

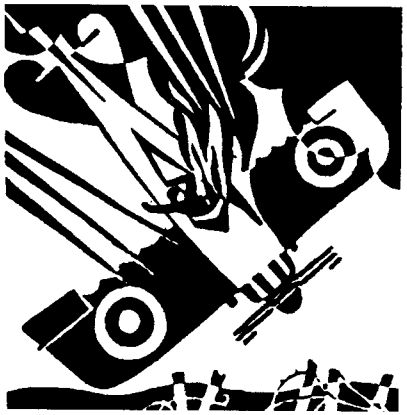

दिसंबर के लगभग पहले सप्ताह में घोंड और चित्र-ग्रीव को स्वयं टोह लगाने के लिए जाना था। जिस स्थान के लिए जाना था, वह वाईप्रेस, आर्मेन्टीयर्स और हैजब्रोक से ज्यादा दूर नहीं था। यदि आप फ्रांस का नक्शा लें और क्लाइस से दक्षिण की ओर एक सीधी रेखा खींचें तो इस रेखा के पास आप अनेक स्थानों पर ब्रिटिश और भारतीय सेना की स्थित टुकड़ियां देख सकते हैं। आर्मेन्टीयर्स के निकट भारतीय मुसलमान सैनिकों की बहुत-सी कब्रें थीं। यहां भारत के हिंदू सैनिकों की कब्रें नहीं थी, क्योंकि हिंदू अनंत काल से अपने मृत लोगों का दाह संस्कार करते आए हैं और जिनका दाह संस्कार किया जाता है उनकी कोई कब्र नहीं होती। उनकी भस्म हवा में उड़ा दी जाती है अथवा जल में प्रवाहित कर दी जाती है और उनकी याद में किसी स्थान को चिह्नित अथवा बोझिल नहीं किया जाता।

अब हम घोंड और चित्र-ग्रीव की ओर वापस आते हैं। वे हैजब्रोक के पास एक जंगल में भेजे गए थे, जो शत्रु की सीमा के पीछे था। वहां उन्हें शत्रु के बहुत बड़े भूमिगत गोला-बारूद के गोदाम की स्थिति की सही जानकारी हासिल करनी थी। घोंड और चित्र-ग्रीव ने अकेले या दोनों ने मिलकर इसे खोज लिया तो उस स्थान का सही नक्शा बनाकर उसे ब्रिटिश सेना के मुख्यालय में भेजना था। केवल इतना ही करना था। इसलिए

दिसंबर की एक साफ सुबह को चित्र-ग्रीव को वायुयान से ले जाया गया। इसने लगभग बीस मील एक जंगल के ऊपर उड़ान भरी जिसका कुछ हिस्सा भारतीय सेना के कब्जे में था और बाकी जर्मन सेना के पास था। जब वे जर्मन सीमा के पार गए तो चित्र-ग्रीव को छोड़ दिया गया। उसने समूचे जंगल के ऊपर उड़कर उस जमीन की प्रकृति की कुछ जानकारी हासिल की और वह वापस घर आ गया। ऐसा इसलिए किया गया ताकि चित्र-ग्रीव अपने रास्ते को अच्छी तरह पहचान ले और उससे जो कुछ कराने की उम्मीद थी, उसका कुछ अंदाजा उसे हो जाए।

उस दिन की दोपहर बाद जब सूर्य अस्त होने लगा, जो वहां लगभग चार बजे होता है, क्योंकि यह स्थान न्यूयॉर्क से दस डिग्री ऊपर उत्तरी अक्षांश पर है, घोंड अच्छी तरह गर्म कपड़े पहनकर और चित्र-ग्रीव को अपने कोट के अंदर छुपाकर चलने को तैयार हुआ। वे एम्बुलेंस में बैठकर उस विशाल जंगल में भारतीय सेना के दूसरे मोर्चे तक गए। गुप्तचर सेवा के कुछ सदस्यों की अगुवाई में वे घुप्प अंधेरे में मोर्चे की तरफ आगे बढ़ते गए।

शीघ्र ही उन्होंने अपने आपको दोनों सेनाओं के आमने-सामने की खाली भूमि (नो मेंस लैंड) पर पाया। लेकिन सौभाग्य से यह स्थान पेड़ों से ढका था जिसे अभी तक गोलीबारी से नष्ट नहीं किया गया था। घोंड, जो न तो फ्रेंच और न जर्मन जानता था और उसका अंग्रेजी का ज्ञान भी तीन शब्दों तक सीमित था—येस, नो और वेरी वैल। अब वही जंगल में जर्मन गोला-बारूद के गोदाम की खोज करने छोड़ा गया था जिसका साथी उसके कोट के अंदर गहरी नींद में सोया कबूतर था। सबसे पहले उसे यह याद रखना था कि वह हिमालय जैसी ठंडी जलवायु वाले देश में था, जहां सर्दियों में पेड़ नंगे होते हैं और जमीन पर पतझड़ में गिरी सूखी पत्तियां और छोटे पौधे नहीं थे, इसलिए उसे अपने आपको छुपाना आसान काम नहीं साबित हुआ। रात अंधेरी थी और मुर्दे के समान ठंडी लेकिन क्योंकि वह किसी भी जीवित मनुष्य से बेहतर तरीके से अंधेरे में देख सकता था और उसकी सूंघने की शक्ति तेज से तेज जानवर की सूंघने की शक्ति के समान होने के कारण उसे मालूम था कि सेनाओं के बीच की भूमि के पार रास्ता कैसे तय करना है। भाग्यवश उस रात पूर्वा हवा चल रही थी।

पेड़ों के तनों के मध्य रास्ता बनाते हुए वह यथासंभव तेजी से आगे बढ़ता गया। जर्मन सेना की एक टुकड़ी के वहां से गुजरने की जानकारी उनके आगमन के कुछ मिनटों पहले ही उसने नाक से सूंघकर जान ली थी। एक तेंदुए की भांति वह लपककर पेड़ पर चढ़कर इंतजार करने लगा था। उन्हें आवाज की थोड़ी-सी भी कंपन सुनाई नहीं दी। यदि दिन की रोशनी रही होती तो वे उसे खोज सकते थे, क्योंकि पाले से ढकी जमीन पर नंगे पांव चलने से, उनसे निकले खून के निशान पीछे छूट गए थे।

एक बार तो वह बाल-बाल बचा। जैसे ही वह पेड़ पर चढ़कर एक डाल पर बैठा—अपने नीचे से दो जर्मन संतरियों के निकल जाने के लिए, तभी एक अन्य डाल से किसी ने उसके कान में खुसुर-फुसुर की। वह तुरंत जान गया कि वह कोई जर्मन निशानेबाज था लेकिन उसने अपना सिर झुकाकर उसकी बात सुनी। उसने कहा, 'रात्रि नमस्कार' और फिर उसने पैर नीचे की ओर बढ़ाए और पेड़ के नीचे उतर गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने घोंड को अपना साथी सैनिक समझा था, जो उसे छुट्टी देने आया था। थोड़ी देर बाद घोंड जमीन पर उतर आया और उस जर्मन सैनिक के पैरों के निशानों को देखते हुए उसकी तरफ चलने लगा था। हालांकि घना अंधेरा था, फिर भी उसके नंगे पैर यह महसूस कर सकते थे कि उससे पहले जमीन पर मनुष्य के पैर कहां-कहां पड़े थे। वह काम उसके लिए कठिन नहीं था।

अंत में वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहां बहुत-से लोगों के शिविर लगे हुए थे। उसे इनके इर्द-गिर्द धीरे से चक्कर लगाते हुए आगे बढ़ना पड़ा। उसे अपने पैरों के नीचे एक अजीब-सी आवाज सुनाई दी। वह रुककर सुनने लगा। वह एक पहचानी-सी आवाज थी, इसे समझने में कोई गलती नहीं हुई। उसने इंतजार किया फिर किसी जानवर के कदमों की आहट हुई—पैटर-पट-पैटर। घोंड उस आहट की तरफ बढ़ा और फिर दबी-सी आवाज में गुर्राहट हुई। डरने के बजाय उसके दिल में खुशी छा गई। जो आदमी भारत में बाघों से भरे जंगलों में रातें बिता चुका हो वह जंगली कुत्ते की गुर्राहट से डरने वाला नहीं था। अतिशीघ्र दो लाल-लाल आखों ने उसकी दृष्टि का स्वागत किया। घोंड ने वहां खड़े होकर अपने आगे हवा में सावधानी से सूंघा और उसे कुत्ते के आसपास किसी भी मानुस की तनिक सी भी गंध महसूस

नहीं हुई। बेचारा कुत्ता जंगली हो चुका था। कुत्ते ने भी हवा में सूंघना शुरू किया, यह जानने के लिए कि उसका सामना कैसे प्राणी से हो रहा था, क्योंकि घोंड आम इंसानों की तरह डर की गंध नहीं छोड़ रहा था और इसीलिए कुत्ता उसके नजदीक आकर उस पर अपना मुंह रगड़-रगड़कर तेजी से सूंघने लगा। सौभाग्य से, घोंड चित्र-ग्रीव को कुत्ते की नाक के पास ले गया और पक्षी की गंध हवा में फैल गई। इससे जंगली कुत्ता समझ गया कि उसके सामने खड़ा व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि एक मित्र भाव वाला निडर साथी है। उसने अपनी दुम हिलाई और चिल्ल-पों करने लगा। घोंड ने अपना हाथ उसके सिर पर फेरने के बजाय कुत्ते की आंखों के सामने देखने और सूंघने के लिए कर दिया। थोड़ी देर तक असमंजस की स्थिति बनी रही। क्या कुत्ता हाथ को काट खाएगा? थोड़ा समय और बीता, फिर कुत्ता हाथ चाटने लगा। अब वह खुशी से घुरघुराने लगा। घोंड ने मन ही मन में सोचा–'तो यह शिकारी कुत्ता बिना मालिक का है! शायद इसका मालिक मारा गया है। बेचारा भेड़िये की तरह जंगली बन गया है। जर्मन सेना की रसद से अपना गुजारा कर रहा है, क्योंकि स्पष्ट है कि अभी तक इसे मांस खाने की आदत नहीं पड़ी है। यह अच्छा ही है।'

घोंड ने धीरे से सीटी बजाई, जो सभी युगों के, चाहे वे किसी देश के हों, सभी शिकारियों के आदेश का संकेत थी। इसका मतलब था–'रास्ता दिखाओ।' और कुत्ता आगे चलने लगा। वह जर्मन सेना के सभी शिविरों से बचाता हुए ऐसी चतुराई से ले गया जैसे हिरन बाघों के झुंड से सफाई से निकल जाता है। घंटों के भ्रमण के बाद वे अपने लक्ष्य तक पहुंच गए। इस बारे में कोई गलती नहीं थी कि घोंड ने न केवल जर्मन गोला-बारूद का गोदाम खोज लिया था बल्कि जर्मन खाद्य-आपूर्ति का पता भी लगा लिया था। उसका मार्गदर्शक, जंगली कुत्ता जमीन में एक गुप्त सूराख के रास्ते अंदर गया और फिर आधे घंटे बाद एक बछड़े की टांग को मुंह में दबाए बाहर आया। उसमें से आती गंध से घोंड जान गया था कि वह गो-मांस था। पाले से ठंडी जमीन पर बैठकर कुत्ता अपना रात का भोजन करने लगा और घोंड अपने जूते पहनने लगा था, जिन्हें वह सारी रात अपने कंधे पर लटकाकर लाया था और फिर उसने ऊपर और इधर-उधर देखकर छानबीन

की। तारों की स्थिति देखकर वह बता सकता था कि वह कहां पर था। उसने वहां थोड़ी देर इंतजार किया।

धीरे-धीरे दिन निकलने लगा। उसने अपनी जेब से कम्पास निकाला। निश्चय ही वह आश्वस्त था कि जहां वह है, उस स्थान का नक्शा बना सकता है। ठीक उसी समय कुत्ता उछला और अपने दांतों से घोंड के कोट को पकड़ लिया। उस व्यक्ति के मन में कोई संदेह नहीं था कि कुत्ता फिर से उसका मार्गदर्शन करना चाहता था। वह आगे-आगे दौड़ने लगा और घोंड उतनी ही तेजी से उसका पीछा करता गया। जल्दी ही वे एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए जो घनी कांटेदार झाड़ियों और जमी हुई लताओं से ढका हुआ था। उनमें से निकलकर रास्ता बनाना किसी जानवर के लिए ही संभव था। बहुत-से पैने कांटों के नीचे से पेट के बल खिसकते हुए कुत्ता गायब हो गया था। अब घोंड ने एक रेखाचित्र बनाया जिसमें तारों की स्थिति और उस क्षेत्र का सही ठिकाना दिखाया गया था और फिर उस रेखाचित्र को चित्र-ग्रीव के पंजे में बांधकर उसे वहां से उड़ा दिया था। उसने कबूतर को उड़कर पेड़ों पर बैठकर कुछ क्षण आराम करते और अपने पंखों को चोंच से संवारते हुए देखा। फिर उसने अपने पंजे पर बंधे संदेश पर चोंच मारी, शायद यह निश्चित करने के लिए कि संदेश कसकर बांधा है। फिर उड़कर सबसे ऊंचे पेड़ पर जाकर बैठ गया और वहां की भूमि की स्थिति की जांच करने लगा। उसी क्षण जब घोंड ऊपर की ओर देख रहा था तभी उसे लगा कि कोई उसे खींच रहा है। उसने नीचे पैरों की ओर देखा तो पता चला कि कुत्ता उसे कांटों के नीचे के सूराख की ओर घसीट रहा था। घोंड नीचे झुका, इतना नीचे ताकि वह अपने मार्गदर्शक के पीछे चल सके, उसी क्षण उसने ऊपर पंखों की फड़फड़ाहट सुनी और फिर राइफलों की गूंज। उसे उठकर यह जांच करने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि चित्र-ग्रीव जीवित था या मारा गया। वह कांटों के नीचे भीतर को खिसकता गया और उसे महसूस हुआ कि उसका पेट रीढ़ की हड्डी से चिपक गया था और दोनों को मजबूती से धरती के साथ सिल दिया था। वह तब तक अपने आपको धकियाता और खिसकाता रहा जब तक कि अचानक वह नीचे लुढ़ककर आठ फीट नीचे अंधेरे गड्ढे में न जा गिरा। वहां घुप्प अंधेरा था लेकिन पहले इसे घोंड नहीं

जान पाया था, क्योंकि वह अपने सिर पर आई खरोंचों को सहलाने में व्यस्त था। जब अंत में उसने यह जानने की कोशिश की कि वह कहां पर है तो वह समझ पाया कि वह जमे हुए पानी के गड्ढे के ऊपर बैठा हुआ होगा, जो चोरों के अभेद्य अड्डे की तरह कांटेदार झाड़ियों से ढका हुआ था। यहां तक कि जब सर्दियों में टहनियों और लताओं पर पत्ते तक नहीं होते, वहां दिन में भी घुप्प अंधेरा था। कुत्ता अभी तक उसके साथ था और साफ तौर पर उसे सुरक्षित स्थान पर खींच लाया था। अपना दोस्त पाकर बेचारा कुत्ता इतना खुश था कि वह घोंड के साथ खेलना चाहता था। लेकिन घोंड को तो नींद आ रही थी और नजदीक से आते बंदूकों के शोर के बावजूद वह पूरी तरह नींद में सो गया था।

लगभग तीन घंटे बाद अचानक कुत्ता भौंकने और जोर से चीखने लगा, मानो उस पर पागलपन सवार हो गया हो। उसके बाद धरती धमाकों की तीखी आवाज से थर्राने लगी। इसको बर्दाश्त न कर पाने पर कुत्ता घोंड के कोट की बाजुओं को खींचता रहा। धमाकों पर धमाके उठते गए और जहां घोंड छुपा था, वह स्थान वास्तव में झूले की तरह हिलने लगा। लेकिन वह उस स्थान को छोड़ नहीं पा रहा था। केवल उसने अपने मन ही मन में कहा, 'ओ, चित्र-ग्रीव, तुम एक अतुलनीय पक्षी हो, तुमने अपना काम कितनी अच्छी तरह किया है। तुमने चेरी जैसे चेहरे वाले मुख्य सेनापति को संदेश पहुंचा दिया है और यह उसका धमाकेदार जवाब है। तुम पंखों वाले प्राणियों में मोती हो।' इस तरह वह बड़बड़ाता रहा जबकि हवाई जहाजों ने बम गिराकर जर्मनों के गोला-बारूद के गोदाम में आग लगा दी।

तब फिर वह कुत्ता, जो घोंड के कोट की बाजू को पकड़कर बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था, वह गुर्राया और जैसे कोई तेज बुखार में कंपकंपाता है, उसी तरह कांपने लगा और तुरंत उसी समय कोई चीज हवा में कड़कड़ाई और धड़ाम से पास में आकर गिरी और बेचारा कुत्ता भयंकर चीख के साथ अपने छुपने के स्थान से बाहर पटक दिया गया। घोंड के साथ भी वैसा ही हुआ लेकिन काफी देर के बाद। क्योंकि कांटों के नीचे वह मुश्किल से आधा रास्ता सरक पाया था कि एक कान फाड़ने वाले धमाके से उसके नीचे की धरती फटती-सी महसूस हुई, और उसके कंधे में तेज पीड़ा

की चुभन होने लगी। उसे ऐसा महसूस हुआ कि किसी आसुरी शक्ति ने उसे उठाकर तेजी से बाहर जमीन पर ला पटका हो। कुछ क्षणों के लिए उसकी आंखों के सामने प्रकाश के लाल-लाल हीरे नाचने लगे थे और उसके बाद एकदम शांत अंधेरा।

एक घंटे बाद जब उसे होश आया तो उसे सबसे पहली जानकारी हिंदुस्तानी आवाजों की हुई। अपने देश की भाषा को अधिक स्पष्ट रूप से सुनने के लिए उसने अपना सिर ऊपर उठाने की कोशिश की। उसी समय उसे हजारों सर्पों के डंक के समान पीड़ा की टीस महसूस हुई। अब उसके मन में कोई संदेह नहीं रहा कि शायद उसे गोली लगी थी और वह गंभीर रूप से घायल हो चुका था। फिर भी उसकी आत्मा अपने पास हर बार हिंदुस्तानी भाषा सुनकर प्रसन्न थी, क्योंकि इसका मतलब था कि अब हिंदुस्तान की सेना का उस जंगल पर कब्जा हो चुका था, न कि शत्रु सेना का। उसने अपने आपसे कहा, 'आहा, मेरा काम पूरा हुआ, अब मैं चैन से मर सकूंगा।'

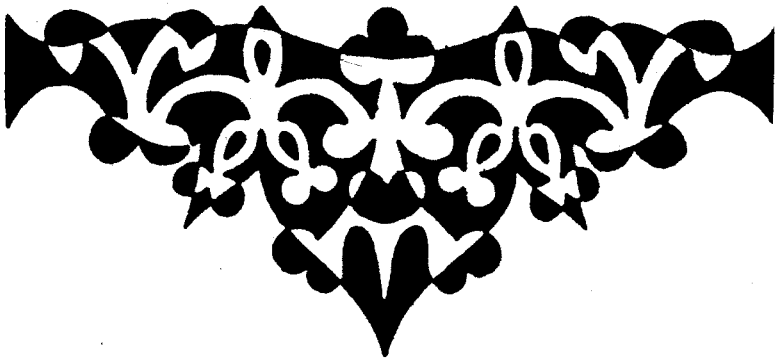

संदेश ले जाने की कहानी, चित्र-ग्रीव की जुबानी

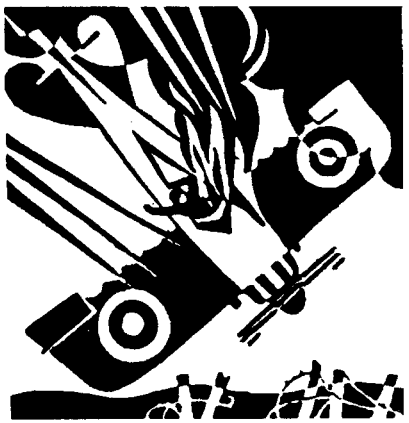

घटनापूर्ण दिन से पहली रात मैं बहुत कम सो पाया था। हालांकि मैं घोंड के कोट के अंदर था लेकिन उसे इस बात की जानकारी नहीं थी कि मैं जगा हुआ था। आप ऐसे व्यक्ति के दिल के नजदीक नहीं सो सकते थे जो हर आधे घंटे बाद हिरन की तरह दौड़ता हो, गिलहरी की तरह पेड़ों पर चढ़ता हो अथवा अजनबी कुत्ते के साथ दोस्ती करता हो, हर बार घोंड का दिल इतनी जोर से धड़कता था कि उसे आप कई गज दूर से सुन सकते थे। उसने एक चीज और की जो इतने नजदीक होते हुए नींद के लिए सहायक न थी—वह उस रात रुक-रुककर जोर से सांस लेता था। कभी वह गहरी सांस लेता था और कभी इतनी तेजी से जैसे चूहा बिल्ली के डर से भागता है। ऐसे व्यक्ति के कोट के अंदर सोना मेरे लिए ठीक वैसा ही था जैसा आकाश में आई आंधी में सोने की कोशिश करना।

फिर वह कुत्ता! क्या मैं उसे कभी भुला पाऊंगा? जब पहली बार घोंड ने उससे मेल-मिलाप किया तो मैं डर गया था लेकिन वह मेरे शरीर की गंध नहीं सूंघ पाया था और नीचे से आती हवा ने मुझे बताया कि किसी न किसी तरह साफ गंध वाले भूत के समान वह हमसे दोस्ती करने आया था। उसके पैरों की चाल मैं सारी जिंदगी याद रखूंगा। वह बिल्ली की भांति कोमलतापूर्वक चलता था। वह एक जंगली कुत्ता रहा होगा, क्योंकि सभ्य समाज में रहने वाले कुत्ते शोर मचाते हैं। वे शांतिपूर्वक चल भी नहीं सकते। आदमी की संगत भ्रष्ट करने वाली होती है, प्रत्येक प्राणी सिवाय बिल्लियों के मानव समाज की संगत में लापरवाह और शोर मचाने वाला बन जाता है, लेकिन वह कुत्ता बिलकुल जंगली था। वह बिना शोर मचाए चलता था। वह बिना कोई आवाज किए सांस लेता था। फिर मैंने किस तरह जाना कि वह वहां मौजूद था? यह उस गंध से जाना जो जमीन से उठकर मेरे नासिका पुटों को छू रही थी।

अनिद्रा और अत्यंत बेचैनी-भरी रात के बाद घोंड ने मुझे छोड़ दिया था और जहां उसने मुझे छोड़ा था, उस जगह को मैं मुश्किल से पहचान पा रहा था। इसलिए अपनी भौगोलीय स्थिति को जानने के लिए मैं पेड़ों पर उड़ने लगा जिससे मेरे अंदर भय पैदा होने लगा। क्योंकि अब दिन निकल आया था, पेड़ों पर आंखें छाई हुई थीं! अजीब-सी नीली-नीली आंखें हर दिशा में नलिकाओं के माध्यम से देख रही थीं। उनके पीछे आदमी बैठे हुए थे और एक आदमी तो जहां बैठा था उससे लगभग एक फीट दूर पेड़ की चोटी पर बैठा देख रहा था। हमारे आसपास फौलादी कुत्तों के भौंकने की आवाज के कारण वह मेरे आने की आहट नहीं सुन सका था।

लेकिन जैसे ही मैं ऊपर उड़ा, उसने मुझे देख लिया। मैंने महसूस किया कि यदि मैंने जल्दी नहीं की और अपने आपको अन्य पेड़ों में नहीं छुपाया तो वह मुझे गोली मार देगा और उसने कई बार गोली दागी लेकिन मैं एक मुर्दे के पीछे छुपा था, जो इतना मोटा था जैसे किसी संन्यासी के उलझे बाल होते हैं। मैंने कूद-कूदकर पेड़ों पर जाने का निश्चय किया और जब तक खतरे के आसार खत्म न हो जाएं तब तक न उड़ने का निश्चय किया। इस तरह कूद-कूदकर लगभग आधा मील जाने में मैंने कोई कम समय नहीं बिताया था। अंत में मेरे पंजे बहुत थक गए थे और खतरा हो या न हो, मैंने उड़ने की ठान ली थी।

सौभाग्य से किसी ने मुझे उड़ते हुए नहीं देखा था। हवा में लंबा चक्कर काटकर मैं बहुत ऊंचाई पर उठ गया था। वहां से जंगल के बड़े-बड़े पेड़ छोटे-छोटे पौधे-से दिख रहे थे, तब मैंने विभिन्न दिशाओं की ओर देखा। पूर्व दिशा में बहुत दूर प्रातःकालीन आकाश में सोने के रथों के समान, वायुयानों

का झुंड उड़ता हुआ आ रहा था। उसका मतलब था कि यदि मैं ज्यादा देर रुका तो शत्रु मेरे पास आ जाएगा। इसलिए मैंने पश्चिम दिशा की ओर उड़ना शुरू कर दिया। इससे ऐसा लगा जैसे पेड़ों पर बैठे हजारों निशानेबाजों को मुझ पर गोली दागने का संकेत मिल गया हो।

मेरा विचार है कि जब मैं उनके ऊपर पेड़ों पर चक्कर लगा रहा था तब जर्मन सैनिक यह निश्चित नहीं कर पाए होंगे कि मैं उनका संदेशवाहक था या नहीं, लेकिन जैसे ही निशानेबाजों ने मुझे पश्चिम दिशा की ओर उड़ते देखा तो वे तुरंत समझ गए थे कि मैं उनका संदेशवाहक नहीं था; तो उन्होंने मुझे नीचे गिराने के लिए गोलियां दागीं, यह जानने के लिए कि मैं अपने पंजे में क्या संदेश ले जा रहा था।

मैं साफ सर्दी की हवा में बिना जमे अधिक देर ऊपर नहीं जा सकता था और हर हालत में, मैं यह भी नहीं चाहता था कि शत्रु के जहाज मुझ तक पहुंच जाएं। मैंने फिर से पश्चिम की ओर उड़ान भरी और फिर से गोलियों की बौछार मेरे आगे मृत्यु-कंटकों के समान होने लगी। मेरे पास कोई विकल्प नहीं बचा था, या तो बीच में चीरकर रास्ता बनाना था अथवा आते हुए जहाजों द्वारा मरना, जो कि इतने नजदीक थे कि उनमें बैठे आदमियों को मैं स्पष्ट देख सकता था। इसलिए मैंने पश्चिम की ओर तेज उड़ान भरी थी। सौभाग्य से मेरी पूंछ, जो लगभग एक महीना पहले घायल हो गई थी, अब तक पूरी तरह अपने सामान्य आकार की हो गई थी। बिना उस पतवार के मेरा काम दुगना कठिन हो जाता। जैसे-जैसे मैं अपनी सीमा की ओर बढ़ता गया, गोलीबारी बढ़ती गई। अब इस बात में कोई संदेह नहीं रहा कि सारे निशानेबाज और दूर खंदकों में बैठे सैनिक मुझ पर ही निशाना साध रहे थे। लेकिन मैं टेढ़ा-मेढ़ा चक्करदार और कलाबाजी करता हुआ उड़ता रहा और वास्तव में मैंने गोलीबारी की बढ़ती हुई बौछार को चकमा देने के लिए वे सभी चाल चलीं और कौतुक दिखाए, जिन्हें मैं जानता था, लेकिन उस टेढ़ी-मेढ़ी चाल आदि के काम में मेरा काफी समय बरबाद हो गया था। इतने में एक हवाई जहाज आक्रमण करने मेरे बहुत नजदीक आ गया और ऊपर से और पीछे से अंधाधुंध आग बरसाने लगा था। अब आगे की ओर बढ़ने के अलावा और कोई चारा नहीं था, इसलिए तेजी से आगे बढ़ता गया

था। ओह, मैं इतना तेज उड़ा जैसे तीव्रतम तूफान। फिर फट-फट-फट मुझे गोली लगी! जांघ के नीचे से मेरी टांग टूट गई और इसके साथ संदेश भी मेरे नीचे लटक गया था, जैसे बाज़ के एक पंजे से कोई चिड़िया लटक जाती है। आह, कितनी पीड़ा! लेकिन मेरे पास उसके बारे में सोचने का समय नहीं था, क्योंकि वह हवाई जहाज अभी भी मेरे पीछे पड़ा हुआ था और मैं पहले से भी अधिक तेजी से उड़ता गया था।

आखिर अपना मोर्चा दिखाई देने लगा था। मैं नीचे झुककर उड़ने लगा था। वह मशीन भी नीचे झुकी। मैंने कलाबाजी की कोशिश की लेकिन असफल रहा। अपनी घायल टांग के कारण मैं कोई कौतुक नहीं कर पाया था। फिर पा-पा, पट-पटट···मेरी पूंछ पर आघात हुआ और पंखों की बौछार नीचे की ओर होने लगी, जिसके कारण खंदकों में बैठे जर्मन कुछ क्षणों के लिए आंखों से ओझल हो गए। अतः मैं अपने मोर्चे की ओर तिरछी उड़ान भरता हुआ नीचे की तरफ गया और चक्कर काटता हुआ इससे आगे निकल गया। तब मैंने एक अजीब दृश्य देखा। हमारे सैनिकों ने उस हवाई जहाज पर हमला कर दिया था। वह डगमगाया, झटका खाया और नीचे आ पड़ा था। लेकिन जलते हुए नीचे गिरने से पहले उसने बहुत बड़ा अनिष्ट कर दिया था। उसने मेरे दाएं पंख पर प्रहार करके उसे तोड़ दिया था। उसमें आग लगते और नीचे गिरता हुआ देखकर मुझे खुशी हुई थी। मेरी पीड़ा बढ़ती जा रही थी। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बीस बाज़ मुझे चीरकर टुकड़े-टुकड़े कर रहे हों। लेकिन मेरी नस्ल के देवता को धन्यवाद कि मैं पीड़ा अथवा खुशी के कारण बेहोश हो गया और मुझे महसूस हुआ जैसे पहाड़ के समान वजन मुझे नीचे खींचे जा रहा था।

उन्होंने मुझे कबूतरों के अस्पताल में एक महीना रखा। हालांकि मेरे पंख की मरम्मत कर दी गई थी और टांग भी अपनी सही जगह पर सी दी गई थी, लेकिन वे मुझे फिर से उड़ने लायक नहीं बना पाए थे। हर बार जब मैं अपने कान ऊपर उचकाता तब न जाने क्यों उनमें गोलियों का भयंकर शोर सुनाई देता था और मेरी आंखों को लपलपाती गोलियां के सिवाय और कुछ नजर नहीं आता था। मैं इतना डर गया था कि तुरंत जमीन पर गिर पड़ता था। आप कह सकते हैं कि मैं बंदूकों की काल्पनिक आवाजें सुनता

था और गोलियों की काल्पनिक बौछार देखता था, शायद ऐसा हो, लेकिन मुझ पर तो उनका असर बिलकुल असली गोलियों जैसा ही था। मेरे पंखों को लकवा मार गया था और मेरी पूंछ भय के कारण जकड़ गई थी।

इसके अतिरिक्त मैं बिना घोंड के उड़ना नहीं चाहता था। मैं ऐसे व्यक्ति के हाथ से क्यों उछलता जिसका रंग गेहुंआ नहीं था और जिसकी आंखें नीली थीं? ऐसे व्यक्तियों को मैं पहले नहीं जानता था। हम कबूतर हर किसी बाहरी व्यक्ति को नहीं अपनाते हैं। आखिर में वे एक पिंजरे में बंद करके अस्पताल लाए और मुझे घोंड के पास छोड़ गए। जब मैंने घोंड को देखा तो उसे मुश्किल से पहचान पाया क्योंकि उसकी आंखों में डर समाया हुआ था। हां, एक बार वह भी पूरी तरह से भयभीत नजर आता था। मैं जानता हूं, जैसे सभी पशु और पक्षी जानते हैं कि डर क्या चीज होती है। मुझे घोंड के लिए अफसोस महसूस हुआ था।

लेकिन मुझे देखते ही उसकी आंखों से डर का परदा हट गया और वे खुशी से चमक उठीं। वह अपने बिस्तर में उठकर बैठ गया, मुझे अपने हाथ में लेकर मेरे उस पंजे को चूमने लगा जिसमें उसने संदेश को बांधा था। फिर उसने मेरे दाहिने पंख को थपथपाया और कहा, "स्वयं अत्यंत कष्ट में होते हुए भी, हे दिव्य पंखों के समूह वाले चित्र-ग्रीव, तुमने अपने मालिक का मान रखा है। उसका संदेश मित्रों के पास लाकर तुमने सारे कबूतरों के लिए गौरव हासिल किया है और संपूर्ण भारतीय सेना को गौरव प्रदान किया है।"

उसने दोबारा मेरा पंजा चूमा। उसकी विनम्रता से मैं पसीज गया और उसे देखकर मैं भी विनम्र हो गया। अब मुझे कोई अहंकार नहीं था, यह याद करके कि किस प्रकार मैं एक भारतीय ब्रिगेड की खंदक में गिर गया, जब हवाई जहाज ने मेरा पंख तोड़ दिया था और यदि मैं जर्मन खंदक में गिर जाता तो वे मेरे पंजे से संदेश को छुड़ा लेते और जहां घोंड उस जंगली कुत्ते के साथ छुपा था, उस जंगल को चारों तरफ से घेर लेते–फिर वे क्या करते? यह सोचकर मैं कांपने लगा था। हाय, बेचारा कुत्ता, हमारा सच्चा मित्र और रक्षक, अब वह कहां होगा?

घृणा और भय का उपचार

घोंड ने कहानी शुरू की–वह कुत्ता युद्ध की शुरुआत में अपने फ्रांसीसी मालिक से बिछुड़ गया था। संभवतः उस व्यक्ति को जर्मन सैनिकों ने गोली मार दी थी और उसके बाद उसने अपने मालिक का घर लुटते देखा और तबेले में आग को लगते देखा था। इस आतंक से वह वहशी हो गया और दूर जंगल में भाग गया, जहां वह मनुष्यों की नजर से दूर छुपकर एक घनी कंटीली झाड़ी के नीचे रहने लगा था। जो एक झोंपड़ी की तरह खुली और इतनी अंधेरी थी जितना मकबरे का अंदरूनी हिस्सा। शायद वह भोजन की तलाश में सिर्फ रात में ही निकलने की हिम्मत कर पाता था और नस्ल से शिकारी कुत्ता होने के कारण उसमें जंगलीपने की सारी विशेषताएं दिन-रात जंगल में निर्वासित रहने के कारण वापस आ गई थीं।

जब वह मेरे संपर्क में आया तो उसे अचंभा हुआ, क्योंकि मैं डरा नहीं था। मैंने डर की कोई गंध भी नहीं छोड़ी थी। महीनों बाद मैं पहला व्यक्ति रहा हूंगा जिसके डर ने हमला करने के लिए उसे भयभीत नहीं किया। निश्चय ही उसने सोचा कि उसकी तरह मैं भी भूखा था और भोजन की तलाश में था। इसलिए वह मुझे जर्मन खाद्य डिपो की ओर ले गया और जमीन के नीचे के रास्ते से रेंगता हुआ खाने-पीने की वस्तुओं के विशाल भंडार तक पहुंच गया था और वहां से मेरे लिए थोड़ा मांस ले आया था।

मैंने निष्कर्ष निकाला था कि नीचे तहखाने में कई कमरे होंगे जिनमें जर्मन लोगों ने न केवल खाद्य सामग्री बल्कि तेल और विस्फोटक पदार्थ भी रखे होंगे। मैंने ऐसा सोचकर ही कार्यवाही की थी। ईश्वर को धन्यवाद कि मेरा अंदाजा सही निकला। अब हमें विषय बदलना चाहिए।

आपको सच बताऊं, मैं युद्ध के बारे में बात करने से घृणा करता हूं। देखो, हिमालय की चोटियां सांध्यकालीन सूर्य की किरणों से प्रकाशमान हो रही हैं। एवरेस्ट सोने के कुठला के समान दीप्तिमान है, आओ, प्रार्थना करें।

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
कोलाहलात्मा शांतिर्गमय।

ध्यान संपूर्ण होने के पश्चात् घोंड चुपचाप हमारे घर से बाहर निकल गया। वह कलकत्ता से सिंहलीला के पास बौद्धमठ की यात्रा पर निकला था। लेकिन वहां उसकी साहसिक यात्रा के बारे में बताने से पहले मैं पाठकों को यह बताना चाहूंगा कि फ्रांस के युद्ध-क्षेत्र से वह हमारे घर कैसे पहुंचाया गया था।

फरवरी 1915 के आखिर में बंगाल रेजीमेंट को यह अच्छी तरह मालूम हो गया था कि अब चित्र-ग्रीव उड़ नहीं सकता। घोंड, जो उसे लेकर आया था, वह सैनिक नहीं था। बाघ अथवा चीते के अतिरिक्त उसने अपने जीवन में कभी किसी की हत्या नहीं की थी और अब वह बीमार भी था, इसलिए उन दोनों को असमर्थ मानकर एक साथ वापस भारत भेज दिया गया था। वे मार्च के महीने में कलकत्ता पहुंचे थे। उन्हें देखकर मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर सका था। घोंड भी उतना ही भयभीत लग रहा था जितना चित्र-ग्रीव; और दोनों ही बहुत बीमार दिख रहे थे।

मेरा कबूतर मेरे हवाले करने के पश्चात् हिमालय पर जाने से पहले घोंड ने कुछ जरूरी बातें समझाई थीं–

"मेरा घृणा और भय का उपचार कराना आवश्यक है। मैंने आदमी की आदमी द्वारा बहुत मार-काट देखी थी। मुझे अशक्त समझकर घर भेज दिया था, क्योंकि मैं एक दारुण बीमारी से पीड़ित हूं–वह बीमारी है भय की।

अतः मुझे अकेले ही इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए प्रकृति की शरण में जाना है।"

इसलिए वह सिंहलीला में बौद्धमठ गया, वहां प्रार्थना और ध्यान के द्वारा अपना उपचार करने के लिए। इसी बीच मैंने चित्र-ग्रीव का उपचार करने की भरपूर कोशिश की। उसकी पत्नी और वयस्क बच्चे उसकी सहायता करने में असफल रहे। उसके बच्चों को तो वह बिलकुल अजनबी-सा लगा, क्योंकि उसने उनकी कोई परवाह नहीं की, लेकिन उसकी पत्नी ने उसमें अच्छी-खासी दिलचस्पी दिखाई हालांकि वह भी उसे उड़ाने में सफल न हो सकी। वह लगातार कुछ भी करने के लिए मना करता रहा सिवाय थोड़ा-बहुत कूदने के। और ऊपर हवा में जाने के लिए उसे कुछ भी नहीं उकसा पाया। मैंने कबूतरों के एक अच्छे डॉक्टर से उसके पंखों और टांगों की जांच करवाई। उसने बताया कि उन अंगों में कोई खराबी नहीं थी। उसकी हड्डियां और दोनों टांगें मजबूत थीं फिर भी वह उड़ता नहीं था। वह अपना दाहिना पंख भी नहीं खोलता था और जब भी वह दौड़ या कूद नहीं रहा होता था तो उसे एक पैर के ऊपर खड़े होने की आदत-सी पड़ गई थी।

मुझे उससे कोई आपत्ति नहीं होती, यदि वह और उसकी पत्नी उस वक्त घोंसला बनाने की तैयारी नहीं करते। अप्रैल के मध्य में, जब गर्मियों की छुट्टी शुरू होती है, उस समय मुझे घोंड का पत्र मिला, उसमें लिखा था–'तुम्हारे चित्र-ग्रीव को अभी घोंसला नहीं बनाना चाहिए। यदि अंडे दे दिए हैं तो उन्हें नष्ट कर देना। किसी भी हालत में उन्हें अंडे नहीं सेने देना। चित्र-ग्रीव जैसा बीमार पिता, जो भय की बीमारी से ग्रस्त है, वह दुनिया को कमजोर और बीमार बच्चों के सिवाय कुछ नहीं दे सकता। उसे यहां ले आओ। पत्र समाप्त करने से पहले, मुझे कहना है कि मैं ठीक हूं। चित्र-ग्रीव को जल्दी ले आओ, पवित्र लामा उसको और तुमको देखना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त पांचों अबाबील इस हफ्ते दक्षिण से वापस आ गए हैं। वे निश्चय ही तुम्हारे पालतू पक्षी का जी बहला देंगे।

मैंने घोंड की सलाह मान ली। मैंने एक पिंजरे में चित्र-ग्रीव को और दूसरे में उसकी पत्नी को रखा, और उत्तर की ओर निकल पड़ा।

पिछली शरद ऋतु से अब वसंत ऋतु में पहाड़ियां कितनी अलग दिख

रही थीं। किसी अत्यावश्यक कारण से मेरे माता-पिता ने अपना डेंटम का मकान आम तौर पर खोलने के बजाय महीने पहले खोल दिया था। अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक वहां रहने के बाद, मैंने अपने साथ चित्र-ग्रीव को लिया और खच्चरों के तिब्बती कारवां के साथ सिंहलीला के लिए चल पड़ा था। उसकी पत्नी को वहीं पीछे छोड़ दिया था ताकि वह फिर उड़ सका तो अपनी पत्नी के पास लौट के आ सके। ऐसा करना उसके उपचार के लिए आवश्यक था। वह उसके लिए असरदार आकर्षण सिद्ध हो सकती थी। घोंड को उम्मीद थी कि वह ऐसा कर सकता था, क्योंकि वापस आकर उसे नये अंडे सेने में अपनी पत्नी की सहायता करनी थी, हालांकि हमारे आने के एक दिन बाद मेरे माता-पिता ने अंडे नष्ट कर दिए थे। क्योंकि हम बीमार और अपभ्रष्ट बच्चे नहीं चाहते थे, जो बड़े होकर चित्र-ग्रीव का नाम शर्मसार करें।

मैं अपने कबूतर को कंधे पर रखकर ले गया, जहां वह सारे दिन बैठा रहा था। रात के समय हमने उसे पिंजरे में बंद करके रखा था जो उसके लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ। पहाड़ की हवा और प्रकाश लगातार बारह घंटे मिलने से उसके शरीर में सुधार हुआ था। फिर भी उसने एक बार भी मेरे कंधे से उड़ने की कोशिश नहीं की और अपनी पत्नी की अंडे सेने में सहायता के लिए वापस लौटने की कोशिश भी नहीं की।

वसंत ऋतु में हिमालय की छटा अनुपम होती है। जमीन सफेद वनफ्शाओं से झिलमिला रही थी। भीगी हुई तंग घाटियों में जहां-तहां पकी हुई मकोय (रसभरी) छितराई हुई थीं और हरे-हरे पत्तों वाले पौधे अपनी विशाल भुजाएं फैलाकर मानो उन्हें अपने आलिंगन में लेना चाहती थीं, जबकि पहाड़ियां कीमती पत्थरों की तरह नीले आकाश के गले में पड़ी हुई थीं। कभी-कभी हम घने जंगलों के बीच से गुजरते थे, जहां अविकसित (ओक) शाहबलूत, विशाल एल्म वृक्ष, देवदार और चेस्टनट आदि इतनी अधिक संख्या में उगे हुए थे कि उनकी शाखाओं ने सूर्य की सारी रोशनी रोक रखी थी। यहां पेड़, पेड़ के विरुद्ध, शाखा, शाखा के विरुद्ध और जड़ें, जड़ों से लड़ती हुई रोशनी और जीवन के लिए संघर्ष कर रही थीं। उनके नीचे पेड़ों के अंधेरे में हिरन काफी लंबी घनी घास और कोंपले चर रहे थे। अपनी बारी आने पर ये सभी बाघों और चीतों द्वारा खाए जाने थे। हर

जगह जीव-जंतुओं का बाहुल्य था और उससे अधिक पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों के बीच जीने के लिए संघर्ष की उत्कटता थी। यही है जीवन का परस्पर-विरोधी स्वभाव।

जंगल के अंधकार से जब हम बाहर निकले और खुला आकाश देखा तो उष्णकटिबंधीय धूप हमारी असहाय आंखों में हीरे की कनी-सी चुभने लगी थी। ड्रैगन मक्खियों (चिउरा) की स्वर्णिम कंपन हवा में छाई हुई थी, तितलियां, गौरैया, गीत गाने वाली चिड़ियां (रोबिन), तीतर, तोते, बाम्कार, नीलकंठ और मोर शोर मचा रहे थे और एक पेड़ से दूसरे पेड़ और एक चोटी से ऊंची चोटी पर एक-दूसरे का पीछा करते हुए प्रणय याचना कर रहे थे।

अब खुले आसमान के नीचे सड़क के एक किनारे चाय के बागान और हमारी दाहिनी ओर चीड़ों के जंगल के बीच हम ढलानों के ऊपर कठिन परिश्रम करते हुए डगमगाते हुए चढ़ने लगे थे, जो छुरे की तरह एकदम सीधे थे। वहां हवा इतनी कम थी कि हम मुश्किल से सांस ले पा रहे थे। ध्वनियां और प्रतिध्वनियां बहुत दूर तक पहुंच रही थीं, यहां तक कि फुसफुसाहट भी कई गज दूर तक सुनी जा सकती थी और आदमी और पशु भी बिलकुल चुपचाप थे। खच्चरों के खुरों की आवाज और आदमियों की पदचाप के अतिरिक्त सभी वहां हमारे ऊपर छाई नीरवता और निःशब्दता के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए चल रहे थे। यहां नीले आकाश का खुलापन बादलों के धब्बों से मुक्त था और उत्तर दिशा में जाते हुए सारसों की सरसराहट और गहरी आवाज करती हुई गरुड़ पक्षी की उतराई के सिवाय कोई हलचल नहीं थी। यहां सब कुछ शीतल, विलक्षण और उत्तेजक था। आर्किड (फूलों वाला पौधा) लगभग रातोंरात खिल उठे थे और अपनी बैगनी आंखों से हमको निहार रहे थे। गैंदे के फूलों पर ओस की बूंदें झिलमिला रही थीं और नीचे झीलों में सफेद कमल मधुमक्खियों के लिए अपनी पंखुड़ियां खोल रहे थे।

अब हम सिंहलीला के नजदीक थे। बौद्धमठ की चोटी दिखाई दे रही थी, जो पहाड़ी की ओर से हमको बुलाने का संकेत कर रही थी। इसकी पंख नुमा छत और पुरानी दीवारें क्षितिज पर टंगे हुए बैनर के समान लहरा रही

थीं। मैंने अपनी चाल तेज कर दी और अगले एक घंटे के बाद मैं मठ की सीढ़ियां चढ़ रहा था।

रोज-रोज की जिंदगी के झंझटों से मुक्त रहने वाले इन लोगों के बीच आकर कितना आराम मिला। दोपहर का समय था, इसलिए मैं घोंड के साथ बलसाम के जंगल में से निकलकर झरने पर गया जहां हम लोगों ने स्नान किया और चित्र-ग्रीव को भी अच्छी तरह से साफ किया। पक्षी को उसके पिंजरे में खाना खिलाने के बाद, मैं और घोंड भोजन कक्ष में गए, जहां लामा हमारा इंतजार कर रहे थे। यह कक्ष लकड़ी के खंभों के समूह जैसा लगता था, जिसके ऊपरी हिस्सों पर सोने के ड्रेगनों से सजावट की हुई थी। सागौन की लकड़ी के शहतीर, जो कई सदियों से काले पड़े हुए थे, उन पर बड़े-बड़े स्पष्ट कमल के फूलों की आकृतियां उकेरी हुई थीं। वे जूही जैसी कोमल थी लेकिन धातु जैसी मजबूत। लाल पत्थर के फर्श पर नारंगी पोशाक में भिक्षु मौन प्रार्थना में बैठे हुए थे, जो हर भोजन से पहले उनका शिष्टाचार था। उनकी प्रार्थना समाप्त होने तक मैं और घोंड भोजन कक्ष के दरवाजे पर रुके रहे। भिक्षुओं ने ग्रेगोरियन गीत की तरह निम्न मंत्र लयबद्ध तरीके से मिलकर गाया :

बुद्धम् शरणम् गच्छामि
धम्मं शरणम् गच्छामि
संघम् शरणम् गच्छामि
ओउम मणि पद्मे नमः

मैं आगे बढ़ा और मठाधीश को नमस्कार किया। उनके गंभीर चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई ज्यों ही उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। सभी लामाओं को नमस्कार करने के बाद घोंड और मैं लकड़ी के स्टूलों से बनी मेज, जो हमारी छाती तक ऊंची थी, उसके पास हम जमीन पर बैठ गए। सारे दिन गर्म धूप में चलने के बाद उस ठंडे फर्श पर बैठना बहुत अच्छा लगा था। हमारे भोजन में दाल का सूप, तले हुए आलू और बैगन की सब्जी थी। क्योंकि घोंड और मैं शाकाहारी थे, इसलिए हमने मेज पर रखे अंडे नहीं खाए! पीने के लिए हमको गर्म हरी चाय दी गई।

भोजन के बाद मठाधीश ने घोंड और मुझे अपने पास आराम करने के

लिए बुलाया और हम उसके साथ सबसे ऊंची चट्टान तक ऊपर चढ़कर गए। यह स्थान एक गरुड़ के घोंसले जैसा था जिसके ऊपर देवदार वृक्षों का झुरमुट उगा हुआ था, यहां एक कठोर खाली फर्श का कमरा था जिसमें नाममात्र का भी फर्नीचर नहीं था। ऐसा स्थान मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वहां हमारे बैठने के बाद मठाधीश ने कहा, "यहां इस मठ में हमने सारे जगत के राष्ट्रों के उपचार के लिए दिन में दो बार महती अनुकंपा के लिए प्रार्थना की है। लेकिन फिर भी युद्ध जारी है जिससे पशु-पक्षी भी डर और घृणा से रोगग्रस्त हैं। भावनाओं के रोग शरीर की बीमारी से अधिक तेजी से फैलते हैं। पूरी मानव जाति डर, घृणा, संशय और ईर्ष्या से बुरी तरह से पीड़ित होती जा रही है, जिसकी चपेट में सारी पीढ़ी आती जा रही है। एक नई पीढ़ी के आने से पहले जिसका पालन-पोषण इनके प्रभाव से मुक्त हो सके।"

लामा की जिन भौंहों पर कोई शिकन नहीं थी अब उन पर असीम गंभीरता की झुर्रियां छा गईं और नितांत थकान से उसका मुंह लटक गया। हालांकि वह युद्ध से दूर अपनी गरुड़ के घोंसले जैसी कोठरी में रहता था, फिर भी इंसानों के पापों का बोझ उसे अधिक तकलीफ दे रहा था, अपेक्षाकृत उन लोगों के जिन्होंने दुनिया को युद्ध में झोंक दिया था।

लेकिन उसने फिर से मुस्कराना शुरू किया, "हमको चित्र-ग्रीव और घोंड, जो हमारे पास हैं, उनके बारे में बात करनी चाहिए। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा कबूतर फिर से आकाश की शांति में उड़े तो तुम्हें असीम साहस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जैसा कि घोंड आजकल कई दिनों से कर रहा है।"

मैंने आतुरतापूर्वक पूछा, "किस तरह लामाजी?" मठाधीश का पीला चेहरा एकदम लाल हो गया। इसमें संदेह नहीं कि मेरे अटपटे प्रश्न ने मठाधीश को उलझन में डाल दिया था और मुझे लज्जा महसूस हुई थी। अटपटा प्रश्न पूछना उतावलेपन के समान बुरी बात है। मानो वह मेरी भावना जान गया हो, इसलिए मुझे शांत करते हुए उसने कहा, "प्रत्येक दिन की सुबह और शाम को चित्र-ग्रीव को अपने कंधे पर बैठाकर अपने मन ही मन कहो, 'सभी प्राणी-मात्र में असीम साहस है। हर प्राणी, जो जीवित है

और सांस लेता है, वह असीम साहस का भंडार है। मैं इतना अधिक पवित्र हो जाऊं कि जिन्हें छुऊं उनमें असीम साहस भर सकूं। यदि तुम ऐसा कुछ दिनों तक करोगे तो एक दिन तुम्हारा हृदय, मस्तिष्क और आत्मा पूरी तरह पवित्र हो जाएंगे। उसी क्षण तुम्हारी आत्मा की शक्ति, जो अब तक निर्भीक, घृणारहित और निस्संदेह हो चुकी होगी, कबूतर के अंदर प्रवेश करके उसे भयमुक्त कर देगी। जिसने पूर्ण रूप से अपने आपको पवित्र कर लिया है वह विश्व में बड़े से बड़ा आध्यात्मिक दबाव डाल सकता है जैसे मैंने सलाह दी है, दिन में दो बार वैसा ही करो। हमारे सभी लामा तुम्हारी सहायता करेंगे। देखते हैं, आगे क्या होता है।''

थोड़ी देर शांत रहने के बाद लामा ने फिर कहना शुरू किया, ''घोंड ने तुम्हें बताया है, जो जानवरों के बारे में अन्य लोगों से अधिक जानकार है, कि हमारा डर ही दूसरों को भयभीत करता है ताकि वे हम पर आक्रमण करें। तुम्हारा कबूतर इतना भयभीत है कि उसे लगता है कि संपूर्ण आकाश उस पर हमला करने वाला है। पत्तों के हिलने से भी वह भयभीत हो जाता है। कोई भी छाया पड़ने पर उसके अंदर तक घबराहट हो जाती है। आखिरकार उसकी तकलीफ का कारण वह स्वयं ही है।

सचमुच ठीक इस समय हमारे नीचे वाला गांव–हां, वही, जो तुम उत्तर-पश्चिम दिशा में देख सकते हो, वह भी उसी संकट में है जिसमें चित्र-ग्रीव है। जैसा कि आजकल पशुओं का उत्तर दिशा में आने का मौसम है तो सारे डरे हुए गांव के निवासी अपनी पुरानी तोड़ेदार बंदूकें लेकर जंगली जानवरों को मारने निकल पड़े हैं और देखो, अब जानवर उन पर हमला करने लगे हैं, हालांकि पहले वे ऐसा कभी नहीं करते थे। भैंसे उनकी फसलें चर जाते हैं, चीते उनकी बकरियों को उठा ले जाते हैं। आज यहां एक समाचार मिला है कि पिछली रात जंगली भैंसे ने एक आदमी को मार दिया है। हालांकि मैं उनसे कहता हूं कि वे अपने मस्तिष्कों को प्रार्थना और ध्यान से शुद्ध करें, लेकिन वे ऐसा करने के लिए राजी नहीं हैं।''

घोंड ने पूछा, ''ओ पावन गुरु, आप मुझे उन लोगों को जंगली जानवरों से छुटकारा दिलाने के लिए जाने की आज्ञा क्यों नहीं देते?'' लामा ने जवाब दिया, ''अभी नहीं, हालांकि जाग्रत क्षणों में तुम्हारे भय का उपचार हो चुका

है, फिर भी तुम्हारे स्वप्नों में अभी भय का अभिशाप बना हुआ है। हमको अभी कुछ दिन और प्रार्थना और ध्यान करना होगा, तब तुम्हारी आत्मा की सारे मैल से शुद्धि हो जाएगी। फिर तुम्हारा अच्छी तरह उपचार हो जाने के बाद, यदि गांववासी तब तक भी जंगली जानवरों से आहत होते हों, तो तुम उनकी सहायता करने जा सकते हो।''

लामा की बुद्धिमानी

जिस प्रकार उसने आदेश दिया था उसी प्रकार कठोर और अत्यंत सच्चाई के साथ की गई मनन-प्रार्थना के लगभग दस दिन बाद लामा ने मुझे और चित्र-ग्रीव को बुला भेजा। इसलिए मैं कबूतर को हाथ में पकड़े सीढ़ियां चढ़ता हुआ उसके कक्ष में पहुंच गया। लामा का चेहरा, जो सामान्य रूप से पीला था, आज भूरे रंग का और सशक्त लग रहा था। उसकी बादामी रंग की आंखों में एक अजीब-सी गंभीरता और तेज झलक रहा था। उसने चित्र-ग्रीव को अपने हाथों में लिया और कहा :

उत्तरी हवा तुम्हें नीरोग बनाए,
दक्षिणी हवा तुम्हें नीरोग बनाए,
पूर्व और पश्चिम की हवाएं तुम्हारे अंदर नीरोगता भर दें,
तुम्हारे अंदर से डर निकल जाए,
घृणा तुम्हारे अंदर से निकल जाए।

और संशय तुम्हारे अंदर से निकल जाए, उफनते हुए ज्वार की तरह साहस तुम्हारे अंदर तेज रफ्तार से चला आए, तुम्हारा संपूर्ण अस्तित्व शांति से ओत-प्रोत हो जाए और धैर्य और शक्ति तुम्हारे दोनों पंख बन जाएं।

तुम्हारी आंखों में साहस की चमक हो। क्षमता और पुरुषार्थ तुम्हारे हृदय में बस जाएं, तुम बिलकुल स्वस्थ हो गए हो।

तुम नीरोग हो गए हो
तुम नीरोग हो गए हो
शांति, शांति, शांति।

इन विचारों पर मनन करते हुए हम सूर्यास्त तक बैठे रहे। सूर्य हिमालय की चोटियों को विभिन्न रंगों में दहकाकर अभिभूत कर रहा था। हमारे आसपास की घाटियां, खाली स्थानों और जंगलों पर बैगनी छटा का आवरण पड़ा हुआ था।

धीरे से चित्र-ग्रीव लामा के हाथों से नीचे कूद गया और चलता हुआ कमरे के द्वार तक पहुंच गया और वहां बैठकर सूर्यास्त निहारने लगा। उसने अपना बायां पंख खोला और थोड़ा इंतजार किया। फिर कोमलता से बहुत ही धीरे-धीरे उसने अपना दाहिना पंख खोला। पंख के बाद पंख, एक-एक करके मांसपेशी खोलता गया जब तक कि दोनों पंख पाल के समान न फैल गए। कुछ नाटकीय काम जैसे यकायक उड़ने के बजाय उसने सावधानी से दोनों पंख बंद कर लिए, मानो वे दोनों कोई बहुमूल्य लेकिन नाजुक पंखे हों। वह भी जानता था कि सूर्यास्त को नमस्कार कैसे किया जाता है। एक पुजारी की-सी गरिमा के साथ चलकर वह नीचे गया लेकिन जैसे ही वह मेरी नजर से ओझल हुआ, मैंने आवाज सुनी, या शायद मुझे ऐसा भ्रम हुआ कि उसने पंख फड़फड़ाए थे। मैं उतावला होकर उठना चाहता था और देखना चाहता था कि आखिर हुआ क्या था? लेकिन उस पवित्र आत्मा ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर मुझे रोक दिया, उस समय उसके होंठों पर गूढ़ मुस्कान फैल गई थी।

अगली सुबह मैंने घोंड को जो कुछ हुआ था, सब बताया। उसने तीखा उत्तर दिया, "तुम कहते हो, चित्र-ग्रीव ने सूर्यास्त को सलाम करने के लिए पंख खोले थे। इमसें अचंभे की क्या बात है? जानवर धार्मिक होते हैं, हालांकि आदमी अज्ञानवश ऐसा नहीं मानते। मैंने तो वंदरों, गरुड़ों, कबूतरों, चीतों और यहां तक कि नेवलों को भी सूर्योदय और सूर्यास्त का अभिवादन करते हुए देखा है।"

"क्या उन्हें ऐसा करते हुए मुझे दिखा सकते हो?"

घोंड ने उत्तर दिया, "हां, दिखा सकता हूं लेकिन अभी नहीं, चलो चित्र-ग्रीव को नाश्ता खिलाया जाए।"

जब हम उसके पिंजरे के पास गए तो वह खुला पड़ा था और उसके अंदर कबूतर नहीं था। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि जब से हम मठ पर आए थे, मैं रोज रात को पिंजरे का दरवाजा खोल देता था। लेकिन वह गया कहां? हम उसे मुख्य भवन में नहीं खोज सके, इसलिए हम पुस्तकालय में गए थे। वहां बाहर वाले खाली कमरे में हमको उसके कुछ पंख मिले और पास ही घोंड को नेवले के पंजों के निशान दिखे थे। उससे हमको खतरे का संदेह होने लगा था। लेकिन यदि नेवले ने उस पर हमला करके उसे मार दिया होता तो फर्श पर खून के निशान होने चाहिए थे। फिर वह किधर को उड़ गया? उसके साथ क्या हुआ? अब वह कहां था? हम एक घंटे तक उसे खोजते रहे थे। जैसे ही हमने उसे खोजना बंद करने का निश्चय किया, हमने उसकी गुटर-गूं सुनी और वह पुस्तकालय की छत पर बैठा दिखा, अपने पुराने दोस्त अबाबीलों के साथ बात करते हुए, जो छज्जे में बने अपने घोंसलों में चिपके हुए थे। कबूतर की गुटर-गूं के लिए उनका उत्तर हम समझ सकते थे। श्री अबाबील ने कहा, "चीप, चीप, चीप।" खुशी से मैंने चित्र-ग्रीव को नाश्ते के लिए पुकारा, "आया, आया।" उसने गर्दन मोड़ी और सुना। फिर मैंने उसे दोबारा पुकारा, उसने मुझे देखा और तुरंत उसने अपने पंख जोर से फड़फड़ाए और नीचे उड़कर मेरी कलाई पर आ बैठा। वह खीरे के समान ठंडा था। सुबह बहुत पहले उसने पुजारियों को सुबह की प्रार्थना करने के लिए ऊपर जाते हुए उनके कदमों की आहट सुनी होगी, और अपने पिंजरे से बाहर निकल आया होगा। फिर भटककर बाहरी कमरे में चला गया होगा, वहां निस्संदेह एक अनुभवहीन छोटे नेवले ने उस पर हमला किया होगा। चित्र-ग्रीव जैसा अनुभवी आसानी से उसे थोड़े-से पंख देकर चतुराई से निकल गया होगा जबकि छोटा नेवला उन टूटे पंखों में कबूतर ढूंढ़ता रहा होगा। उसका शिकार होने वाला कबूतर आकाश में उड़ गया था। वहां उसे अपना पुराना दोस्त अबाबील मिला जो सूर्योदय को प्रणाम करने जा रहा था और साथ-साथ अपनी प्रातःकालीन पूजा-अर्चना के बाद, दोस्ताना बातचीत के लिए मठ के पुस्तकालय की छत पर आ गया था।

उस मठ पर बहुत भयंकर समाचार पहुंचा था। जिस गांव का जिक्र लामा ने एक दिन पहले किया था, वहां एक जंगली भैंसे ने आक्रमण कर दिया था। वह पहली शाम को गांव में आ गया था और उसने दो आदमियों को मार डाला था, जो गांव के पंचों की बैठक में भाग लेकर वापस आ रहे थे। गांव के लोगों ने मठाधीश के पास एक प्रतिनिधि मंडल भेजा था, उस बनैले भैंसे के विनाश के लिए प्रार्थना करने के लिए और उस निर्दयी की आत्मा को प्रेत-बाधा से मुक्त करने का अनुरोध करने के लिए। मठाधीश ने कहा था कि वह ऐसा उपाय करेंगे जिससे वह हत्यारा चौबीस घंटे के अंदर मार दिया जाए। "ओ, अनंत दया के प्यारे लोगो, शांतिपूर्वक घर जाओ। तुम्हारी प्रार्थनाएं सफल होंगी। रात के समय अपने घरों से बाहर निकलने का साहस नहीं करना। घरों में रहकर शांति और साहस पर मनन-चिंतन करो।"

घोंड, जो वहां उपस्थित था, उसने पूछा, "यह भैंसा आप लोगों के गांव को कब से परेशान कर रहा है? समूचे प्रतिनिधि-मंडल ने सच बतलाया कि वह (भैंसा) एक सप्ताह से हर एक रात को आ रहा था। वह हमारी वसंत की लगभग आधी फसल को उजाड़ चुका है। भैंसे को मारने के लिए कठोर और असरदार मंत्र-पाठ और झाड़-फूंक करने का दोबारा अनुरोध करके वे अपने गांव चले गए थे।

प्रतिनिधि-मंडल के चले जाने के बाद पास में खड़े घोंड से लामा ने कहा, "ओ, विजय द्वारा वरणीय, क्योंकि अब तुम ठीक हो गए हो, जाओ, उस हत्यारे को मार डालो।"

"लेकिन मेरे स्वामी!"

"डरो नहीं घोंड! तुम्हारे मनन-चिंतन ने तुम्हारा उपचार कर दिया है। अब इस साधना से जो कुछ तुमने प्राप्त किया है, जंगल में जाकर उसका परीक्षण करो। एकांत में लोग शक्ति और मनःसंतुलन की प्राप्ति करते हैं, पर उन्हें इसकी परीक्षा भीड़ में जाकर करनी चाहिए। अब से दो बार सूर्यास्त होने से पहले तुम विजयी होकर वापस आओगे। तुम्हारी सफलता में हृदय से पूरा विश्वास होने से मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि इस लड़के को और इसके कबूतर को भी अपने साथ ले जाओ। निश्चित रूप से मैं तुमसे

इस सोलह साल के बच्चे को अपने साथ ले जाने के लिए नहीं कहता, यदि मुझे तुम्हारी ताकत अथवा तुम्हारे लक्ष्य के बारे में संदेह होता। जाओ, उस हत्यारे को सजा दो।''

उस दोपहर बाद हम लोग जंगल में जाने के लिए निकल पड़े थे। दोबारा जंगल में कम से कम एक रात गुजारने की संभावना से मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। घोंड और कबूतर के साथ जाना कितना सुखद था, जो अब पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए थे और हम जंगली भैंसे की तलाश में निकल पड़े थे। क्या धरती पर कोई ऐसा लड़का होगा जो इस प्रकार के सुअवसर का स्वागत नहीं करेगा?

इसलिए पूर्ण रूप से अति प्रसन्न होते हुए रस्सी की सीढ़ी, फंदेदार रस्सा और चाकू को साथ लेकर तथा चित्र-ग्रीव को अपने कंधे पर बिठाकर हम चल पड़े थे। ब्रिटिश सरकार द्वारा निषिद्ध होने के कारण भारत के आम लोग आग्नेय अस्त्रों (बंदूक, रायफल, पिस्तौल आदि) का प्रयोग नहीं कर सकते थे, इसलिए हमारे पास कोई रायफल नहीं थी।

दोपहर के लगभग तीन बजे हम मठ के उत्तर-पश्चिम में स्थित गांव में पहुंच गए थे। वहां पर हमने भैंसे का सुराग लिया। इसके सहारे हम घने जंगलों और साफ क्षेत्रों में होते हुए उसका पीछा करते गए। जगह-जगह हमने छोटे नदी-नाले पार किए और कहीं-कहीं गिरे हुए विशाल वृक्षों के ऊपर चढ़ना पड़ा था। भैंसे के खुरों के निशान कितने स्पष्ट और गहरे थे, यह एक असाधारण बात थी।

घोंड ने ध्यानपूर्वक देखकर कहा, ''वह अत्यंत डरा हुआ होना चाहिए, क्योंकि देखो, वह यहां बहुत तेजी से दौड़ा है। जानवर अपनी सामान्य निडर स्थिति में अपने पीछे बहुत कम निशान छोड़ते हैं लेकिन जब डरे हुए होते हैं तो ऐसा व्यवहार करते हैं मानो मौत के खौफ का बोझ उन्हें नीचे को दबोच रहा हो। जहां-जहां होकर वह निकला है, उसने खुरों से बहुत गहरे और स्पष्ट निशान छोड़े हैं। वह कितना डरा हुआ रहा होगा?''

आखिर में हम एक अलंघ्य नदी पर पहुंचे। घोंड के अनुसार यदि उसमें हमने कदम रखा तो उसका प्रवाह बहुत तेज होने के कारण हमारी टांगें तोड़ने के लिए काफी था। अजीब-सी बात है कि भैंसे ने भी उसे पार करने

की हिम्मत नहीं की। इसलिए हम उसकी मिसाल का ही अनुगमन करते हुए नदी के किनारे उसके खुरों के निशानों पर चलते गए। बीस मिनट चलने के बाद हमने पाया कि वह नदी का किनारा छोड़कर घने जंगल में गायब हो गया था। जंगल इतना घना था कि काले गड्ढे जैसा दिखाई देता था, हालांकि उस समय मुश्किल से शाम के पांच बजे थे। यह स्थान गांव से किसी भी उम्र के जंगली भैंसे की आधे घंटे की दौड़ की पहुंच के अंदर था।

घोंड ने पूछा, ''क्या तुम्हें पानी का संगीत सुनाई दे रहा है?'' कई मिनट ध्यानपूर्वक सुनने के बाद मुझे सरकंडों को चूमते हुए पानी की आवाज सुनाई दी और दूसरी ओर घास, जो अधिक दूर नहीं थी, वहां से भी पानी की गड़गड़ करने की आवाज सुनाई दे रही थी। जिस झील में जाकर यह नदी गिरती थी उससे हम करीब बीस फीट दूर थे। घोंड चिल्लाया, ''यहां झील के पास ही कहीं वह हत्यारा छुपा हुआ है या शायद सोया हुआ है। उधर उन दो जुड़वां पेड़ों पर हमें अपना ठिकाना बनाना चाहिए। अंधेरा होने वाला है और मुझे पूरा विश्वास है कि जल्दी ही वह यहां आएगा। जब वह यहां आए तो हम उसे यहां जंगली जमीन पर नहीं मिलने चाहिए। इन पेड़ों के बीच मुश्किल से चार फीट का भी फासला नहीं है।''

उसके अंतिम शब्द मुझे कौतूहलजनक लगे। इसलिए मैंने पेड़ों के मध्य की दूरी की जांच-पड़ताल की। वे बहुत लंबे और भारी-भरकम थे और उनके बीच जमीन का टुकड़ा मात्र इतना था जिसमें हम दोनों एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर ही निकल सकते थे।

''अब इन दोनों पेड़ों के मध्य की आधी दूरी पर मैं डर से तर-ब-तर अपना कुर्ता नीचे रख दूंगा।'' फिर घोंड अपने कुर्ते के नीचे से पुराने कपड़े, जिन्हें वह कल तक पहने था, निकालने लगा। उसने उन्हें जमीन पर रखा और एक पेड़ पर चढ़ गया। ऊपर पहुंचने के बाद उसने मेरे लिए रस्सी की सीढ़ी नीचे लटका दी। मैं चित्र-ग्रीव को अपने कंधे पर रखकर ऊपर चढ़ गया, जो अपना संतुलन बनाए रखने के लिए पंख फड़फड़ाता रहा था। हम दोनों सुरक्षित उस डाल तक पहुंच गए जहां घोंड बैठा था और क्योंकि शाम जल्दी होती जा रही थी, इसलिए हम शांतिपूर्वक कुछ देर बैठे रहे थे। जैसे ही शाम का धुंधलका हुआ, तब सबसे पहले मेरा ध्यान पक्षी-जीवन की ओर

गया। बगुलों, धनेश, तीतर, चकोर, गौरैया और हरियल तोतों के झुंडों की भरमार लग रही थी। मक्खियों की भिनभिनाहट, कंठफोड़वा की कट-कट-कट, ऊपर से आती दूर से गरुड़ की तीखी चीख, पहाड़ से गिरते प्रचंड झरनों का कोलाहल और अब जगे हुए लकड़बग्घों का असंबद्ध अट्टहास, सब मिलकर अद्‌भुत वातावरण बना रहे थे।

जिस पर हमने अपना ठिकाना बनाया था, वह पेड़ काफी ऊंचा था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारे ऊपर कोई चीता या सांप न हो, इसलिए हम और अधिक ऊपर चढ़ गए थे। अच्छी तरह जांच करके हमने दो डालें चुनी थीं, जिन पर हमने अपनी रस्सी की सीढ़ी को झूले की शक्ल में लटका दिया था। अपने ठिकाने पर ज्यों ही हम सुरक्षित होकर बैठे, घोंड ने आकाश की ओर इशारा किया। मैंने तुरंत ऊपर की ओर देखा। एक विशाल गरुड़ लाल पंखों से हवा में तैर रहा था। हालांकि जंगल की सतह से बाढ़ के समान अंधेरा छाये जा रहा था, ऊपर खाली स्थान में आकाश दहक रहा था, कबूतर की गरदन की भांति, और उसमें अकेला गरुड़ बार-बार चक्कर काट रहा था। घोंड के अनुसार इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह सूर्यास्त का अभिवादन कर रहा था। उसकी उपस्थिति से जंगल के पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों पर खामोशी छा गई थी। हालांकि वह उनसे काफी दूर ऊंचाई पर था, फिर भी मौन साधकों की भांति वे शांत रहे, जबकि वह उनका राजा आगे-पीछे उड़ता रहा और वह किसी रहस्य व्याख्याता के हर्षोन्माद के साथ अपने ईश्वर प्रकाश के जनक के सामने छलांगें भरता रहा। धीरे-धीरे उसके पंखों से लाल दमक उतरती गई। अब वे सुनहरी चमक की झालर के बैगनी पाल बन गए थे। अंत में मानो अपनी उपासना की समाप्ति पर वह और अधिक ऊपर उठा और अपने देवता के आगे आत्मदाह की-सी क्रिया करता हुआ आग से दहकते प्रज्वलित पर्वत शिखरों की ओर उड़ा और उनकी शान में पतंगे की तरह गायब हो गया।

नीचे भैंसे की हुंकारों की चीत्कार ने एक-एक करके कीड़े-मकोड़ों की आवाजें खोल दीं, जिससे सांध्यकालीन नीरवता को धज्जियों और चिथड़ों में चीर दिया था। हमारे नजदीक उल्लू की घू-घू की आवाज सुनकर चित्र-ग्रीव एकदम मेरे सीने से चिपट गया। अचानक हिमालयी डोइल–एक रात्रि पक्षी,

जो लगभग बुलबुल की तरह होता है, उसने अपना जादुई गीत छेड़ दिया जैसे किसी देवता ने अपनी चांदी की बांसुरी बजाई हो। जिसके स्वर-कंपन के बाद स्वर-कंपन और आरोह-अवरोह के बाद आरोह-अवरोह ने शांति की बौछार बिखेर दी जो बारिश की भांति पेड़ों की डालियों पर जल्दी जाने लगी और पेड़ों की खुरखुरी छालों पर टपककर जंगल की जमीन पर गिरने लगी और फिर उनकी जड़ों से होती हुई पृथ्वी के हृदय में समा गई।

हिमालय में शुरुआती ग्रीष्म की रात का जादू मेरे लिए हमेशा अवर्णनीय रहेगा। वास्तव में यह इतना मधुर और निर्जन था कि मैं बहुत उनींदा महसूस करने लगा। घोंड ने एक अतिरिक्त रस्सी से मुझे लपेट दिया, जिससे मैं पेड़ के तने पर सुरक्षित हो गया था। फिर मैंने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया था ताकि मैं आराम से सो सकूं। लेकिन मेरे सोने से पहले उसने अपनी कार्यप्रणाली बताई :

"वे मेरे उतरे हुए कपड़े वही हैं जो मैंने तब पहने हुए थे जब मेरे दिल में डर समाया हुआ था। उनमें एक अजीब-सी गंध समाई हुई है। यदि वह साला भैंसा उनकी गंध सूंघ लेगा तो इधर भागा आएगा। जो डरा हुआ होता है, उसे डर की गंध का असर बहुत जल्दी होता है। यदि वह मेरे उतरे हुए कपड़ों को खोजने आए तो हम वही करेंगे जो हम उसके साथ कर सकते हैं। मुझे आशा है कि हम उसे रस्से से बांध सकते हैं और पालतू बछिया की तरह घर ले जा सकेंगे…" आगे मैंने उसकी कोई बात नहीं सुनी, क्योंकि मैं गहरी नींद में सो गया था।

मुझे नहीं मालूम, मैं कितनी देर सोया, लेकिन एक भयंकर चीत्कार ने मुझे जगा दिया था। जब मैंने अपनी आंख खोली तो घोंड ने, जो पहले ही जगा हुआ था, मुझ पर लिपटी रस्सी को खोल दिया और नीचे की ओर इशारा किया। सवेरे के धुंधले प्रकाश में पहले तो मुझे कुछ नहीं दिखाई दिया लेकिन मैंने साफ तौर से एक क्रोधित जानवर की हुंकार और कराह सुनी। उष्णकटिबंधों में दिन जल्दी निकल आता है। मैंने बहुत गौर से नीचे देखा। अब दिन के बढ़ते प्रकाश में जो कुछ मैंने देखा, उसके बारे में दो राय नहीं हो सकती थी। जी हां, नीचे चमकीले काले रंग की पहाड़ी थी जो अपनी काली तरफ से उस पेड़ को टक्कर मार रही थी जिस पर हम बैठे थे।

मैंने अंदाजा लगाया कि वह दस फीट लंबा था, हालांकि उसका आधा शरीर पेड़ के पत्तों और टहनियों से ढका हुआ था। सुबह के सूय के प्रकाश में यह जानवर हरी भट्टी में से निकलता हुआ काला दूधिया पत्थर जैसा लग रहा था। मैंने सोचा, 'जो भैंसा प्राकृतिक वातावरण में इतना स्वस्थ और चिकना दिखता है, वही चिड़ियाघर में गंदी चमड़ी, निष्प्रभ अयाल और खरसैला जंतु नजर आता है। क्या वे लोग, जो भैंसे को कैदी बना देखते हैं, कभी कल्पना भी कर सकते हैं कि वह कितना खूबसूरत हो सकता है? कितने दुर्भाग्य की बात है कि अधिकांश किशोर बच्चे, जानवरों को उनके प्राकृतिक वातावरण में देखने के बजाय ईश्वर के इन प्राणियों के बारे में जानकारी चिड़ियाघर में देखकर प्राप्त करते हैं और उनकी शक्ल इन जेलखानों में देखते हैं। यदि हम जेल में बंद आदमी को देखकर उसके असली चरित्र के स्वभाव को आंशिक रूप से भी नहीं जान सकते तो हम क्यों सोचते हैं कि पिंजरे में कैद जानवर को देखकर उसके बारे में सब कुछ जानते हैं?'

अब हम उस हत्यारे भैंसे की ओर वापस आते हैं जो उस पेड़ के नीचे खड़ा था जिस पर मैं और घोंड बैठे थे। अपने कुर्ते के अंदर छुपाए हुए कबूतर को मैंने पेड़ के ऊपर घूमने के लिए छोड़ दिया था। मैं और घोंड पेड़ के तनों पर सीढ़ी के पायदानों की तरह पांव रखते हुए नीचे उतरते गए और सबसे नीचे के तने पर पहुंच गए, जो भैंसे से केवल दो फीट ऊपर था। उसने घोंड को जल्दी से लंबे रस्से के एक छोर को तने से बांधते हुए नहीं देखा। मैंने देखा कि भैंसा पेड़ के नीचे पड़े घोंड के पुराने कपड़ों को बार-बार अपने सींगों से उछाल रहा था। इसमें संदेह नहीं कि उन कपड़ों में आदमी की गंध ने उसे आकृष्ट किया था। हालांकि उसके सींग साफ-सुथरे थे लेकिन उसके सिर पर ताजे खून के निशान थे। स्पष्ट रूप से जान पड़ता था कि वह रात में गांव में जाकर किसी एक और आदमी को मारकर आया था। उससे घोंड उत्तेजित हो गया था। वह मेरे कान में फुसफुसाया, "हम उसे जीवित पकड़ेंगे। तुम ऊपर से इस फंदेदार रस्सी को नीचे लटकाकर उसके सींगों में फंसा देना।" घोंड झटपट भैंसे के नजदीक पीछे वाली डाल से नीचे कूद गया। उससे भैंसा भौचक्का रह गया। लेकिन वह पीछे की ओर मुड़ नहीं पाया, क्योंकि उसके दाईं तरफ पेड़ था जिसका जिक्र मैंने पहले

किया था और उसके बाईं तरफ वह पेड़ था जिस पर मैं खड़ा था। उन दोनों पेड़ों के बीच से निकलने के लिए उसे पीछे हटना था या आगे को बढ़ना पड़ता लेकिन ऐसा होने से पहले मैंने उसके सिर पर फंदेदार रस्सा फेंक दिया। रस्से के छूने ने उस पर बिजली के करंट की तरह काम किया। रस्सा छुड़ाने के लिए वह तुरंत पीछे की तरफ हटा। वह इतनी तेजी से हटा कि यदि घोंड दूसरे पेड़ के ईद-गिर्द न गया होता तो वह कुचल दिया जाता और उस जानवर के पैने खुरों से कटकर मृत्युलोक पहुंच गया होता। लेकिन अब अपनी घोर निराशा में मैंने देखा कि उसके दोनों सींगों को जड़ से कसकर फंसाने के बजाय मैं केवल एक सींग में ही रस्सा फंसाने में सफल हो सका था। तत्क्षण मैंने डर से चीखकर घोंड से कहा, "सावधान, उसका केवल एक ही सींग पकड़ में आया है। किसी समय भी उस सींग से रस्सा खिसक सकता है। भागो, भागो, भागकर पेड़ के ऊपर चढ़ जाओ।"

लेकिन उस निर्भीक शिकारी ने मेरी सलाह अनसुनी कर दी। इसके बजाय वह शत्रु से कुछ दूरी पर उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। फिर मैंने देखा कि उस वहशी जानवर ने अपना सिर झुकाया और आगे की ओर झपटा। डर के मारे मैंने आंखें बंद कर लीं।

जब मैंने फिर से आंखें खोलीं तो देखा कि वह सांड़ रस्से को जोर से खींच रहा था, जो सींग में अटककर उसे उस पेड़ में टक्कर मारने से रोक रहा था जिसके पीछे घोंड खड़ा था। उसकी विकराल हुंकारों से सारा जंगल भयानक कोलाहल से भर गया था। डरे हुए बच्चे की चीख के समान उसकी हुंकारों की प्रतिध्वनि एक के बाद एक सारे जंगल में फैलती जा रही थी।

क्योंकि सांड़ अभी तक उसके पास तक पहुंचने में सफल नहीं हो पाया था, घोंड ने अपनी पैनी धार वाली कृपाण निकाली, जो करीब डेढ़ फीट लंबी और दो इंच चौड़ी थी। वह धीरे से दाईं तरफ एक अन्य पेड़ के पीछे चुपके से खिसक गया। फिर नजरों से ओझल हो गया। सांड़ सीधा उस स्थान की ओर भागा जहां कुछ देर पहले उसने घोंड को देखा था। सौभाग्यवश रस्सा अभी तक उसके सींग में मजबूती से अटका हुआ था।

यहां घोंड ने अपनी युक्ति बदल दी। वह उल्टी दिशा में अलग-अलग पेड़ों के बीच इधर-उधर होकर भागा। ऐसा उसने इसलिए किया जिससे

उसकी गंध हवा में उड़कर सांड़ तक न पहुंच सके। हालांकि उसे आश्चर्य हुआ कि सांड़ ने अब भी मुड़कर उसका पीछा किया। हमारे पेड़ के नीचे जमीन पर फिर से उसने घोंड के कपड़े पड़े देखे। उन्हें देखकर वह पागल हो गया। उसने सूं-सूं कर उन्हें सूंघा, फिर अपने सींगों से उन्हें फाड़ दिया। अब तक घोंड उधर जा चुका था जिधर से हवा आ रही थी। हालांकि मैं उसे देख नहीं पा रहा था। मेरा अंदाजा था कि सांड़ की गंध पाकर वह जान सकता था कि वह कहां पर है, यदि वह पेड़ की आड़ से उसे दिखाई न दे, तो भी। सांड़ ने फिर से हुंकार भरनी शुरू कर दी। जैसे ही उसने घोंड के कपड़ों में अपने सींग घुसाए, वैसे ही सारे पेड़ों के आसपास भयंकर कोलाहल होने लगा। न मालूम कहां से बंदरों की टोलियां डालियों पर कूदती-फांदती आ गईं। पेड़ों से उतरकर गिलहरियां जंगल की जमीन पर चूहों की तरह भागने लगीं और फिर पेड़ों पर चढ़ने लगीं। पक्षियों के झुंड के झुंड जैसे नीलकंठ, बगुले और तोते आसपास उड़ रहे थे और कौवों, उल्लुओं और गरुड़ों के साथ मिलकर चीख रहे थे। अचानक सांड़ ने फिर से हमला कर दिया।

मैंने देखा कि घोंड सांड़ के सामने एकदम शांत खड़ा था। यदि मैंने कभी किसी आदमी को स्वयं शांति के समान शांत देखा था तो वह घोंड था। सांड़ की पिछली टांगों में धक-धक हुई और तलवार की तरह ऊपर उठ गईं। फिर कुछ घटित हुआ। वह हवा में ऊपर उठा, निस्संदेह ऐसा फंदेदार रस्से के कारण हुआ था, जिसका एक सिरा हमारे पेड़ से बंधा हुआ था। वह जमीन से कई फीट ऊपर उठा, फिर धड़ाम से गिर पड़ा। उसी क्षण बच्चे द्वारा तोड़ी गई सूखी टहनी के समान उसका सींग टूटा और हवा में उछल गया। सींग के टूटने से अप्रतिरोध्य तेजी पैदा हुई जिसने उसे जमीन पर एक तरफ लुढ़का दिया। वह लगभग चारों खाने चित गिरा और उसकी लातें हवा में प्रचंड रूप से चलने लगीं। चकमक से निकली चिंगारी के समान घोंड झटपट आगे कूद पड़ा। उसे देखते ही भैंसे ने अपना संतुलन बनाया और फुफकारता हुआ अपने पुट्ठों पर बैठ गया। वह अपने पैरों पर लगभग खड़ा होने में सफल होने ही वाला था कि घोंड ने तुरंत उसके कंधे पर कृपाण से प्रहार कर दिया। उसकी पैनी धार काफी गहराई तक घुस गई और घोंड ने

अपना पूरा वजन डालकर उसे और नीचे दबा दिया। ज्वालामुखी के फटने के समान चीत्कार से सारा जंगल दहल गया और इसके साथ ही लाल खून का फव्वारा फूट पड़ा। इस दृश्य को अधिक देर तक देखना बर्दाश्त न करने के कारण मैंने फिर से अपनी आंखें बंद कर लीं।

कुछ देर बाद जब मैं अपने ठिकाने से नीचे उतरकर आया तो मैंने पाया कि भैंसा रक्तस्राव के कारण मर चुका था। वह रक्त के कुंड में लथपथ पड़ा था और जमीन पर उसके पास बैठा घोंड मुकाबला करते वक्त पड़े खून के धब्बों को साफ कर रहा था। मैं जानता था कि वह चाहता था कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए। इसलिए मैं अपने पुराने पेड़ के पास चला गया और चित्र-ग्रीव को आवाज लगाई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं पेड़ की सबसे ऊंची टहनी तक गया। लेकिन सब व्यर्थ! वह वहां नहीं था।

जब मैं नीचे आया तब तक घोंड अपनी सफाई कर चुका था। उसने आकाश की ओर इशारा किया। हमने प्रकृति के सफाई कर्मचारी देखे। नीचे गरुड़ और काफी ऊंचाई पर गिद्ध उड़ते दिखाई दिए। उन्हें पता लग चुका था कि कोई मर गया है और उन्हें जंगल की सफाई करनी है।

घोंड ने कहा, "हमें चित्र-ग्रीव मठ में मिलेगा। निस्संदेह वह अन्य पक्षियों के साथ उड़ गया है, इसलिए हमें शीघ्र चलना चाहिए।" लेकिन घर वापस लौटने से पहले मैं मरे हुए भैंसे को नापने के लिए गया, जिसके ऊपर सब तरफ से मक्खियां भिनभिना रही थीं। वह साढ़े दस फीट लंबा और उसकी आगे की टांगें तीन फीट लंबी थीं।

हमारी मठ की ओर लौटने की पैर-घिस्सू चाल एकदम मौन रही और यह मौन तभी टूटा जब हम लगभग दोपहर के समय पीड़ित गांव में पहुंचे और गांव के मुखिया को बताया कि उनका दुश्मन मार दिया गया था। यह सुनकर उसने चैन की सांस ली, यद्यपि वह बहुत दुखी था, क्योंकि पिछली शाम भैंसे ने उसकी वृद्धा मां की हत्या कर डाली थी, जो अपनी सांध्यकालीन पूजा के लिए गांव के मंदिर जा रही थी।

हमें जोर से भूख लगी थी, इसलिए काफी तेजी से चलकर शीघ्र ही मठ में पहुंच गए थे। तुरंत मैंने चित्र-ग्रीव के बारे में पूछताछ की। चित्र-ग्रीव वहां नहीं था। यह बहुत दुःख की बात थी। लेकिन जैसे ही हम वृद्ध लामा के

कमरे में बातचीत कर रहे थे तो उसने कहा, "घोंड, जैसे तुम वैसे वह भी सुरक्षित है।" कई मिनट की खामोशी के बाद उसने पूछा, "तुम परेशान क्यों हो रहे हो?"

बूढ़े शिकारी ने शांतिपूर्वक सोचकर कहा, "कुछ नहीं, स्वामी! सिवाय इसके कि मुझे किसी की भी हत्या करने से घृणा है। मैं उस सांड़ को जीवित पकड़ना चाहता था, लेकिन अफसोस, मुझे वह नष्ट करना पड़ा। जब उसका सींग टूटा और मेरे और उसके बीच में कुछ नहीं था तो मैंने उसकी मुख्य नाड़ी पर कृपाण से प्रहार कर दिया। मुझे बहुत दुःख है कि मैं उसे जीवित नहीं पकड़ सका ताकि मैं उसे किसी चिड़ियाघर को बेच सकता।"

"ओ, व्यापारीकरण की आत्मा!" मैंने चीखकर कहा, "मुझे सांड़ के मरने का कोई दुःख नहीं है। सारी जिंदगी चिड़ियाघर के पिंजरे की कैद से मरना बेहतर है। जीवित मौत से असली मौत वांछनीय होनी चाहिए।"

"यदि तुमने उसके दोनों सींगों में रस्सा फंसाया होता···।" घोंड ने तमक के जवाब दिया।

पवित्र लामा ने कहा, "तुम लोगों को चित्र-ग्रीव के बारे में परवाह करनी चाहिए, न कि मरे हुए सांड़ के बारे में।"

घोंड ने कहा, "सचमुच, कल से हमें उसकी तलाश करनी चाहिए।"

लेकिन पवित्र आत्मा ने उत्तर दिया, "नहीं, मेरे बेटे, तुम्हें डेंटम लौट जाना चाहिए। तुम्हारा परिवार बेसब्री से तुम्हारा इंतजार कर रहा है। मैं उनके विचार सुन सकता हूं।"

अगले दिन हम दो खच्चर लेकर डेंटम के लिए चल पड़े थे। तेजी से चलते हुए और रोज दो बार खच्चर बदल-बदलकर हम लोग तीन दिन में डेंटम पहुंचे थे। जैसे ही हम अपने घर की तरफ ऊपर चढ़ रहे थे तो हमारा सामना अपने घर के नौकर के साथ हुआ, जो बहुत खुश नजर आ रहा था। उसने बताया कि चित्र-ग्रीव तीन दिन पहले वापस आ चुका था। क्योंकि हम उसके साथ नहीं आए थे, इसलिए मेरे माता-पिता चिंतित थे और उन्होंने हमें जीवित या मृत ढूंढ़कर लाने के लिए लोग इधर-उधर भेज दिए थे।

वह और मैं लगभग दौड़कर घर पहुंचे। और अगले दस मिनट में मैं

अपनी मां की बांहों में था और चित्र-ग्रीव अपने पैर जमाकर मेरे सिर के ऊपर पंख फड़फडाते हुए संतुलन बनाए हुए था।

मैं वर्णन नहीं कर सकता कि मैं कितना अधिक खुश था यह देखकर कि चित्र-ग्रीव आखिरकार उड़ने में फिर से समर्थ हो गया है। वह मठ से पूरा रास्ता उड़कर डेंटम के हमारे घर पहुंच गया था। वह कहीं भी लड़खड़ाया अथवा असफल नहीं हुआ।

"ओ, उड़ान की आत्मा, तुम कबूतरों में हीरा हो!" मैं हर्षित होकर घोंड के साथ कदम बढ़ाता गया था।

इस प्रकार सिंहलीला की हमारी यात्रा संपूर्ण हुई। इससे चित्र-ग्रीव और घोंड दोनों की डर और घृणा की बीमारी का इलाज हो गया था, जो बीमारियां उन्हें युद्ध के मैदान से लग गई थीं। कोई भी श्रम व्यर्थ नहीं जाता यदि उससे एक भी प्राणी के जीवन में इन भयंकर बीमारियों का इलाज हो सके।

इस कहानी के अंत में उपदेश देने के बजाय मैं केवल इतना कहना चाहता हूं :

"जो कुछ भी हम सोचते हैं और अनुभव करते हैं, उसका असर हमारे कहने और करने पर पड़ता है। जो डरता है, यहां तक कि अनजाने में भी अथवा सपने में भी, किंचित् मात्र भी घृणा करता है तो निश्चित रूप से, देर या सवेर से, ये दोनों गुण उसके कामों में अवश्य परिणत हो जाएंगे। इसलिए मेरे प्यारे भाइयो, साहस के साथ जीओ, साहस की सांस लो और साहस बांटो। प्यार के बारे में सोचो और अनुभव करो कि तुम शांति और सौम्यता स्वतः बिखेर सको जैसे फूल सुगंध बिखेरते हैं।"

सर्वेषां शांतिर्भवतु।

□□